

ओं नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः

श्री गुरुभ्यो नमः

हरिः ओं

कृष्ण यजुर्वेदीय एकाग्निकाण्डः

(मन्त्र प्रश्नः)

---

## **Version Notes:**

**This is now the current Version 0.1 dated May 31, 2021.**

1. This replaces the earlier version 0.0 dated March 20, 2018.
2. This version has been updated with the errors found and reported till May 31, 2021.
3. Required convention, style and presentation improvements or standardisations has been done wherever applicable.
4. Notify your corrections / suggestions etc to our email id [vedavms@gmail.com](mailto:vedavms@gmail.com)

## **Earlier Versions**

1st	Version Number	0.0 dated 20th March 2018
-----	----------------	---------------------------

---

## **Notes on Ekaagni Kanda Compilation:**

### **Source Reference:**

This book is compiled from Ekaagni Kanda book published under the authority of Maharaja of Mysore in 1902 edited by Great Scholar Srinivasa Acharya containing the commentary of Shri Haradatta Mishra printed at Government Branch Press, Mysore.

### **Structure of the Book:**

Ekaagni Khanda has two Prapaatakas, first with 18 Khandas and Second with 22 Khandas. A Khanda is a section with specific set of Statements consisting of Mantras. The Source Book gives the number of Statements as well as the number of Mantras in each Khanda. The Mantra Number reference is given at the end of word/padam or statement where the Mantra ends. The Subject title is also given in the Source book. These are given as titles in Index for reference and we have also indicated the end of specific subjects wherever reference is available. Korvai is given for each Khanda indicated as (K1,K2) etc. as reference with the number of statements in that Khanda. If a Khanda has more than 20 Statements, both 10th and 20th Statement will have a reference as “( )”.

A number of short forms of Mantras are given for which the expansion is provided in a Box. “{ }” bracket symbol used here to indicate the Mantras which are to be expanded.

Anushangam also is present for few Mantras and are represented immediately after the corresponding Mantra. “ \* ” star symbol has been used to indicate the Mantras which are to be chanted in “anushanga” format.

References of Source Mantras have been indicated where a Mantra is expanded. The symbols or notations used are:

- TS - Taittiriya Samhita**
- TB - Taittiriya Braahamanam**
- TA - Taittiriya Aranyakam**
- EAK - Ekaagni Kaandam**
- RV - Rig Veda Samhita**

---

## Table of Contents

1	कृष्णयजुर्वेदीय एकाग्निकाण्डः – प्रपाठकः 1.....	12
1.1	विवाहे वरप्रेषणाद्यः .....	14
1.1.1.	वरप्रेषणम्.....	14
1.1.2.	स्वयम् दृष्ट्वा जपः.....	14
1.1.3	समीक्षणम् .....	14
1.1.4.	वध्वा म्रुवोरन्तरं संसृज्य प्रतीचीनं निरसनम्.....	15
1.1.5.	कन्यानयनकाले बन्धुजनरोदने जपः .....	15
1.1.6.	जलाहरणाय प्रेषणम् .....	15
1.1.7	वधूशिरसि दर्भेण्वनिधानम्.....	15
1.1.8	तस्मिन्निण्वे उगच्छिद्रप्रतिष्ठापनम्.....	15
1.1.9	छिद्रे सुवर्णनिधानं .....	15
1.2	विवाहे स्नानाद्यः .....	16
1.2.1	स्नानमन्त्राः.....	16
1.2.2.	अहतस्य वाससः परिधानम्.....	17
1.2.3.	योक्त्रबन्धनम् .....	17
1.2.4.	अग्निमभ्यानयनम्.....	17
1.3	आज्यभागान्ते अभिमन्त्रणम्.....	18
1.3.1.	आज्यभागान्ते अभिमन्त्रणम् .....	18
1.3.2.	पाणिग्रहणमन्त्राः.....	18
1.3.3	सप्तपदाभिप्रक्रमणम्.....	19
1.4	विवाहे प्रधानाहुतिमन्त्राः .....	20
1.4.1	प्रधानाहुतिमन्त्राः .....	20
1.5	अश्मास्थापनाद्यः .....	23
1.5.1.	अश्मास्थापनम् .....	23
1.5.2.	लाजहोमप्रदक्षिणादि. ....	23

---

1.5.3. योक्त्रविमोचनम्.....	25
1.5.4 अनुगतस्यौपासनाग्नेः समाधान मन्त्राः .....	25
1.6 विवाहे प्रयाणकाले स्थस्योत्तम्भनी.....	26
1.6.1. प्रयाणकाले स्थस्योत्तम्भनी .....	26
1.6.3. आरोहणकालेऽभिमन्त्रणम् .....	26
1.6.4. वर्त्मनोस्सूत्रस्तरणम् .....	27
1.6.5 ततुपरि गमनं .....	27
1.7 विवाहे तीर्थादिव्यतिक्रमजपाद्यः .....	28
1.7.1. तीर्थादिव्यतिक्रमे जपः.....	28
1.7.2. नावोऽनुमन्त्रणम् .....	28
1.7.3. तीर्त्वा जपः .....	28
1.7.4. श्मशानादिव्यतिक्रमे होमः .....	29
1.7.5. क्षीरिवृक्षाद्यतिक्रमे जपः.....	30
1.7.6. नद्याद्यतिक्रमे जपः.....	30
1.7.7. वद्ध्वै गृहप्रदर्शनम्.....	31
1.7.8. वाहयोविमोकः.....	31
1.8 विवाहे चर्मास्तरणाद्यः.....	31
1.8.1. चर्मास्तरणम्.....	31
1.8.2. गृहप्रवेशे वाचनम्.....	31
1.8.3 प्रविश्य होमः.....	32
1.9 विवाहे चर्मोपवेशनाद्यः .....	34
1.9.1. चर्मोपवेशनं.....	34
1.9.2. षालकाय फलदानम्.....	34
1.9.3. गृहप्रवेशे जपः.....	34
1.9.4. ध्रुवारुन्धाति दर्शनम्.....	34
1.9.5 उपकारणसमापनयोः काण्डर्षीणामनन्तरं होमः .....	35
1.9.6. स्वयम् प्रज्वलितेऽग्नौ समिदाधानम् .....	35

---

---

1.10 विवाहे दाण्डोत्थापन मन्त्राद्यः.....	36
1.10.1. दाण्डोत्थापन मन्त्रौ .....	36
1.10.2 चतुर्थी होमः.....	36
1.11 विवाहे वधवरयोरन्योन्य समीक्षणाद्यः.....	38
1.11.1. वधवरयोरन्योन्यं समीक्षणं .....	38
1.11.2. आज्यशेषेण हृदयदेशे समञ्जनम् .....	38
1.11.3 समञ्जने जपः .....	39
1.12 विवाहे समावेशन जपः .....	39
1.12.1.समावेशनकाले जपः.....	39
1.13 गर्भधाने ऋतुसमावेशः.....	40
1.13.1.ऋतुसमावेशनकाले भार्याया अभिमन्त्रणं .....	40
1.14 ऋतुसमावेशनकाले भार्याया अभिमन्त्रणं .....	42
1.14.1.ऋतुसमावेशनकाले भार्याया अभिमन्त्रणं .....	42
1.14.2. अर्थप्राध्वस्य परिक्षवपरिकासने जपः .....	43
1.14.3 चित्रियस्य वनस्पतेरभिमन्त्रणम् .....	43
1.14.4 शकृद्रितेरुपस्थानम् .....	43
1.14.5. सिग्वातस्याभिमन्त्रणम्.....	43
1.14.6. शकुनेरभिमन्त्रणम् .....	44
1.15 दम्पत्योर्-हृदयविश्लेषे हृदय-संसर्गेप्सोर्-होमः .....	44
1.15.1 दम्पत्योर्-हृदयविश्लेषे हृदय-संसर्गेप्सोर्-होमः .....	44
1.16 पत्युर्वशीकरणं कर्म.....	45
1.16.1. पत्युर्वशीकरणं कर्म .....	45
1.17 सपत्नीबाधनं कर्म.....	47
1.17.1. सपत्नीबाधनं कर्म .....	47
1.18 वध्वाः यक्ष्मादिहरं कर्म.....	48
1.18.1 वध्वाः यक्ष्मादिहरं कर्म.....	48

---

---

2	कृष्णयजुर्वेदीय एकाग्निकाण्डः – द्वितीयः प्रपाठकः.....	52
2.1	उपनयनमन्त्राः.....	52
2.1.1	क्षुर कर्म.....	52
2.2	उपनयनमन्त्राः.....	53
2.2.1	समिदाधानम्.....	53
2.2.2	अश्मास्तापनम्.....	53
2.2.3	वासः परिधानम्.....	53
2.2.4	मौञ्ज्यजनि मन्त्राः .....	55
2.3	उपनयनमन्त्राः.....	56
2.3.1	अग्रेरुत्तरतोऽवस्थापनम् प्रोक्षणम् हस्तग्रहणम् परिदानम् उपनयनम् कर्ण जपः प्रश्न-प्रतिवचनं च.....	56
2.4	उपनयनमन्त्राः.....	58
2.4.1	होम मन्त्राः.....	58
2.4.2	कूर्चरोहणम्.....	59
2.4.3	सावित्री.....	59
2.4.4	ओष्टकर्णोपस्पर्शनं .....	60
2.5	उपनयनमन्त्राः.....	61
2.5.1	दण्डादानम्.....	61
2.5.2	कुमारवाचनम् उत्थापनम् आदित्योपस्थानम् .....	61
	हस्तग्रहणम् च. ....	61
2.6	उपनयनमन्त्राः.....	63
2.6.1	समिदाधानं .....	63
2.6.2	संशासनं वासस आदानं च.....	64
2.7	समावर्तनमन्त्राः.....	65
2.7.1	समिधादानं.....	65
2.7.2	क्षुर कर्म.....	65
2.7.3	मेखलाया उपजूहनं.....	67

---

---

2.7.4. स्नान मन्त्राः.....	67
2.7.5. दन्तधावमम् वासः परिधानम् च.....	68
2.7.6. देवताभ्यश्चन्दनप्रदानं.....	69
2.7.7.आत्मनोऽनुलेपः.....	69
2.7.8. उदपात्रे सौवर्णमणिपरिप्लावनम्.....	69
2.7.9. ग्रीवास्वाबन्धनम्.....	69
2.7.10. वाससः परिधानम्.....	70
2.8 समावर्तनमन्त्राः.....	71
2.8.1. होमः .....	71
2.8.2. स्रग्बन्धनं .....	72
2.8.3. आज्ञनमन्त्रः.....	72
2.9 समावर्तनमन्त्राः.....	73
2.9.1. आज्ञनमन्त्रः .....	73
2.9.2. अदर्शवेक्षण उपानद्ग्रहण दण्डादान् दिगुपस्थान नक्षत्रचन्द्रोपस्थानानि..	73
2.9.3. मधुपर्कमन्त्राः.....	75
2.10 मधुपर्क मन्त्राः .....	76
2.10.1. मधुपर्क मन्त्राः.....	76
2.11 सीमन्तोन्नयनं .....	78
2.11.1. होममन्त्राः .....	78
2.11.2 वीणागानमन्त्रौ.....	80
2.11.3 पुंसवनं.....	80
2.11.4 क्षिप्रं सवनं.....	80
2.11.5 जरायुणाऽवाक्पतने यजुर्भ्यामिवोक्षणं.....	81
जातकर्म 2.11.6 full, 2.12 full , 2.13 part .....	81
2.12 जातकर्म.....	83
2.12.1 मूधन्यवघ्नानम्.....	84

---



---

2.12.2 दक्षिणे कर्णे जपः.....	84
2.12.3 प्राशनमन्त्राः.....	84
2.12.4 स्रापनमन्त्राः.....	84
2.12.5 पृषदाज्य प्राशनम् .....	85
2.13 जातकर्म.....	85
2.13.1 मातुरङ्गे कुमारमादधाति.....	85
2.13.2 स्तनं धापयति.....	86
2.13.3 पृथिव्यभिमर्शनं.....	86
2.13.4 कुमाराभिमर्शनं.....	86
2.13.5 शिरस्त उद्कुम्भनिधानं.....	86
2.13.6 फलीकरणमिश्रसर्षपहोमः .....	86
2.14 जातकर्म.....	88
2.14.1 फलीकरणमिश्रसर्षपहोमः .....	88
2.14.2 पुत्रस्याभिमन्त्रणं .....	88
2.14.3 मूर्धन्यवध्राणं.....	89
2.14.4 दक्षिणे कर्णे जपः .....	89
2.14.5 कुमार्या अभिमन्त्रणम्.....	90
2.14.6 अन्नप्राशन मन्त्राः .....	90
2.14.7 चौळ मन्त्राः.....	91
2.15 गृहनिर्माण प्रवेशौ .....	91
2.15.1 गृहनिर्माणप्रवेशौ .....	91
2.16 स्वग्रगृहीतस्याभिमन्त्रणम् .....	94
2.16.1 स्वग्रगृहीतस्याभिमन्त्रणम्.....	95
2.16.2 शङ्खग्रहगृहीतस्याभि-मन्त्रणम्.....	96
2.16.3 सर्पबलिः.....	97
2.17 सर्पबलिः.....	97
2.17.1 सर्पबलिः.....	97

---

2.18 आग्रयणाद्यः .....	103
2.18.1. आग्रयणं .....	103
2.18.2 हेमन्तप्रत्यवरोहणं.....	103
2.18.3 ईशान बलिः .....	104
2.19 मासिश्राद्धं .....	107
2.19.1 मासिश्राद्धं.....	108
2.20 मासिश्राद्धं .....	111
2.20.1 मासिश्राद्धं .....	111
2.20.2 अष्टका.....	112
2.21 अष्टकाद्यः .....	114
2.21.1 अष्टका .....	114
2.21.2 सनिमित्वा जपः.....	115
2.21.3 रथादिलाभे स्वीकारः .....	116
2.21.4 सँवादमेध्यतः कर्म .....	117
2.22 विविधकर्माणि .....	117
2.22.1. क्रोधापनयनार्थं कर्म .....	117
2.22.2. असम्भवेप्सोः कर्म .....	118
2.22.3. पुण्यव्यवहारसिद्ध्यर्थं कर्म.....	118
2.22.4. स्नेहाविच्चेदार्थं कर्म .....	118
2.22.5 पलायितदासुदीनां पुनरागमनफलं कर्म.....	118
2.22.6 देहे फलदिपतने प्रक्षालनं.....	119
2.22.7 आगारस्थूणाविरोहणादीषु होमः.....	120
2.22.8 अमात्यानामाभिमुख्येन निधने परिधिनिधानम्.....	121

=====

---

## **Notes on Ekaagni Kanda Compilation:**

### **Source Reference:**

This book is compiled from Ekaagni Kanda book published under the authority of Maharaja of Mysore in 1902 edited by Great Scholar Srinivasa Acharya containing the commentary of Shri Haradatta Mishra printed at Government Branch Press, Mysore.

### **Structure of the Book:**

Ekaagni Khanda has two Prapaatakas, first with 18 Khandas and Second with 22 Khandas. A Khanda is a section with specific set of Statements consisting of Mantras. The Source Book gives the number of Statements as well as the number of Mantras in each Khanda. The Mantra Number reference is given at the end of word/padam or statement where the Mantra ends. The Subject title is also given in the Source book. These are given as titles in Index for reference and we have also indicated the end of specific subjects wherever reference is available. Korvai is given for each Khanda indicated as (K1,K2) etc. as reference with the number of statements in that Khanda. If a Khanda has more than 20 Statements, both 10th and 20th Statement will have a reference as “( )”.

A number of short forms of Mantras are given for which the expansion is provided in a Box. “{ }” bracket symbol used here to indicate the Mantras which are to be expanded.

Anushangam also is present for few Mantras and are represented immediately after the corresponding Mantra. “ \* ” star symbol has been used to indicate the Mantras which are to be chanted in “anushanga” format.

References of Source Mantras have been indicated where a Mantra is expanded. The symbols or notations used are:

- TS - Taittiriya Samhita**
- TB - Taittiriya Braahamanam**
- TA - Taittiriya Aranyakam**
- EAK - Ekaagni Kaandam**
- RV - Rig Veda Samhita**

ओं नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः

श्री गुरुभ्यो नमः, हरिः ओं

1 कृष्णयजुर्वेदीय एकाग्निकाण्डः – प्रपाठकः 1

एकाग्निकाण्डः प्रारम्भः

अ॒दि॒ते॒ऽनु॒ म॒न्य॒स्व । अ॒नु॒म॒ते॒ऽनु॒ म॒न्य॒स्व । स॒र॒स्व॒ते॒ऽनु॒ म॒न्य॒स्व ।  
दे॒व स॒वि॒तः प्र॒सु॒व ॥

ओं अ॒ग्नये॒ स्वाहा॑ । सो॒मा॒य स्वाहा॑ । वि॒श्वे॒भ्यो दे॒वेभ्यः॑ स्वाहा॑ ।  
ध्रु॒वा॒य भू॒मा॒य स्वाहा॑ । ध्रु॒व॒क्षि॒तये॑ स्वाहा॑ ।  
अ॒च्यु॒त॒क्षि॒तये॑ स्वाहा॑ । अ॒ग्नये॑ स्वि॒ष्ट॒कृ॒ते स्वाहा॑ ॥

अ॒दि॒ते॒ऽन्व॒म॒ऽस्थाः॑ । अ॒नु॒म॒ते॒ऽन्व॒म॒ऽस्थाः॑ । स॒र॒स्व॒ते॒ऽन्व॒म॒ऽस्थाः॑ ।  
दे॒व स॒वि॒तः प्रा॒सा॒वीः ॥

ध॒र्मा॒य स्वाहा॑ । अ॒ध॒र्मा॒य स्वाहा॑ । अ॒द्भ्यः॑ स्वाहा॑ ।  
ओ॒ष॒धि॒व॒न॒स्प॒ति॒भ्यः॑ स्वाहा॑ । र॒क्षो॒दे॒व॒ज॒ने॒भ्यः॑ स्वाहा॑ ।  
गृ॒ह्या॒भ्यः॑ स्वाहा॑ । अ॒व॒सा॒ने॒भ्यः॑ स्वाहा॑ । अ॒व॒सा॒न॒प॒ति॒भ्यः॑ स्वाहा॑ ।

सर्व॑भू॒तेभ्यः॑ स्वाहा॑ । कामा॑य स्वाहा॑ । अ॒न्तरि॑क्षा॒य स्वाहा॑ ।  
यदे॑जति॒ जगति॑ यच्च॒ चेष्टति॑ नाम्नो॑ भा॒गोऽयं॑ नाम्ने॒ स्वाहा॑ ।  
पृ॒थि॒व्यै स्वाहा॑ । अ॒न्तरि॑क्षा॒य स्वाहा॑ । दि॒वे स्वाहा॑ । सू॒र्या॒य स्वाहा॑ ।  
चन्द्र॑मसे॒ स्वाहा॑ । नक्ष॑त्रेभ्यः॒ स्वाहा॑ । इन्द्रा॑य स्वाहा॑ । बृ॒हस्प॑तये  
स्वाहा॑ । प्र॒जाप॑तये स्वाहा॑ । ब्र॒ह्म॒णे स्वाहा॑ । स्व॒धा पि॒तृभ्यः॑ स्वाहा॑ ।  
नमो॑ रु॒द्राय॑ पशु॒पतये॑ स्वाहा॑ । ये भू॒ताः प्र॒चर॑न्ति दि॒वा नक्तं॑  
बलि॑-मिच्छन्तो॒ वितु॑दस्य॒ प्रेष्याः॑ । तेभ्यो॑ ब॒लिं पु॒ष्टिका॑मो ह॒रामि॑  
मयि॑ पु॒ष्टिं पु॒ष्टिप॑तिर् दधातु॒ स्वाहा॑ ॥

=====

---

विवाहमन्त्राः (1.1 – 1.12)

1.1 विवाहे वरप्रेष्णाद्यः

1.1.1. वरप्रेषणम्

हरिः ओं ।

प्र॒सु॒गम॒न्ता॑ धि॒य॒सा॒नस्य॑ स॒क्षणि॑ व॒रेभि॑र्व॒राञ् अ॒भि षु॑ प्रसी॒दत॑ ।  
अ॒स्माक॒मिन्द्र॑ उ॒भयं॑ जुजोषति य॒थ्सौ॒म्यस्या॑न्ध॒सो बु॒बो॑धति ॥ 1

अ॒नृ॒क्षरा॑ ऋ॒जवः॑ स॒न्तु प॒न्था ये॒भिः स॒खायो॑ य॒न्ति नो॑ व॒रेय॑म् ।  
सम॑र्य॒मा सं भ॒गो नो॑ निनीया॒थ् सं जा॑स्प॒त्यञ् सु॒यम॑मस्तु दे॒वाः ॥ 2

1.1.2. स्वयम् दृष्ट्वा जपः

अ॒भ्रातृ॑घ्नीं व॒रुणा॑पति॒घ्नीं बृ॒हस्प॑ते ।  
इन्द्रा॑पु॒त्रघ्नीं ल॑क्ष्म्यं ता॒मस्यै॑ स॒वितः॑ सु॒व ॥ 3

1.1.3 समीक्षणम्

अ॒घोर॑चक्षु॒रप॑ति॒घ्न्येधि॑ शि॒वा प॑ति॒भ्यः सु॒मनाः॑ सु॒वर्चाः॑ ।  
जी॒वसू॑र्दे॒वका॑मा स्यो॒ना श॒त्रो भ॑व द्वि॒पदे॑ शञ्चतु॒ष्पदे॑ ॥ 4

1.1.4. वध्वा म्रुवोरन्तरं संसृज्य प्रतीचीनं निरसनम्

इ॒दम॒हं॒ या॒ त्वयि॑ प॒ति॒घ्न्यल॒क्ष्मिस्तां॑ निर्दि॒शामि॑ ॥ 5

1.1.5. कन्यानयनकाले बन्धुजनरोदने जपः

जी॒वाꣳ रु॒दन्ति॑ वि॒मय॑न्ते अ॒ध्वरे॑ दी॒र्घाम॑नु प्र॒सितिं॑ दी॒धियु॑र्नरः ( ) ।

वा॒मं पि॒तृभ्यो॑ य इ॒दꣳ स॒मेरि॑रे म॒यः प॒तिभ्यो॑ ज॒नयः॑ परि॒ष्वजे॑ ॥ 6

1.1.6. जलाहरणाय प्रेषणम्

व्यु॒क्षत् क्रू॒रमु॒दच॑न्त्वाप आऽस्यै॑ ब्रा॒ह्मणाः॑ स्न॒पनꣳ ह॑रन्तु ।

अ॒वीर॑घ्नीरु॒दच॑न्त्वापः ॥ 7

1.1.7 वधूशिरसि दर्भेण्वनिधानम्

अ॒र्यम्णो॑ अ॒ग्निं परि॑ यन्तु क्षि॒प्रं प्र॒तीक्ष॑न्ताꣳ श्व॒श्र्वो दे॒वरा॑श्च ॥ 8

1.1.8 तस्मिन्निण्वे उगच्छिद्रप्रतिष्ठापनम्

खेऽन॑सः खे रथः खे यु॒गस्य॑ श॒चीप॑ते । अ॒पा॒ला॒मिन्द्र॑ त्रिः

पू॒र्त्-व्य॑क॒रथ् सूर्य॑वर्च॒सम् ॥ 9

1.1.9 छिद्रे सुवर्णनिधानं

श॒न्ते हि॒रण्यꣳ श॑मु स॒न्त्वापः॑ श॒न्ते मे॒धी भ॑वतु शं यु॒गस्य॑ तृ॒द्व ।

श॒न्त आ॒पः श॒तप॑वि॒त्रा भ॑वन्त्व॒था प॒त्या त॒न्वꣳ सꣳ सृ॑जस्व ॥ 10

(दी॒धियु॑र्नरोऽष्टौ च) (K1) (18)

## 1.2 विवाहे स्नानाद्यः

### 1.2.1 स्नानमन्त्राः

हिर॑ण्यव॒र्णाः शु॒चयः॑ पा॒वकाः॑ प्रच॑क्रमुर्. हि॒त्वाऽव॒द्यमा॑पः ।

श॒तं प॒वित्रा॑ वि॒तता॑ ह्या॒सु ताभि॑ष्ट्वा दे॒वः स॒विता॑ पु॒नातु॑ ॥ 1

हिर॑ण्यव॒र्णाः शु॒चयः॑ पा॒वका॑ या॒सु जा॒तः क॒श्यपो॑ या॒स्वग्निः॑ ।

या अ॒ग्निं ग॒र्भं द॒धिरे सु॒वर्णा॑स्तास्त॒ आप॑श्श॒स्यो॒ना भ॑वन्तु ॥ 2

यासा॑ञ् राजा॒ वरु॑णो याति॒ मद्ध्ये॑ स॒त्यानृ॑ते अ॒वप॑श्यन् ज॒नाना॑म् ।

या अ॒ग्निं ग॒र्भं द॒धिरे सु॒वर्णा॑स्तास्त॒ आप॑श्श॒स्यो॒ना भ॑वन्तु ( ) ॥ 3

यासां॑ दे॒वा दि॒वि कृ॑ण्वन्ति॒ भक्षं॑ या अ॒न्तरि॑क्षे बहु॒धा नि॒विष्टाः॑ ।

या अ॒ग्निं ग॒र्भं द॒धिरे सु॒वर्णा॑स्तास्त॒ आप॑श्श॒स्यो॒ना भ॑वन्तु ॥ 4

शि॒वेन॑ त्वा चक्षु॑षा पश्यन्त्वापः॒ शि॒वया॑ त॒न्वोप॑स्पृशन्तु॒ त्वचं॑ ते ।

घृ॒तश्चु॒तः शु॒चयो॑ याः पा॒वका॑स्तास्त॒ आप॑श्श॒स्यो॒ना भ॑वन्तु ( ) ॥ 5



1.2.2. अहतस्य वाससः परिधानम्

परि॑ त्वा॑ गिर्व॑णो गिर॑ इ॒मा भव॑न्तु विश्व॑तः ।

वृ॒द्धायु॑मनु॒ वृ॒द्धयो॑ जु॒ष्टा भव॑न्तु जु॒ष्टयः॑ ॥ 6

1.2.3. योक्त्रबन्धनम्

आ॒शा॒सा॒नेत्ये॒षा { } ॥ 7

Expansion for - आशासानेत्येषा

आ॒शा॒सा॒ना सौ॒मन॑सं प्र॒जाꣳ सौ॒भा॒ग्यं त॒नूं ।

अ॒ग्नेर॑नु॒व्र॒ता भू॒त्वा सं न॑ह्ये सु॒कृ॒ताय॑ कं । (Ref TS 1.1.10.1)

1.2.4. अग्निमभ्यानयनम्

पू॒षा त्वे॒तो न॑यतु ह॒स्तगृ॒ह्याश्वि॑नौ त्वा प्र॒व॒ह॒ताꣳ रथे॑न ।

गृ॒हान् ग॑च्छ गृ॒हप॑त्नी॒ यथाऽसौ॑ व॒शिनी॒ त्वं वि॑दथ॒माव॑दासि ॥ 8

(भव॑न्तु - पञ्च॑ च) (K2) (15)

### 1.3 आज्यभागान्ते अभिमन्त्रणम्

#### 1.3.1. आज्यभागान्ते अभिमन्त्रणम्

सोमः॑ प्रथ॒मो वि॒विदे॑ गन्ध॒र्वो वि॒विद॑ उत्त॒रः ।

तृ॒तीयो॑ अ॒ग्नि॒ष्टे प॒तिस्तु॑रीयस्ते म॒नुष्य॑जाः ॥ 1

सोमो॑ ऽद॒दद् गन्ध॑र्वाय॒ गन्ध॑र्वो ऽद॒दद॑ग्नये॑ ॥

रयिं॑ च पु॒त्राश्चा॑दाद॒ग्निर् म॒ह्यम॑थो इ॒माम् ॥ 2

#### 1.3.2. पाणिग्रहणमन्त्राः

गृ॒भ्णामि॑ ते सु॒प्रजा॑स्त्वाय॒ हस्तं॑ मया॒ पत्या॑ ज॒रद॑ष्टिर् यथा॒ऽसः॑ ।

भगो॑ अ॒र्यमा॑ स॒विता॑ पु॒रन्धि॑र् म॒ह्यं त्वा॑ऽदु॒र्गार्ह॑पत्याय॒ देवाः॑ ॥ 3

ते ह॒ पूर्वे॑ जना॒सो यत्र॑ पूर्॒वव॑हो हि॒ताः ।

मूर्ध्व॑न्वान्. यत्र॑ सौ॒भ्रवः॑ पूर्॒वो दे॒वेभ्य॑ आ॒ऽतप॑त् ॥ 4

स॒रस्व॑ति॒ प्रेद॑मव॒ सुभ॑गे वा॒जिनी॑वति ।

तां त्वा॑ वि॒श्वस्य॑ भू॒तस्य॑ प्र॒गायाम॑स्य॒ग्रतः॑ ( ) ॥ 5

य ए॒ति प्र॒दिशः॑ सर्वा॒ दिशो॑ऽनु॒ पव॑मानः ।

हि॒रण्य॑हस्त॒ ऐरं॑मः स त्वा॒ मन्म॑नसं कृ॒णोतु॑ ॥ 6

**1.3.3 सप्तपदाभिप्रक्रमणम्**

ए॒क॒मि॒षे वि॒ष्णु॒स्त्वाऽन्वे॑तु 7,  
 द्वे ऊ॒र्जे 8\*, त्री॒णि व्र॒ताय॑ 9\*, च॒त्वारि॑ मा॒योभ॒वाय॑ 10\*,  
 पञ्च॑ प॒शुभ्यः॑ 11\*, षड् ऋ॒तुभ्यः॑ 12\*,  
 सप्त॑ सप्त॒भ्यो हो॒त्राभ्यो॑ वि॒ष्णु॒स्त्वाऽन्वे॑तु ॥ 13

**अनुषङ्गः – form 8 to 12**

द्वे ऊ॒र्जे वि॒ष्णु॒स्त्वाऽन्वे॑तु । 8  
 त्री॒णि व्र॒ताय॑ वि॒ष्णु॒स्त्वाऽन्वे॑तु । 9  
 च॒त्वारि॑ मा॒योभ॒वाय॑ वि॒ष्णु॒स्त्वाऽन्वे॑तु । 10  
 पञ्च॑ प॒शुभ्यः॑ वि॒ष्णु॒स्त्वाऽन्वे॑तु । 11  
 षड् ऋ॒तुभ्यः॑ वि॒ष्णु॒स्त्वाऽन्वे॑तु । 12

स॒खा स॒प्तप॒दा भव॑ स॒खायौ॑ स॒प्तप॒दा ब॒भूव॑ स॒ख्यं ते॑ गमे॒यꣳ  
 स॒ख्यात् ते॑ मा योष॑ꣳ स॒ख्यान् मे॑ मा यो॒ष्टाः स॒मया॑व स॒ङ्कल्पा॑वहै  
 संप्रि॑यौ रोचि॒ष्णू सु॒मन॑स्यमा॒नौ । इ॒षमूर्ज॑म॒भि स॒म्व॑सानौ स॒न्नौ  
 मना॑ꣳसि सं व्र॒ता स॒मु चि॒त्ता॒न्या॒कर॑म् । 13

सा त्वमस्यमूह-ममूहमस्मि सा त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वञ् रेतोऽहञ्  
 रेतोभृत्त्वं मनोऽहमस्मि वाक् त्वञ् सामाहमस्म्यृक्त्वञ् सा मामनुव्रता  
 भव पुञ्से पुत्राय वेत्तवै श्रियै पुत्राय वेत्तवा एहि सूनृते ॥ 14

(अग्रतः षट्च) (K3) (16)

## 1.4 विवाहे प्रधानाहुतिमन्त्राः

### 1.4.1 प्रधानाहुतिमन्त्राः

सोमाय जनिविदे स्वाहा 1,

गन्धर्वाय जनिविदे स्वाहा 2,

ऽग्नये जनिविदे स्वाहा ॥ 3

कन्यला पितृभ्योयती पतिलोकमव दीक्षामदास्थ स्वाहा ॥ 4

प्रेतो मुञ्चाति नामुतः सुबद्धाममुतस्करत् ।

यथेयमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रा सुभगाऽसति ॥ 5

इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्राञ् सुभगां कुरु (कृणु) ।

दशास्यां पुत्रानाधेहि पतिमेकादशं कृधि ॥ 6

अ॒ग्नि॒रै॒तु प्र॒थ॒मो दे॒वता॑नाञ् सोऽ॒स्यै प्र॒जां मुञ्च॑तु मृत्युपा॒शात् ।  
तद॒यञ् रा॒जा वरु॑णोऽनु॒मन्य॑तां य॒थेय॑ स्त्री पौ॒त्रम॑घं न रोदात् ॥ 7

इ॒मा॒म॒ग्नि॒स्त्राय॑तां गा॒र्ह॒पत्यः॑ प्र॒जाम॑स्यै नयतु दी॒र्घ॒मायुः॑ ।  
अ॒शू॒न्योप॑स्था जी॒वता॑मस्तु मा॒ता पौ॒त्रमा॑नन्दम॒भि  
प्र॒बुद्ध्य॑तामि॒यम् ( ) ॥ 8

मा ते गृ॒हे नि॒शि घोष॑ उत्था॒दन्यत्र॑ त्वद्गु॒दत्यः॑ सँवि॒शन्तु॑ ।  
मा त्वं वि॒केश्यु॑र आ॒वधि॑ष्ठा जी॒वप॑त्नी प॒तिलो॑के वि॒राज॑ पश्यन्ती  
प्र॒जाञ् सु॒मन॑स्यमा॒नाम् ॥ 9

द्यौस्ते पृ॒ष्ठञ् रक्ष॑तु वा॒युरू॒रू अ॒श्विनौ च॑ स्तनं ध॒यन्त॑ञ्  
सवि॒ताऽभिर॑क्षतु । आ वा॒स॒सः परि॑धानाद्-बृ॒हस्प॑तिर् वि॒श्वेदे॒वा  
अ॒भिर॑क्षन्तु पश्चात् ॥ 10

अ॒प्र॒जस्तां पौ॒त्र मृत्युं॑ पाप्मान॒मुत॑ वाऽघम् ।  
शी॒र्ष्णः स्रज॑मि॒वोन्मु॑च्य द्विषद्भ्यः॒ प्रति॑ मुञ्चामि पा॒शम् ॥ 11

इ॒मं मे॑ वरु॒ण 12{ }, तत्त्वा॑ या॒मि 13{ }, त्वन्नो॑ अ॒ग्ने 14{ },  
स त्वन्नो॑ अ॒ग्ने 15 { } , त्वम॑ग्ने अ॒याऽस्य॑या 16 सन्मन॑सा हि॒तः ।  
अ॒या सन्॑ ह॒व्यमू॑हिषे॒ऽया नो॑ धेहि भेष॑जम् ॥ 17

Expansion for - इ॒मं मे॑ वरु॒ण 12, तत्त्वा॑ या॒मि 13,

त्वन्नो॑ अ॒ग्ने 14, स त्वन्नो॑ अ॒ग्ने 15

इ॒मं मे॑ वरु॒ण श्रु॒धी ह॒वम॑द्या च मृ॒डय॑ ।

त्वा॒मव॑स्युरा च॒के ॥ 12 (Ref - TS 2.1.11.6)

तत्त्वा॑ या॒मि ब्र॒ह्मणा॑ व॒न्दमा॑न-स्तदा शा॒स्ते य॑ज॒मानो॑ ह॒विर्भिः॑ ।

अहे॑ड॒मानो॑ वरु॒णेह॑ बो॒द्ध्युरु॑श॒ऽस मा॒ न आ॒युः प्र॑मोषीः ॥ 13

(Ref - TS 2.1.11.6)

त्वं नो॑ अ॒ग्ने वरु॑णस्य वि॒द्वान् दे॒वस्य॑ हे॒डोऽव॑ या॒सि सी॑ष्ठाः ।

यजि॑ष्ठो वह्नि॑ तमः शोशु॑चानो वि॒श्वा द्वे॑षा॒ऽसि प्र॑मुमु॒ग्ध्यस्म॑त् ॥ 14

(Ref TS 2.5.12.3)

स त्वंनो॑ अग्ने॒ऽवमो॑ भवोती॒ नेदि॑ष्ठो अस्या॒ उष॒सो व्यु॑ष्टौ ।

अव॑यक्ष्व नो॒ वरु॑ण॒ऽ ररा॑णो वी॒हि मृ॑डी॒क॒ऽ सु॒हवो॑ न ए॒धि ॥ 15

(Ref - TS.2.5.12.3)

(इ॒यम॒ष्टौ च॑ ) (K4) (18)

## 1.5 अश्मास्थापनाद्यः

### 1.5.1. अश्मास्थापनम्

आ ति॑ष्ठेमम॒श्मान॑-म॒श्मेव॑ त्व॒ स्थि॑रा भव ।

अ॒भि॒ति॒ष्ठ पृ॑तन्यतः॒ सह॑स्व पृ॒तना॑यतः ॥ 1

### 1.5.2. लाजहोमप्रदक्षिणादि.

इ॒यं ना॒र्युप॑ब्रूते॒ कु॒ल्पा॑न्यावप॒न्ति॒का ।

दी॒र्घा॒युर॑स्तु मे॒ पति॑र् जी॒वातु॑ श॒रदः॑ श॒तम् ॥ 2

तु॒भ्यम॒ग्रे पर्य॑वहन्थ् सूर्या॑ व॒हतु॑ना॒ सह॑ ।

पुनः॑ पति॒भ्यो जा॑यां दा अ॒ग्ने प्र॒जया॑ सह ॥ 3

पुनः॑ पत्नी॑म॒ग्निर॑दा॒दायु॑षा सह॒ वर्च॑सा ।

दी॒र्घायु॑रस्या॒ यः पतिः॑ स ए॒तु शर॑दः श॒तम् ॥ 4

विश्वा॑ उ॒त त्वया॑ व॒यं धारा॑ उ॒दन्या॑ इव ।

अति॑गाहेमहि॒ द्विषः॑ ( ) ॥ 5

आ तिष्ठे॑ममश्मानम् ॥ 6

अ॒र्यम॑णं नु दे॒वं क॒न्या अ॒ग्निम॑यक्षत ।

स इ॒मां दे॒वो अ॒ध्वरः॑ प्रेतो मु॒ञ्चाति॑ नामु॒तः

सु॒ब॒द्धाम॑मु॒तस्कर॑त् ॥ 7

तुभ्य॑म॒ग्रे पर्य॑वहन् 8, पुनः॑ पत्नी॑म॒ग्निर॑दाद् 9,

विश्वा॑ उ॒त त्वया॑ व॒य 10, मा तिष्ठे॑ममश्मानम् ॥ 11

त्वम॑र्य॒मा भव॑सि॒ यत्क॒नीनां॑ नाम॒ स्वधा॑व॒थ्-स्वर्यं॑ बि॒भर्षि॑ ।

अ॒ञ्जन्ति॑ वृ॒क्षं सु॒धितं॑ न गो॒भिर्-यद्-द॑म्प॒ती सम॑नसा

कृ॒णोषि॑ ॥ 12



तुभ्य॑म॒ग्रे॒ पर्य॑व॒हन् १३ पुनः॑ पत्नी॒म॒ग्नि॒रदा॑द् १४

विश्वा॑ उ॒त त्वया॑ व॒यम् ॥ १५

१.५.३. योक्त्रविमोचनम्

प्र त्वा॑ मुञ्चामि॒ वरु॑णस्य॒ पाशा॑द्-येन॒ त्वाऽब॑ध्नाथ् स॒विता॑ सु॒केतः॑ ।

धातु॑श्च योनौ॑ सुकृ॒तस्य॑ लो॒के स्यो॑नं ते सह॒ पत्या॑

करोमि॑ (कृणोमि) ॥ १६

इमं॑ वि॒ष्यामि॒ वरु॑णस्य॒ पाशं॑ यम॒ब॒ध्नीत॑ स॒विता॑ सु॒शेवः॑ ( ) ।

धातु॑श्च योनौ॑ सुकृ॒तस्य॑ लो॒केऽरि॑ष्टां त्वा सह॒ पत्या॑

करोमि॑ (कृणोमि) ॥ १७

१.५.४ अनुगतस्यौपासनाग्नेः समाधान मन्त्राः

अया॑श्चाग्ने॒ ऽस्य॑नभि॒शस्ती॑श्च स॒त्यमि॑त्त्वमया॒ असि॑ ।

अय॑सा मन॒सा धृ॑तोऽय॒सा ह॒व्यमू॑हिषेऽया॒ नो धे॑हि भेष॒जम् ॥ १८

( द्विषः॑ - सु॒शेव- स्त्रीणि॑ च) (K5) (23)

## 1.6 विवाहे प्रयाणकाले स्थस्योत्तम्भनी

### 1.6.1. प्रयाणकाले स्थस्योत्तम्भनी

स॒त्ये॒नो॒त्त॒भि॒ता भू॒मिः॑ सू॒र्ये॒णो॒त्त॒भि॒ता द्यौः॑ ।  
ऋ॒ते॒ना॒दि॒त्या॒स्ति॒ष्ठ॒न्ति दि॒वि सो॒मो अ॒धि श्रि॒तः॑ ॥ 1

### 1.6.2. वाहयोजनम्

यु॒ञ्ज॒न्ति ब्र॒ध्नं॑ 2 { } , यो॒गे॒यो॒गे 3 { } ॥

**Expansion for यु॒ञ्ज॒न्ति ब्र॒ध्नं॑ 2, यो॒गे॒यो॒गे 3**

यु॒ञ्ज॒न्ति ब्र॒ध्नम॑रुषं चरन्तं परि॒त॒स्थुषः॑ ।

रोच॑न्ते रोचना दि॒वि ॥ 2 (Ref - TS 7.4.20.1)

यो॒गे॒यो॒गे तव॑स्तरं वा॒जे॒वा॒जे ह॒वाम॑हे ।

सखा॑य इन्द्र॒मू॒तये॑ ॥ 3 (Ref - TS 4.1.2.1)

### 1.6.3. आरोहणकालेऽभिमन्त्रणम्

सु॒किं॑ शु॒कं॑ श॒ल्म॒लिं॑ वि॒श्वरू॒पं॑ हि॒र॒ण्यव॑र्णं सु॒वृ॒तं॑ सु॒च॒क्रम् ।

आ॒रो॒ह व॒ध्वम॑ृतस्य लो॒कं॑ स्यो॒नं प॒त्ये व॒हतुं॑ कृ॒णु॒ष्व ॥ 4

उदु॒त्तर॒मारो॒हन्ती॑ व्य॒स्यन्ती॑ पृ॒तन्य॒तः ।

मू॒र्ध्ना॒नं प॒त्युरा॒रोह॑ प्र॒जया॑ च वि॒राड्भ॑व ॥ 5

स॒म्रा॒ज्ञी श्व॑शु॒रे भ॑व स॒म्रा॒ज्ञी श्व॑श्रु॒वां भ॑व ।

न॒ना॒न्दरि॑ स॒म्रा॒ज्ञी भ॑व स॒म्रा॒ज्ञी अ॒धि दे॒वृषु॑ ॥ 6

स्नु॒षाणा॑ञ् श्व॑शु॒राणां॑ प्र॒जाया॑श्च ध॒नस्य॑ च ( ) ।

प॒तीनां॑ च दे॒वृणां॑ च स॒जा॒तानां॑ वि॒राड्भ॑व ॥ 7

#### 1.6.4. वर्त्मनोस्सूत्रस्तरणम्

नी॒ल॒लो॒हिते॑ भ॒वतः॑ कृ॒त्या स॒क्तिर्व्य॑ज्यते ।

ए॒धन्ते॑ऽस्या ज्ञा॒तयः॑ प॒तिर्ब॒न्धेषु॑ ब॒द्ध्यते॑ ॥ 8

#### 1.6.5 ततुपरि गमनं

ये व॒द्वध्व॑श्च॒न्द्रं व॑ह॒तुं य॑क्ष्मा॒ यन्ति॑ ज॒नाञ् अनु॑ ।

पु॒न॒स्तान् य॒ज्ञिया॑ दे॒वा न॑यन्तु॒ यत॑ आ॒गताः॑ ॥ 9

मा वि॒दन्प॑रि॒पन्थि॑नो॒ य आ॒सीद॑न्ति द॒म्पती॑ ।

सु॒गेभि॑र् दु॒र्गम॑ती॒ता-म॑प॒द्रान्त्व॑रा॒तयः॑ ॥ 10

सु॒गं प॒न्थान॒-मा॒रुक्ष॒-म॒रिष्ट॑ ७ स्व॒स्तिवा॒हनम् ।  
यस्मिन् वी॒रो न रि॒ष्यत्य॒न्येषां॑ वि॒न्दते॑ वसु ॥ 11  
(ध॒नस्य॑ च - न॒व च) (K6) (19)

## 1.7 विवाहे तीर्थादिव्यतिक्रमजपाद्यः

### 1.7.1. तीर्थादिव्यतिक्रमे जपः

ता म॒न्दसा॒ना म॒नुषो॑ दुरो॒ण आ॒धत्त॑ र॒यिं द॒शवी॑रं वच॒स्यवे॑ ।  
कृ॒तं ती॒र्थं सु॒प्रपा॒णं शु॒भस्प॑ती स्था॒णुं प॒थेष्ठा॑मप॒ दुर्म॑तिं  
ह॒तम् ॥ 1

### 1.7.2. नावोऽनुमन्त्रणम्

अ॒यन्नो॑ म॒ह्याः पा॒र ७ स्व॒स्ति नै॒षद्-व॑नस्पतिः ।  
सी॒रा नः॑ सु॒तरा॑ भव दी॒र्घायु॑त्वाय॒ वर्च॑से ॥ 2

### 1.7.3. तीर्त्वा जपः

अ॒स्य पा॒रे निर्ऋ॑थस्य जी॒वा ज्योति॑रशीमहि ।  
म॒ह्या इन्द्रः॑ स्व॒स्तये॑ ॥ 3

1.7.4. श्मशानादिव्यतिक्रमे होमः

यदृ॑ते चि॒दभि॑ श्रिषः॑ पु॒रा ज॒र्त॒भ्य आ॒तृदः॑ ।

सन्धा॑ता स॒न्धिं म॒घवा॑ पु॒रोव॒सुर्निष्कर्ता॑ वि॒हु॒तं पुनः॑ ॥ 4

इ॒डाम॑ग्न 5 { } . इ॒मं मे॑ वरुण 6 { } . तत्त्वा॑ या॒मि 7 { } . त्वन्नो॑

अ॒ग्ने 8 { } . स त्वन्नो॑ अ॒ग्ने 9 { } . त्वम॑ग्ने अ॒यासि॑ { } ॥ 10

Expansion for इ॒डाम॑ग्न 5, इ॒मं मे॑ वरुण (6). तत्त्वा॑ या॒मि 7, त्वन्नो॑ अ॒ग्ने 8 , स त्वन्नो॑ अ॒ग्ने 9, त्वम॑ग्ने अ॒यासि॑ 10.

इ॒डाम॑ग्ने पु॒रुद॑स्स॒निं गोः॑ श॒श्वत्त॑म॒हव॑मानाय साध ।

स्यान्नः॑ सू॒नुस्त॑नयो वि॒जावा॑ग्ने सा ते सु॒मति॑र् भू॒त्वस्मे ॥ 5

(Ref - TS 4.2.4.3)

इ॒मं मे॑ वरुण श्रु॒धी ह॑वम॒द्या च॑ मृ॒डय॑ ।

त्वाम॑वस्युरा च॒के ॥ 6 (Ref - TS.2.5.12.3)

तत्त्वा॑ या॒मि ब्र॑ह्मणा व॒न्दमा॑न-स्तदा शा॒स्ते य॑ज॒मानो॑ ह॒विर्भिः॑ ।

अहे॑ड॒मानो॑ वरुणे॒ह बो॒ध्युरु॑श॒स्स मा॒न आ॒युः प्र॑मोषीः ॥ 7

(Ref - TS 2.5.12.3)

त्वं नो॑ अग्ने॑ वरुणस्य॑ विद्वान् देवस्य॑ हेडो॒ऽव यासि॑ सी॒ष्ठाः ।  
यजि॑ष्ठो वह्नि॑ तमः॒ शोशु॑चानो॒ विश्वा॑ द्वेषा॒ऽसि प्रमु॑मुग्ध्यस्मत् ॥ 8

(Ref TS 2.5.12.3)

स त्वंनो॑ अग्ने॑ऽवमो भवोती॑ नेदि॑ष्ठो अस्या॒ उष॑सो व्यु॑ष्टौ ।  
अव॑ यक्ष्व नो॒ वरुण॑ऽ ररा॒णो वी॒हि मृ॒डीक॑ऽ सु॒हवो॑ न ए॒धि ॥ 9

(Ref - TS 2.5.12.3)

त्वमग्ने॑ अया॒ऽसि । अ॒या सन्म॑नसा॒ हितः॑ । अ॒या सन्॒हव्य॑मू॒हिषे॑ ।  
अ॒या नो॑ धेहि॒ भेष॑जम् । इ॒ष्टो अ॒ग्निराहु॑तः । स्वा॒हाकृ॑तः पिप॒र्तु नः॑ ।  
स्वगा॑ दे॒वेभ्य॑ इ॒दं नमः॑ ॥ 10 (Ref TB 2.4.1.9 )

#### 1.7.5. क्षीरिवृक्षाद्यतिक्रमे जपः

ये गन्ध॑र्वा अ॒प्सर॑सश्च दे॒वीरे॒षु वृ॒क्षे॒षु वा॒नस्प॑त्येष्वा॒सते॑ ( ) ।  
शि॒वास्ते॑ अ॒स्यै व॒द्ध्वै भव॑न्तु॒ मा हि॑ऽसि॒षुर्-व॒हतु॑मू॒ह्यमा॑नाम् ॥ 11

#### 1.7.6. नद्याद्यतिक्रमे जपः

या ओष॑धयो॒ या नद्यो॑ या॒नि धन्वा॑नि॒ ये वना॑ ॥  
ते त्वा॑ वधु॒ प्रजा॑वतीं॒ प्र त्वे॑ मुञ्च॒न्त्वह॑सः ॥ 12

1.7.7. वद्ध्वै गृहप्रदर्शनम्

सं॒का॒श॒या॒मि॒ व॒ह॒तुं॑ ब्र॒ह्म॒णा गृ॒हैर॒घो॒रेण॑ चक्षु॒षा मै॒त्रेण॑ । प॒र्या॒ण॒ब्धं  
वि॒श्वरू॒पं य॒दस्या॑ स्यो॒नं प॒तिभ्यः॑ स॒वि॒ता कृ॒णोतु॑ तत् ॥ 13

1.7.8. वाहयोविमोकः

आ॒वा॒म॒ग॒न्थ् सु॒म॒तिर् वा॒जि॒नीव॒सू॒न्यश्चि॒ना ह॒थ्सु॑ का॒मा अ॒यस॑त ।  
अ॒भू॒तं गो॒पा मि॒थु॒ना शु॒भ॒स्प॒ती प्रि॒या अ॒र्य॒म्णो दु॒र्या अ॒शीम॑हि ॥ 14

अ॒य॒न्नो दे॒वः स॒वि॒ता बृ॒ह॒स्प॒तिरि॒न्द्रा॒ग्नी मि॒त्राव॑रु॒णा स्व॒स्तये॑ । त्व॒ष्टा  
वि॒ष्णुः प्र॒जया॑ स॒र्रा॒णः का॒म आ॒या॒तं का॒माय॑ त्वा वि॒मुञ्च॑तु ॥ 15

(आ॒स॒ते न॒व च) (K7) (19)

1.8 विवाहे चर्मास्तरणाद्यः

1.8.1. चर्मास्तरणम्

श॒र्म व॒र्मे॒द॒मा॒ह॒रा॒स्यै ना॒र्या उप॑स्ति॒रे ।  
सि॒नीवा॒लि प्र॒जाय॑ता॒मि॒यं भ॒गस्य॑ सु॒म॒ताव॑सत् ॥ 1

1.8.2. गृहप्रवेशे वाचनम्

गृ॒हान्-भ॒द्रान्थ्-सु॒म॒न॒सः प्र॒प॒द्येऽवी॑र॒घ्नी वी॒र॒वतः॑ सु॒वी॒रान् ।  
इ॒रां व॑ह॒तो घृ॒तमु॒क्षमा॑णा॒स्तेष्व॒ह सु॒म॒नाः स॒म् वि॑शामि ॥ 2

### 1.8.3 प्रविश्य होमः

आ॒गन् गो॒ष्ठं म॒हिषी॑ गो॒भि-र॒श्वै-रा॒युष्म॑त्पत्नी॒ प्र॒जया॑ स्व॒र्वित् ।

ब॒र्हीं प्र॒जां ज॒नय॑न्ती सु॒रत्ने॑मम॒ग्निं श॒तहि॑माः स॒पर्यात् ॥ 3

अ॒यम॒ग्निर् गृ॒हप॑तिः सु॒सं॒सत् पु॒ष्टि॒वर्द्ध॑नः ।

यथा॑ भ॒गस्या॒भ्यां द॑दद्-र॒यिं पु॒ष्टि॒मथो॑ प्र॒जाम् ॥ 4

प्र॒जाया॑ आ॒भ्यां प्र॒जाप॑त इन्द्रा॒ग्नी श॒र्म य॑च्छतम् ।

यथै॑नयो॒र्न प्र॑मी॒याता॑ उ॒भयो॒र्जीव॑तोः प्र॒जा ( ) ॥ 5

तेन॑ भू॒तेन॑ ह॒विषा॒ज्यमा॑प्यायतां पुनः ।

जा॒यां याम॑स्मा आ॒वाक्षु॑स्तां र॒सेना॒भिव॑र्द्धताम् ॥ 6

अ॒भिव॑र्द्धतां प॒यसा॒भि रा॒ष्ट्रेण॑ वर्द्धताम् ।

र॒य्या स॒हस्र॑पोष॒सेमौ॑ स्ताम॒नपे॑क्षितौ ॥ 7

इ॒हैव॑ स्तं मा वि॒योष्टं॑ वि॒श्वमा॒युर्-व्य॑श्नुतम् ।

म॒ह्या इन्द्रः॑ स्व॒स्तये॑ ॥ 8



ध्रु॒वै॒धि पो॒ष्या म॒यि म॒ह्यं त्वा॒ऽदाद्-बृ॒ह॒स्पतिः ।

म॒या प॒त्या प्र॒जाव॑ती स॒ञ्जीव॑ श॒रद॑श्श॒तम् । 9

त्व॒ष्टा जा॒या-म॑जनयत् त्व॒ष्टाऽस्यै॑ त्वां प॒तिम् ।

त्व॒ष्टा स॒हस्र॑मायू॒षि दी॒र्घ॑मायुः कृ॒णोतु॑ वाम् ( ) ॥ 10

इ॒मं मे॑ वरु॒ण११{ }, तत्त्वा॑ या॒मि॒१२ { }, त्व॒न्नो अ॒ग्ने॒१३ { },

स त्व॒न्नो अ॒ग्ने॒१४{ }, त्वम॑ग्ने अ॒याऽसि॑ { } ॥ 15

Expansion for इ॒मं मे॑ वरु॒ण११, तत्त्वा॑ या॒मि॒१२, त्व॒न्नो अ॒ग्ने॒१३,

स त्व॒न्नो अ॒ग्ने॒१४, त्वम॑ग्ने अ॒याऽसि॑

(Same as given in - EAK 1.7.4 )

(जी॒व॒तोः प्र॒जा-वा॒मेकं॑ च) (K8) (21)

## 1.9 विवाहे चर्मोपवेशनाद्यः

### 1.9.1. चर्मोपवेशनं

इ॒ह गा॒वः प्र॒जाय॑ध्वमि॒हाश्वा॑ इ॒ह पू॒रुषाः॑ ।

इ॒हो स॒हस्र॑दक्षि॒णो रा॒यस्पोषो॑ नि॒षीद॑तु ॥ 1

### 1.9.2. षालकाय फलदानम्

सोमे॑नादि॒त्या ब॒लि॒नः सोमे॑न पृ॒थि॒वी दृ॒ढा ।

अथो॑ नक्ष॒त्राणा॑-मे॒षामु॑प॒स्थे सोम॑ आ॒धितः॑ ॥ 2

प्र॒स्वः स्थः॑ प्रे॒यं प्र॒जया॑ भु॒वने॑ शो॒चेष्ट॑ ॥ 3

### 1.9.3. गृहप्रवेशे जपः

इ॒ह प्रि॒यं प्र॒जया॑ ते स॒मृद्ध्य॑ता-म॒स्मिन् गृ॒हे गा॒र्ह॒पत्या॑य जा॒गृहि॑ ।

ए॒ना प॒त्या त॒न्वꣳ सꣳसृ॑ज॒स्वाथा॑ जी॒व्री वि॒दथ॑-मा॒वदा॑सि ॥ 4

सु॒मङ्ग॒लीरि॒यं वँधू॑रि॒माꣳ स॒मेत॑ पश्य॑त ।

सौ॑भा॒ग्यम॒स्यै द॒त्वाया॑थास्तं वँ॒विप॑रे॒तन॑ ॥ 5

### 1.9.4. ध्रुवारुन्धाति दर्शनम्

ध्रु॒वक्षि॑तिर्-ध्रु॒वयो॑निर्-ध्रु॒वम॑सि ध्रु॒वतः॑ स्थि॒तम् ( ) ।

त्वन्नक्ष॒त्राणां॑ मे॒थ्यसि॑ स मा पा॒हि पृ॑तन्यतः ॥ 6

स॒प्त॒र्ष॒यः॑ प्र॒थ॒मां॑ कृ॒त्ति॒का॒ना-म॒रु॒न्ध॒ती॒म् ।

य॒द्ध्रु॒व॒ता॒ꣳ ह॒ नि॒न्युः॑ ष॒ट्कृ॒त्ति॒का॒ मु॒ख्य॒यो॒गं॑ व॒ह॒न्ती॒य-

म॒स्मा॒क॒मे॒ध॒त्व॒ष्ट॒मी ॥ 7

1.9.5 उपकारणसमापनयोः काण्डर्षीणामनन्तरं होमः

स॒द॒स॒स्प॒ति॒म॒द्भु॒तं॑ प्रि॒य॒मि॒न्द्र॒स्य॑ का॒म्य॒म् ।

स॒निं॑ मे॒धा॒म॒या॒सि॒ष॒म् ॥ 8

1.9.6. स्वयम् प्रज्वलितेऽग्नौ समिदाधानम्

उ॒द्दी॒प्य॒स्व जा॒त॒वे॒दोऽप॒घ्न॒न्नि॒र्ऋ॒तिं॑ म॒म ।

प॒शूꣳश्च॑ म॒ह्य॒मा॒व॒ह जी॒व॒न॒ञ्च॑ दि॒शो॑ दि॒श (द॒श) ॥ 9

मा नो॑ हि॒ꣳसी॒ज्जा॒त॒वे॒दो गाम॑श्चं पु॒रु॒षं॑ ज॒गत् । अ॒बि॒भ्र॒द॒ग्न आ॒ग॒हि

श्रि॒या मा॑ परि॒पा॒तय ॥ 10 (ध्रु॒व॒तः॑ स्ति॒तं॑ न॒व च) (K9) (19)

## 1.10 विवाहे दाण्डोत्थापन मन्त्राद्यः

### 1.10.1. दाण्डोत्थापन मन्त्रौ

उ॒दी॒र्ष्वा॒तो॒ वि॒श्वा॒व॒सो॒ नम॑से॒डाम॑हे त्वा ।

अ॒न्यामि॑च्छ प्र॒फ॒र्व्यं॑ स॒ञ्जा॒यां प॒त्या सृ॑ज ॥ 1

उ॒दी॒र्ष्वा॒तः प॒ति॒व॒ती ह्ये॒षा वि॒श्वा॒व॒सुं नम॑सा गी॒र्भिरी॑ ॥

अ॒न्यामि॑च्छ पि॒तृष॑दं व्य॒क्तां॑ स ते भा॒गो ज॒नुषा॑ तस्य वि॒द्धि ॥ 2

### 1.10.2 चतुर्थी होमः

अ॒ग्ने प्रा॑यश्चित्ते त्वं दे॒वानां॑ प्रा॑यश्चित्ति॒रसि॑ ब्रा॒ह्म॒णस्त्वा ना॒थका॑मः

प्र॒प॒द्ये या॑ऽस्यां प॒ति॒घ्नी त॒नूः प्र॒जा॒घ्नी प॒शु॒घ्नी लक्ष्मि॑घ्नी

जा॒र॒घ्नीम॑स्यै तां कृ॒णोमि॑ स्वाहा ॥ 3

वा॒यो प्रा॑यश्चित्ते 4 \*, आ॒दि॒त्य प्रा॑यश्चित्ते 5 \*,

प्र॒जा॒प॒ते प्रा॑यश्चित्ते त्वं दे॒वानां॑ प्रा॑यश्चित्ति॒रसि॑ ब्रा॒ह्म॒णस्त्वा ना॒थका॑मः

प्र॒प॒द्ये या॑ऽस्यां प॒ति॒घ्नी त॒नूः प्र॒जा॒घ्नी प॒शु॒घ्नी लक्ष्मि॑घ्नी

जा॒र॒घ्नीम॑स्यै तां कृ॒णोमि॑ स्वाहा ॥ 6

अनुषङ्गः from 4 to 5

वा॒यो प्रा॒यश्चि॒त्ते त्वं दे॒वानां प्रा॒यश्चि॒त्तिर॒सि ब्रा॒ह्मण॒स्त्वा ना॒थका॒मः  
 प्र॒पद्ये या॒ऽस्यां प॒ति॒घ्नी त॒नूः प्र॒जा॒घ्नी प॒शु॒घ्नी ल॒क्ष्मि॒घ्नी  
 जा॒र॒घ्नीम॒स्यैतां कृ॒णोमि स्वाहा ॥ 4

आ॒दि॒त्य प्रा॒यश्चि॒त्ते त्वं दे॒वानां प्रा॒यश्चि॒त्तिर॒सि ब्रा॒ह्मण॒स्त्वा ना॒थका॒मः  
 प्र॒पद्ये या॒ऽस्यां प॒ति॒घ्नी त॒नूः प्र॒जा॒घ्नी प॒शु॒घ्नी ल॒क्ष्मि॒घ्नी  
 जा॒र॒घ्नीम॒स्यैतां कृ॒णोमि स्वाहा ॥ 5

प्र॒स॒वश्चो॒पया॒मश्च का॒टश्चा॒र्णव॒श्च ध॒र्ण॒सिश्च द्र॒वि॒णं च भ॒गश्चा॒न्तरि॒क्षं च  
 सि॒न्धुश्च स॒मु॒द्रश्च सर॒स्वाञ्च वि॒श्वव्य॒चाश्च ते यं द्वि॒ष्मो यश्च नो द्वेष्टि  
 तमे॒षां ज॒म्भे द॒ध्मः स्वाहा ॥ 7

म॒धुश्च मा॒ध॒वश्च शु॒क्रश्च शु॒चिश्च न॒भश्च न॒भ॒स्यश्चो॒षश्चो॒र्जश्च स॒हश्च  
 स॒ह॒स्यश्च त॒पश्च त॒प॒स्यश्च ते यं द्वि॒ष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमे॒षां ज॒म्भे  
 द॒ध्मः स्वाहा ॥ 8

चि॒त्तञ्च॒ चि॒त्ति॒श्चा॒कू॒तं॒ चा॒कू॒ति॒श्चा॒धी॒तं॒ चा॒धी॒ति॒श्च॒ वि॒ज्ञा॒तं॒ च॒ वि॒ज्ञा॒नं॒  
च॒ ना॒म॒ च॒ क्र॒तु॒श्च॒ द॒र्श॒श्च॒ पू॒र्ण॒मा॒स॒श्च॒ ते॒ यं॒ द्वि॒ष्मो॒ य॒श्च॒ नो॒ द्वेष्टि॒  
त॒मे॒षां॒ ज॒म्भे॒ द॒ध्मः॒ स्वाहा॑ ॥ 9

भू॒स्स्वा॒हा॒ भु॒व॒स्स्वा॒हा॒ सु॒व॒स्स्वा॒हो॒ स्वाहा॑ ( ) ॥ 10

(उ॒दी॒र्ष्वा॒तो॒ द॒र्श॑) (K10) (10)

### 1.11 विवाहे वधवरयोरन्योन्य समीक्षणाद्यः

#### 1.11.1. वधवरयोरन्योन्यं समीक्षणं

अ॒प॒श्यं॒ त्वा॒ म॒न॒सा॒ चे॒कि॒तानं॒ त॒प॒सो॒ जा॒तं॒ त॒प॒सो॒ वि॒भू॒तम् ।  
इ॒ह॒ प्र॒जा॒मि॒ह॒ र॒यि॒ र॒रा॒णः॒ प्र॒जा॒य॒स्व॒ प्र॒ज॒या॒ पु॒त्र॒का॒म ॥ 1

अ॒प॒श्यं॒ त्वा॒ म॒न॒सा॒ दी॒ध्या॒ना॒ स्वा॒यां॒ त॒नू॒ ऋ॒त्वि॒ये॒ ना॒थ॒मा॒ना॒म् ।  
उ॒प॒ मा॒मु॒च्चा॒ यु॒व॒ति॒र् बु॒भू॒याः॒ प्र॒जा॒य॒स्व॒ प्र॒ज॒या॒ पु॒त्र॒का॒मे ॥ 2

#### 1.11.2. आज्यशेषेण हृदयदेशे समञ्जनम्

स॒म॒ञ्ज॒न्तु॒ वि॒श्वे॒ दे॒वाः॒ स॒मा॒पो॒ हृ॒द॒या॒नि॒ नौ ।  
सं॒ मा॒त॒रि॒श्वा॒ सं॒ धा॒ता॒ स॒मु॒ दे॒ष्ट्री॒ दि॒दे॒ष्टु॒ नौ ॥ 3

1.11.3 समञ्जने जपः

प्र॒जा॒प॒ते त॒न्वं मे जु॒षस्व त्वष्ट॑र् दे॒वेभिः॑ स॒हसाम॑ इन्द्र ।

वि॒श्वैर् दे॒वै रा॒तिभिः॑ स॒र्राणः॑ पु॒सां ब॒हूनां॑ मा॒तरः॑ स्याम ॥ 4

आ नः॑ प्र॒जां ज॒नय॑तु प्र॒जाप॑तिराज॒रसाय॑ स॒मन॑क्त्व॒र्यमा॑ ।

अ॒दुर्म॑ङ्ग॒लीः प॒तिलो॑क-मा॒विश॑ श॒न्नो भव॑ द्वि॒पदे॑ शं चतु॑ष्पदे ( ) ॥ 5

तां पू॒षञ्छि॑वत॒मा-मे॒रय॑स्व यस्यां बी॒जं म॒नुष्या॑ व॒पन्ति॑ ।

या न ऊ॒रू उ॒शती॑ वि॒स्रया॑तै यस्यामु॒शन्तः॑ प्र॒हरे॑म शे॒फम् ॥ 6

(शं चतु॑ष्पदे द्वे च ) (K11) (12)

1.12 विवाहे समावेशन जपः

1.12.1.समावेशनकाले जपः

आ॒रो॒हो॒रु-मु॒पब॑र्हस्व बा॒हुं प॒रिष्व॑जस्व जा॒या सु॑म॒नस्य॑मानः ।

तस्यां पु॒ष्यतं॑ मि॒थुनौ॑ स॒योनी॑ ब॒ह्वीं प्र॒जां ज॒नय॑न्तौ स॒रेत॑सा ॥ 1

आ॒र्द्रया॑ऽर॒ण्या य॒त्राम॑न्थत्-पु॒रुषं॑ पु॒रुषे॑ण श॒क्रः ।

तदे॒तौ मि॒थुनौ॑ स॒योनी॑ प्र॒जया॑ऽमृ॒तेने॑ह ग॒च्छत॑म् ॥ 2

अ॒हं ग॒र्भ॒म॒द॒धा-मोष॑धी॒ष्वहं॑ वि॒श्वे॒षु भुव॑ने॒ष्वन्तः॑ ।

अ॒हं प्र॒जा अ॒जन॑यं पि॒तृ॒णाम॒हं ज॒नि॒भ्यो अ॒परी॑षु पु॒त्रान् ॥ 3

पु॒त्रि॒णे॒मा कु॑मा॒रि॒णा वि॒श्वमा॑युर् व्य॒श्नु॒तम् ।

उ॒भा हि॒र॒ण्यपे॑श॒सा वी॒ति॒हो॒त्रा कृ॒तद्-व॑सू ॥ 4

द॒श॒स्यं त्वा॒ऽमृ॒ताय॑ क॒ञ् श॒मू॒धो रो॒म॒श॒ञ् ह॒थो दे॒वेषु॑ कृ॒णु॒तो  
दु॒वः ॥ 5 (आ॒रो॒ह न॒व) (K12) (9)

(विवाहमन्त्राः समाप्तः)

### 1.13 गर्भधाने ऋतुसमावेशः

#### 1.13.1. ऋतुसमावेशनकाले भार्याया अभिमन्त्रणं

वि॒ष्णुर् यो॒निं क॑ल्पयतु त्व॒ष्टा रू॒पाणि॑ पि॒ञ्शतु॑ ।

आ॒सि॒ञ्चतु॑ प्र॒जाप॑तिर् धा॒ता गर्भं॑ दधातु ते ॥ 1

गर्भं॑ धेहि सिनी॒वालि॑ गर्भं॑ धेहि सर॒स्वति॑ ।

गर्भ॑न्ते अ॒श्विनौ॑ दे॒वावा॑ध॒त्तां पु॒ष्कर॑स्रजा ॥ 2



हिरण्ययी॑ अरणी॑ यं निर्मन्थ॑तो अ॒श्विना॑ ॥

तन्ते॑ गर्भ॑ हवामहे दश॑मे मा॒सि सू॒तवे ॥ 3

यथेयं॑ पृथि॒वी म॒ही तिष्ठ॑न्ती गर्भ॑मादधे ।

ए॒वं त्वं गर्भ॑माध॒थस्व दश॑मे मा॒सि सू॒तवे ॥ 4

यथा॑ पृथि॒व्यग्नि॑गर्भा द्यौर्यथे॑न्द्रेण गर्भि॑णी ।

वा॒युर्यथा॑ दि॒शां गर्भ॑ ए॒वं गर्भं॑ दधामि ते ( ) ॥ 5

विष्णो॑ श्रेष्ठे॑न रू॒पेणा॒स्यां ना॒र्या ग॒वीन्या॑म् ।

पुमा॑सं गर्भ॑माधेहि दश॑मे मा॒सि सू॒तवे ॥ 6

नेज॑मेष॒ परा॑पत॒ सुपु॑त्रः पुनरा॑पत ।

अ॒स्यै मे पु॒त्रका॑मायै गर्भ॑माधेहि यः पु॒मान् ॥ 7

व्यस्य॑ योनिं॒ प्रति॑ रेतो॑ गृहाण॒ पुमान् पु॒त्रो धी॑यतां गर्भो॑ अ॒न्तः ।

तं मा॒ता दश॑मासो बिभर्तु॑ स जा॒यतां वी॑रत॒मः स्वाना॑म् ॥ 8

आ ते गर्भो योनिमेतु पुमान्बाण इवेषुधिम् ।

आ वीरो जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः ॥ 9 (13)

(गर्भं दधामि तेऽष्टौ च) (K13) (18)

---

### 1.14 ऋतुसमावेशनकाले भार्याया अभिमन्त्रणं

#### 1.14.1. ऋतुसमावेशनकाले भार्याया अभिमन्त्रणं

करोमि ते प्राजापत्यमा गर्भो योनिमेतु ते ।

अनूनः पूर्णो जायता-मश्लोणो-ऽपिशाचधीतः ॥ 1

पुमांस्ते पुत्रो नारि तं पुमाननुजायताम् ।

तानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्तु नौ ॥ 2

यानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्ति नः ।

तैस्त्वं पुत्रान्. विन्दस्व सा प्रसूर्धेनुका भव ॥ 3

काम प्रमृद्ध्यतां मह्यमपराजितमेव मे ।

यं कामं कामये देव तं मे वायो समर्द्धय ॥ 4

(गर्भधाने ऋतुसमावेश मन्त्राः समाप्तः)

1.14.2. अर्थप्राध्वस्य परिक्षवपरिकासने जपः

अनु॒ह॒वं॑ परि॒ह॒वं॑ परि॒वा॒दं॑ परि॒क्ष॒प॒म् ।

दुःस्व॒प्नं॑ दु॒रु॒दि॒तं॑ तद्-द्वि॒षद्भ्यो॑ दि॒शा॒म्य॒ह॒म् ( ) ॥ 5

अनु॒हू॒तं॑ परि॒हू॒त॑ श॒कु॒ने॒र्-यद॑शाकु॒न॒म् ।

मृ॒ग॒स्य॑ सृ॒त॒म॒क्ष॒ण॒या॒ तद्-द्वि॒षद्भ्यो॑ दि॒शा॒म्य॒ह॒म् ॥ 6

1.14.3 चित्रियस्य वनस्पतेरभिमन्त्रणम्

आ॒रा॒त्ते॑ अ॒ग्नि॒र॒स्त्वा॒रा॒त्-पर॑शु॒र॒स्तु॑ ते । नि॒वा॒ते॑ त्वा॒ऽभि॑ व॒र्ष॒तु॑

स्व॒स्ति॑ ते॒ऽस्तु॑ वनस्प॒ते॑ स्व॒स्ति॑ मे॒ऽस्तु॑ वनस्प॒ते॑ ॥ 7

1.14.4 शकृद्वितेरुपस्थानम्

नमः॑ श॒कृ॒त्स॒दे॑ रु॒द्रा॒य॒ नमो॑ रु॒द्रा॒य॒ श॒कृ॒त्स॒दे॑ ।

गो॒ष्ठ॒म॒सि॑ नम॒स्ते॑ अस्तु॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः॑ [ ] 8

1.14.5. सिग्वातस्याभिमन्त्रणम्

सि॒ग॒सि॑ न॒सि॑ वज्रो॒ नम॒स्ते॑ अस्तु॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः॑ ॥ 9

1.14.6. शकुनेरभिमन्त्रणम्

उद्गा॒ते॒व॒ श॒कु॒ने॒ सा॒म॒ गा॒य॒सि॒ ब्र॒ह्म॒पु॒त्र॒ इ॒व॒ स॒व॒ने॒षु॒ श॒ꣳस॒सि॒ ।

स्व॒स्ति॒ नः॒ श॒कु॒ने॒ अ॒स्तु॒ प्र॒ति॒ नः॒ सु॒म॒ना॒ भ॒व ॥ 10

(अ॒ह॒म॒ष्टौ॒ च) (K14) (18)

1.15 दम्पत्योर्-हृदयविश्लेषे हृदय-संसर्गेप्सोर्-होमः

1.15.1 दम्पत्योर्-हृदयविश्लेषे हृदय-संसर्गेप्सोर्-होमः

प्रा॒त॒र॒ग्निं॑ प्रा॒त॒रि॒न्द्रꣳ ह॒वा॒म॒हे प्रा॒त॒र् मि॒त्रा॒व॒रु॒णा प्रा॒त॒र॒श्चि॒ना ॥

प्रा॒त॒र् भ॒गं पू॒ष॒णं ब्र॒ह्म॒ण॒स्प॒तिं प्रा॒तः॑ सो॒म॒मु॒त रु॒द्रꣳ हु॒वे॒म ॥ 1

प्रा॒त॒र्जि॒तं भ॒ग॒मु॒ग्रꣳ हु॒वे॒म व॒यं पु॒त्र॒म॒दि॒ते॒र्यो वि॒ध॒र्ता ।

आ॒ध्रश्चि॒द्यं म॒न्य॒मा॒न॒स्तु॒रश्चि॒द्रा॒जा चि॒द्यं भ॒गं भ॒क्षी॒त्याह॑ ॥ 2

भ॒ग प्र॒णो॒त॒र् भ॒ग स॒त्य॒रा॒धो भ॒गे॒मां धि॒य॒मु॒द॒व द॒द॒न्नः॑ ।

भ॒ग प्र॒णो॒ जन॒य गो॒भि॒र॒श्वैर् भ॒ग प्र॒नृ॒भिर् नृ॒व॒न्तः॑ स्या॒म ॥ 3

उ॒ते॒दा॒नीं भ॒ग॒व॒न्तः॑ स्या॒मो॒त प्र॒पि॒त्व उ॒त म॒ध्ये अ॒ह्ना॒म् ॥

उ॒तो॒दि॒ता म॒घ॒व॒न्थ् सूर्य॑स्य व॒यं दे॒वा॒नाꣳ सु॒म॒तौ स्या॒म ॥ 4

भ॒ग ए॒व भ॒गवा॑ अ॒स्तु दे॒वास्ते॒न व॒यं भ॒गव॑न्तः स्या॒म ।

तं त्वा॑ भ॒ग स॒र्व इ॒ज्जो॑हवीमि॒ स नो॑ भ॒ग पु॒र ए॒ता भ॑वे॒ह ( ) ॥ 5

स॒म॒ध्व॒रायो॒षसो॑ ऽन॒मन्त॑ द॒धिक्रा॑वे॒व शु॒चये॑ प॒दाय॑ ।

अ॒र्वा॒ची॒नं व॑सु॒विदं॑ भ॒गन्नो॑ रथ॒मिवा॑श्वा॒ वा॒जिन॑ आव॒हन्तु॑ ॥ 6

अ॒श्वा॒वती॑र् गो॒मती॑र् न उ॒षासो॑ वी॒रव॑तीः स॒दमु॑च्छन्तु भ॒द्राः ।

घृ॒तं दु॒हाना॑ वि॒श्वत॑ प्र॒पी॒ना यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॑ स॒दा नः॑ ॥ 7

(भ॒वे॒ह च॒त्वारि॑ च) (K15) (14)

## 1.16 पत्युर्वशीकरणं कर्म

### 1.16.1. पत्युर्वशीकरणं कर्म

इ॒मां ख॒नाम्यो॑ष॒धीं वी॑रु॒धं ब॒लव॑त्त॒माम् ।

यया॑ स॒पत्नीं॑ बा॒धते॑ यया॑ स॒म्वि॑न्द॒ते प॒तिम् ॥ 1

उ॒त्ता॒नप॑र्णे सु॒भगे॑ स॒हमा॑ने स॒हस्व॑ति ।

स॒पत्नीं॑ मे॒ प॒राध॑म॒ पतिं॑ मे॒ के॒वलं॑ कृ॒धि ॥ 2

---

उ॒त्तरा॑ऽहमु॒त्तर॑ उ॒त्तरे॑दु॒त्तरा॑भ्यः ।

अ॒था स॒प॒त्नी॒ या म॑मा॒धरा॑ साऽध॒राभ्यः॑ ॥ 3

न ह्य॑स्यै॒ नाम॑ गृ॒भ्णामि॑ नो अ॒स्मिन् र॑म॒ते ज॒ने॑ ।

प॒रा॒मे॒व प॒रा॒वत॑ꣳ स॒प॒त्नीं॑ नाशयाम॑सि ॥ 4

अ॒हम॑स्मि॒ सह॑मा॒नाऽथ॑ त्वम॑सि सास॒हिः ।

उ॒भे स॒ह॒स्वती॑ भू॒त्वा स॒प॒त्नीं॑ मे स॒हाव॑है ( ) ॥ 5

उ॒प ते॑ऽधाꣳ स॒ह॒मा॒नाम॑भि॒ त्वा॑ऽधाꣳ स॒ही॒यसा॑ ।

मा॒मनु॑ प्र ते॒ मनो॑ व॒थ्सं॑ गौ॒रिव॑ धावतु प॒था वा॒रिव॑ धावतु ॥ 6

(स॒हा॒व॒है द्वे॑ च) (K16) (12)

---

## 1.17 सपत्नीबाधनं कर्म

### 1.17.1. सपत्नीबाधनं कर्म

उदसौ॑ सूर्यो॑ अगा॒दुदयं॑ मा॒मको॑ भगः ।

अ॒हं तद्-वि॒द्वला॑ पति॒मभ्यसा॑क्षि विषा॒सहिः॑ ॥ 1

अ॒हं के॒तुर॒हं मूर्धा॑ऽहमु॒ग्रा वि॒वाच॑नी ।

ममे॒दनु॑ क्र॒तुं पतिः॑ से॒हाना॑या उ॒वाच॑रेत् ॥ 2

मम॑ पु॒त्राः श॒त्रुह॑णोऽथो॑ मे दुहि॒ता वि॒राट् ।

उ॒ताह॑मस्मि॒ सञ्ज॑या प॒त्युर्मे॑ श्लो॒क उत्त॑मः ॥ 3

येनेन्द्रो॑ ह॒विषा॑ कृ॒त्यभ॑वद्-दि॒व्युत्त॑मः ।

अ॒हं तद॑क्रि दे॒वा अस॑प॒त्ना कि॒लाभ॑वम् ॥ 4

अ॒स॒प॒त्ना स॑प॒त्निघ्नी॑ जय॒न्त्यभि॑भू॒वरी॑ (भू॒वरीः) ।

आ॒वि॒त्सि॒ सर्वा॑सा॒ञ् रा॒धो वर्चो॑ अ॒स्थेय॑सामि॒व ( ) ॥ 5

स॒म॒जै॒ष॒मि॒मा अ॒ह॒ꣳ स॒प॒त्नी॒र॒भि॒भू॒वरीः ।

य॒थाऽह॒म॒स्य वी॒र॒स्य वि॒रा॒जामि॒ धन॒स्य च ॥ 6

(अ॒स्थे॒य॒सा॒मि॒व द्वे च) (K17) (12)

## 1.18 वध्वाः यक्ष्मादिहरं कर्म

### 1.18.1 वध्वाः यक्ष्मादिहरं कर्म

अ॒क्षी॒भ्यान्ते॒ ना॒सि॒का॒भ्यां क॒र्णा॒भ्यां चु॒बु॒का॒दधि॑ ।

य॒क्ष्मꣳ शी॒र्ष॒ण्यं म॒स्ति॒ष्का॒ज्जि॒ह्वा॒या वि॒वृ॒हामि॑ ते ॥ 1

ग्री॒वा॒भ्य॒स्त उ॒ष्णि॒हा॒भ्यः की॒क॒सा॒भ्योऽनू॒क्यात् ।

य॒क्ष्मं दो॒ष॒ण्यम॒ꣳसा॒भ्यां बा॒हु॒भ्यां वि॒वृ॒हामि॑ ते ॥ 2

आ॒न्त्रे॒भ्य॒स्ते गु॒दा॒भ्यो व॒नि॒ष्ठोर् हृ॒द॒या॒दधि॑ ।

य॒क्ष्मं म॒त॒स्ना॒भ्यां य॒क्नः प्ला॒शि॒भ्यो वि॒वृ॒हामि॑ ते ॥ 3

ऊ॒रु॒भ्यां ते॒ऽष्ठी॒व॒द्भ्यां जङ्घा॒भ्यां प्र॒प॒दा॒भ्याम् ।

य॒क्ष्मꣳ श्रो॒णी॒भ्यां भा॒स॒दा॒ध्वꣳस॒सो वि॒वृ॒हामि॑ ते ॥ 4



मे॒हनाद्-व॒लङ्क॑रणा-ल्लो॒मभ्य॑स्ते न॒खेभ्यः॑ ।

यक्ष्म॑ꣳ सर्व॑स्मादात्म॒नस्त॑मिमंँ वि॒वृहा॑मि ते ( ) ॥ 5

अ॒ङ्गाद॑ङ्गा-ल्लो॒म्नो॒लो॒म्नो जा॒तं प॑र्वणिप॒र्वणि ।

यक्ष्म॑ꣳ सर्व॑स्मादात्म॒नस्त॑मिमंँ वि॒वृहा॑मि ते ॥ 6

परा॑देहि शा॒बल्यं॑ ब्र॒ह्मभ्यो॑ वि॒भजा॑ वसु ।

कृ॒त्यैषा प॒द्वती॑ भू॒त्वा जा॒याऽऽवि॑शते पति॒म् ॥ 7

अ॒श्ली॒ला त॒नूर्भ॑वति (त॒नूर्भ॑व) रु॒शती॑ पा॒पयाऽमु॑या ।

पति॑र्-यद्-व॒द्ध्वै वा॒ससा॑ स्वम॒ङ्गम॑भि धि॒त्सति॑ ॥ 8

क्रू॒रमे॒तत् क॑टुक-मे॒तदपा॑ष्ठवद्-वि॒षव॒न्नैत॑दत्तवे ।

सू॒र्याँ यः॑ प्र॒त्यक्षं॑ वि॒द्याथ्स॑ ए॒तत् प्र॑तिगृ॒ह्णीया॑त् ॥ 9

आ॒शस॑नंँ वि॒शस॑नमथो॒ अधि॑ वि॒चर्त॑नम् ।

सू॒र्यायाः॑ पश्य॒ रूपा॑णि॒ तानि॑ ब्र॒ह्मो॒त श॑ꣳसति ( ) ॥ 10

( इ॒मंँ वि॒वृहा॑मि ते - श॑ꣳसति ) (K18) (20)

**Special Korvai for 1.18**

(अ॒क्षी॒भ्यां॑ ग्री॒वाभ्य॑ आ॒न्त्रेभ्य॑ ऊ॒रुभ्यां॑ मे॒हना॑द॒ङ्गाद॒ङ्गात्  
परो॑दे॒हि स॒प्त)

**Prapaataka Korvai with starting Padams of 1 to 18 Khandaas**

(प्र॒सु॒ग॒म॒न्ता॑ ऽष्टा॒द॒श – हि॒र॒ण्य॒व॒र्णाः॑ प॒ञ्च॒द॒श – सोमः॑ प्र॒थमः॑ षोड॒श  
– सो॒माय॑ ज॒नि॒वि॒दे ऽष्टा॒द॒शा – ति॒ष्ठेयं॑ त्रयो॒वि॒ंश॒तिः –  
स॒त्येन॑ – ता म॒न्द॒सा नै॒का॒न्न॒वि॒ंश॒ति रे॒का॒न्न॒वि॒ंश॒तिः – शर्म  
व॒र्मे॒क॒वि॒ंश॒ति- रि॒ह गा॒व ए॒का॒न्न॒वि॒ंश॒ति – रु॒दी॒ष्व॒र्तो द॒शा –  
प॒श्यन् त्वा॑ द्वा॒द॒शा – रो॒हो॒रुं न॒व – वि॒ष्णु॒र्यो॒निं – क॒रोमि॑ ते  
ऽष्टा॒द॒शा षा॒द॒श – प्रा॒तर॒ग्निं च॒तु॒र्द॒शे – मां ख॒ना – म्यु॒द॒सौ सू॒र्यो  
द्वा॒द॒श द्वा॒द॒शा – क्षी॒भ्यां॑ ते वि॒ंश॒ति र॒ष्टा॒द॒श )

**Korvai with starting Padams of 1, 11, Series of Khandaas :-**

(प्र॒सु॒ग॒म॒न्ता – ऽप॒श्यन् त्वा॑ ऽष्टा॒द॒श)

**First and Last Padam in EAK, 1st Prapaatakam :-**

(प्र॒सु॒ग्मन्ता॒ – तानि॑ ब्र॒ह्मो॒त श॒ऽसति॑ )

। हरिः॑ ओम् ।

एकाग्निकाण्डे प्रथम प्रपाठकः समाप्तः

**Ekaagni Kaandam Counts - 1st Prapaatakam**

	Vaakyams
Khanda 1	18
Khanda 2	15
Khanda 3	16
Khanda 4	18
Khanda 5	23
Khanda 6	19
Khanda 7	19
Khanda8	21
Khanda 9	19
Khanda 10	10
Khanda 11	12
Khanda 12	9
Khanda 13	18
Khanda 14	18
Khanda 15	14
Khanda 16	12
Khanda 17	12
Khanda - 18	20
Total →	293

## 2 कृष्णयजुर्वेदीय एकाग्निकाण्डः – द्वितीयः प्रपाठकः

### 2.1 उपनयनमन्त्राः

#### 2.1.1 क्षुर कर्म

उ॒ष्णेन॑ वा॒यवु॒दके॑ने॒ह्यदि॑तिः॒ केशा॑न् वपतु ॥ 1

आप॑ उ॒न्दन्तु॑ जी॒वसे॑ दी॒र्घायु॑त्वाय॒ वर्च॑से ।

ज्योक्च॑ सूर्यं॑ दृ॒शे ॥ 2

येना॑वप॒थ् सवि॑ता क्षु॒रेण॑ सोम॒स्य रा॒ज्ञो वरु॑णस्य वि॒द्वान् ।

तेन॑ ब्र॒ह्माणो॑ वप॒तेदम॑स्यायुष्मा॒न् जर॑दष्टि॒र् यथाऽस॑दय॒मसौ ॥ 3

येन॑ पू॒षा बृ॒हस्प॑ते॒रग्ने॑रिन्द्र॒स्य चा॒युषे॑ऽवपत् ।

तेना॑स्यायु॒षे वप॑ सौ॒श्लो॒क्याय॑ स्व॒स्तये॑ ॥ 4

येन॑ भू॒यश्च॑रा॒त्ययं॑ ज्योक्च॑ प॒श्याति॑ सूर्य॒म् ।

तेना॑स्यायु॒षे वप॑ सौ॒श्लो॒क्याय॑ स्व॒स्तये॑ ॥ 5

येन॑ पू॒षा बृ॒हस्प॑ते॒रग्ने॑रिन्द्र॒स्य चा॒युषे॑ऽवपत् ( ) ।

तेन॑ ते वपा॒म्यसा॑वायु॒षा वर्च॑सा॒ यथा॑ ज्यो॒ख्सु॒मना॑ अ॒साः ॥ 6

यत् क्षुरेण॑ म॒र्चय॑ता सु॒पेश॑सा व॒प्रा व॑प॒सि के॑शान् ।

शु॒न्धि शि॒रो मा॑ऽस्यायुः प्रमो॑षीः ॥ 7

उ॒प्त्वाय॑ के॒शान् व॑रुणस्य॒ राज्ञो॑ बृ॒हस्प॑तिः स॒विता सोमो॑ अ॒ग्निः ।

तेभ्यो॑ नि॒धानं॑ बहु॒धाऽन्व॑विन्द-न्नन्तरा॒ द्यावा॑पृथि॒वी अ॒पः सु॒वः ॥ 8

(आयु॑षेऽव॒पत्य॑ञ्च च) (K1) (15)

---

## 2.2 उपनयनमन्त्राः

### 2.2.1. समिदाधानम्

आयु॑र्दा दे॒व ज॒रसं॑ गृ॒णानो॑ घृ॒तप्र॑तीको घृ॒तपृ॑ष्ठो अ॒ग्ने ।

घृ॒तं पि॑बन्नमृ॒तं चा॒रु ग॒व्यं पि॒तेव॑ पु॒त्रं ज॒रसे॑ नयेमम् ॥ 1

### 2.2.2. अश्मास्तापनम्

आ॒ति॒ष्ठेम॑मश्मानमश्मे॒व त्व॑ स्थि॒रो भ॑व ।

अ॒भि॒ति॒ष्ठ पृ॑तन्यतः स॒हस्व॑ पृ॒तना॑यतः ॥ 2

### 2.2.3. वासः परिधानम्

रे॒वती॑स्त्वा व्य॒क्ष्णन् कृ॑त्तिकाश्चाकृ॒न्त॑स्त्वा ।

धि॒योऽव॑यन्नव॒ग्ना अ॑वृ॒ज्जन्थ॑-स॒हस्र॑मन्ता॒ अ॒भितो॑ अयच्छन् ॥ 3

दे॒वीर् दे॒वाय॑ परि॒धी स॒वित्रे॑ ।

म॒हत्त॒दा-सा॒मभ॒वन्-म॒ह॒त्वि॒नम् ॥ 4

या अ॒कृ॒न्त॒न्न॒व॒यन्॑. या अ॒त॒न्व॒त याश्च॑ दे॒वीर॒न्ता॒न॒भि॒तो-ऽद॒द॒न्त॑ ।

तास्त्वा॑ दे॒वीर्-ज॒र॒से स॒म्व्य॑य॒न्त्वायु॑ष्मा॒नि॒दं परि॑ध॒थ्स्व

वा॒सः ( ) ॥ 5

परि॑ध॒त्त ध॒त्त वा॒स॒सै॒नꣳ श॒तायु॑षं कृ॒णु॒त दी॒र्घ॒मायुः॑ ।

बृ॒ह॒स्प॒तिः प्रा॒यच्छ॑द्-वा॒स ए॒त॒थ्सो॒माय॑ रा॒ज्ञे परि॑धा॒त॒वा उ॑ ॥ 6

ज॒रां ग॒च्छा॒सि परि॑ध॒थ्स्व वा॒सो भ॒वा कृ॒ष्टी॒ना-म॒भि॒श॒स्ति॒पा॒वा ॥

श॒तं च॑ जी॒व श॒रदः॑ सु॒वर्चा॑ रा॒यश्च॑ पो॒ष॒मु॒प स॒म्व्य॑य॒स्व ॥ 7

प॒री॒दं वा॒सो अ॒धि॒धाः स्व॒स्त॒ये-ऽभू॑रा॒पी॒ना-म॒भि॒श॒स्ति॒पा॒वा ॥

श॒तं च॑ जी॒व श॒रदः॑ पु॒रू॒ची॒र्-व॒सू॒नि चा॒र्यो वि॑भ॒जा॒सि जी॒वन् ॥ 8

2.2.4. मौज्यजनि मन्त्राः

इ॒यं दु॒रु॒क्तात् परि॒बा॒ध॒मा॒ना श॒र्म व॒रू॒थं पु॒न॒ती न आ॒गात् ॥

प्रा॒णा॒पा॒नाभ्यां॑ ब॒ल॒मा॒भ॒र॒न्ती प्रि॒या दे॒वा॒नाꣳ सु॒भ॒गा मे॒ख॒ले॒यम् ॥ 9

ऋ॒त॒स्य गो॒प्त्री तप॑सः पर॒स्पी घ्न॑ती रक्षः स॒ह॒मा॒ना अ॒रा॒तीः । सा नः॑  
स॒म॒न्त॒म॒नु परी॑हि भ॒द्र॒या भ॒र्ता॒र॒स्ते मे॒ख॒ले मा रि॑षाम ( ) ॥ 10

मि॒त्र॒स्य चक्षु॑र्ध॒रु॒णं ब॒ली॒य॒स्ते॒जो यश॑स्वि स्थ॒वि॒रꣳ स॒मि॒द्धम् ।  
अ॒ना॒ह॒न॒स्यं व॑स॒नं ज॒रि॒ष्णु परी॑दं वा॒ज्य॒जि॒नं द॒धेऽह॑म् ॥ 11

( वा॒सो – म॒रि॒षाम॑ द्वे च ) (K2) (21)

## 2.3 उपनयनमन्त्राः

2.3.1. अग्रेरुत्तरतोऽवस्थापनम् प्रोक्षणम् हस्तग्रहणम् परिदानम्  
उपनयनम् कर्ण जपः प्रश्न-प्रतिवचनं च

आ॒गन्त्रा॑ सम॒गन्म॑हि प्र॒सु मृ॒त्युं यु॑योतन ।

अ॒रि॒ष्टाः सञ्च॑रेमहि स्व॒स्ति च॑रतादिह स्व॒स्त्या गृ॑हेभ्यः ॥ 1

स॒मु॒द्रादू॒र्मिर् म॑धुमा॒ञ् उ॒दारदु॑पा॒ञ् शु॒ना सम॑मृतत्वमश्याम् ।

इ॒मे नु॑ ते र॒श्मयः॑ सूर्य॑स्य येभिः स॒पित्वं॑ पि॒तरो॑ न आयन् ॥ 2

अ॒ग्नि॒ष्टे ह॑स्तमग्रभी॒त् 3, सोम॑स्ते ह॑स्तमग्रभी॒त् 4 ,

स॒वि॒ता ते॑ ह॑स्तमग्रभी॒त् 5, सर॑स्वती ते॑ ह॑स्तमग्रभी॒त् 6,

पू॒षा ते॑ ह॑स्तमग्रभी 7, द॒र्य॒मा ते॑ ह॑स्तमग्रभी 8,

द॒ञ् शु॒स्ते ह॑स्तमग्रभी॒द् 9, भ॒गस्ते॑ ह॑स्तमग्रभीन् 10.

मि॒त्रस्ते॑ ह॑स्तमग्रभीन् 11, मि॒त्रस्त्व॑मसि ध॒र्म॒णाऽग्नि॑रा॒चार्य॑स्तव ॥ 12

अ॒ग्नयै॑ त्वा परि॑ददाम्यसौ 13, सोमा॑य त्वा परि॑ददाम्यसौ 14,

स॒वि॒त्रे त्वा॑ परि॑ददाम्यसौ 15, सर॑स्वत्यै त्वा परि॑ददाम्यसौ 16.

मृ॒त्यवै॑ त्वा परि॑ददाम्यसौ 17. य॒माय॑ त्वा परि॑ददाम्यसौ 18.



गदा॑य त्वा परि॑ददाम्यसा 19, वन्त॑काय त्वा परि॑ददाम्यसा 20,  
वद्भ्य॑स्त्वा परि॑ददाम्यसा 21, वोष॑धीभ्यस्त्वा परि॑ददाम्यसौ 22,  
पृथि॑व्यै त्वा सवै॑श्चानरा॒यै परि॑ददाम्यसौ ॥ 23

देव॑स्य त्वा सवि॑तुः प्र॒सव॑ उप॒नये॑ऽसौ ॥ 24

सुप्र॑जाः प्र॒जया॑ भूयाः सु॒वीरो॑ वी॒रैः सु॒वर्चा॑ वर्च॒सा सु॒पोषः॑ पोषैः॥ 25

ब्र॒ह्मच॑र्यमा॒गामु॒प मा न॑यस्व दे॒वेन॑ सवि॒त्रा प्र॑सूतः ॥ 26

को ना॑मा॒स्यसौ॑ ना॒माऽस्मि॑ कस्य॑ ब्र॒ह्मचा॑र्यस्यसौ प्रा॒णस्य॑  
ब्र॒ह्मचा॑र्यस्म्यसा 27

वेष॑ ते दे॒व सूर्य॑ ब्र॒ह्मचा॑री तं गो॒पाय॑ स मा मृ॒तैष॑ ते सूर्य॑पु॒त्रः  
सुदी॑र्घा॒युः समा॑मृत ( ) । या॒ऽस्व॒स्तिम॒ग्निर् वा॒युः सूर्य॑श्चन्द्र॒मा  
आपो॑ऽनु स॒ञ्चर॑न्ति ता॒ऽस्व॒स्तिम॒नु सञ्च॑रासौ ॥ 28

अव॑द्ध्वनाम॒द्ध्वप॑ते श्रेष्ठ॒स्याद्ध्व॑नः पा॒रम॑शीय ॥ 29

(समा॑मृत द्वे च) (K3) (12)

## 2.4 उपनयनमन्त्राः

### 2.4.1.होम मन्त्राः

योगे॑योगे तव॑स्तर १{ }, मि॒म॒ग्न॑ आयु॑षे वर्च॑से कृ॒धी॒ति॒ द्वे २ { } ॥

Expansion for - योगे॑योगे तव॑स्तर १,

मि॒म॒ग्न॑ आयु॑षे वर्च॑से कृ॒धी॒ति॒ द्वे २

योगे॑योगे तव॑स्तरं वा॒जे॒वा॒जे ह॒वाम॑हे ।

स॒खाय॑ इन्द्र॑मू॒तये॑ ॥ १ (Ref - TS 4.1.2.1)

इ॒म॒ग्न॑ आयु॑षे वर्च॑से कृ॒धि प्रि॒यं रे॒तो वरु॑ण सोम॑ राजन् ।

मा ते॒वा॒स्मा अ॒दि॒ते शर्म॑ यच्छ॒ विश्वे॑ दे॒वा ज॒रद॑ष्टि॒र्यथा॑ऽसत् ॥ २

(Ref - TS 2.3.10.3)

श॒तमि॑न्नु श॒रदो॑ अ॒न्ति दे॒वा यत्रा॑ नश्च॒क्रा ज॒रसं॑ त॒नूना॑म् ।

पु॒त्रासो॑ यत्र पि॒तरो॑ भव॒न्ति मा नो॑ म॒द्ध्य॒ा री॒रिष॑तायुर् गन्तोः॑ ॥ ३

अ॒ग्नि॒ष्ट आयुः॑ प्र॒तरां॑ द॒धात्व॑ग्नि॒ष्टे पु॒ष्टिं प्र॒तरां॑ कृ॒णोतु॑ ।

इन्द्रो॑ म॒रुद्भिर्. ऋ॒तु॒धा कृ॒णो॒त्वादि॒त्यैस्ते॒ वसु॑भि॒राद॑धातु ॥ ४

मे॒धां॑ म॒ह्यम॑ङ्गि॒रसो॑ मे॒धाꣳ स॒प्तर॑ष्यो ददुः ।

मे॒धां॑ म॒ह्यं प्र॒जाप॑तिर् मे॒धाम॑ग्निर् ददातु मे ॥ 5

अ॒प्सर॑सु च या मे॒धा ग॑न्धर्वेषु च यद्य॑शः ।

दै॒वी या॑ मा॒नुषी॑ मे॒धा सा॑ मा॒मावि॑शतादिह ॥ 6

इ॒मं मे॑ वरुण॒7{ }, तत्त्वा॑ यामि॒ 8 { }, त्वन्नो॑ अग्ने॒ 9 { }.

स त्वन्नो॑ अग्ने॒ 10{ }, त्वम॑ग्ने अयासि॑ ( ) ॥ 11

**Expansion for – इ॒मं मे॑ वरुण॒ 7, तत्त्वा॑ यामि॒ 8 , त्वन्नो॑ अग्ने॒ 9 .**

**स त्वन्नो॑ अग्ने॒ 10, त्वम॑ग्ने अयासि॑ 11 .**

**(Same as given in EAK 1.7.4 )**

#### **2.4.2. कूर्चरोहणम्**

राष्ट्र॑भृदस्याचा॒र्यास॑न्दी मा त्वद्यो॑षम् ॥ 12

#### **2.4.3. सावित्री**

तथ् स॒वितु॑र्वरे॒ण्यमि॒त्येषा॑ { } ॥ 13

Expansion for – तथ॑ स॒वितुर्व॑रि॒ण्यं॑

तथ॑स॒वितुर्व॑रि॒ण्यं॑ भ॒र्गो दे॒वस्य॑ धीम॒हि ।

धि॒यो यो॒नः प्र॒चोद॑यात् । (Ref - TS 1.5.6.4)

2.4.4. ओष्ट॑कर्णोप॒स्पर्शनं॑

अवृ॑ध॒मसौ॑ सौ॒म्य प्रा॒ण स्वं॑ मे गोपा॒य ॥ 14

ब्र॒ह्मण॑ आ॒णी स्थः॑ ॥ 15

(त्वम॑ग्ने अ॒याऽसि॑ च॒त्वारि॑ च) (K4) (14)

-----

## 2.5 उपनयनमन्त्राः

### 2.5.1. दण्डादानम्

सु॒श्रवः॑ सु॒श्रव॑सं मा कुरु॒ यथा॒ त्व॑ सु॒श्रवः॑ सु॒श्रवा॑ अस्ये॒वम॑ह॒  
सु॒श्रवः॑ सु॒श्रवा॑ भूया॒सं यथा॒ त्व॑ सु॒श्रवो॑ (सु॒श्रवः॑ सु॒श्रवो॑) दे॒वानां॑  
नि॒धिगो॑पोऽस्ये॒वम॑हं ब्रा॒ह्मणा॑नां ब्र॒ह्मणो॑ नि॒धिगो॑पो भूया॒सम् ॥ 1

### 2.5.2. कुमारवाचनम् उत्थापनम् आदित्योपस्थानम् हस्तग्रहणम् च.

स्मृ॑तं च मेऽस्मृ॑तं च मे तन्म॑ उ॒भयं॑ व्र॒तं 2  
नि॒न्दा च मेऽनि॑न्दा च मे तन्म॑ उ॒भयं॑ व्र॒तः 3  
श्र॒द्धा च मेऽश्र॑द्धा च मे तन्म॑ उ॒भयं॑ व्र॒तं 4  
वि॒द्या च मेऽवि॑द्या च मे तन्म॑ उ॒भयं॑ व्र॒तः 5  
श्रु॑तं च मेऽश्रु॑तं च मे तन्म॑ उ॒भयं॑ व्र॒तः 6  
स॒त्यं च मेऽनृ॑तं च मे तन्म॑ उ॒भयं॑ व्र॒तं 7  
तप॑श्च मेऽतप॑श्च मे तन्म॑ उ॒भयं॑ व्र॒तं 8  
व्र॒तं च मेऽव्र॑तं च मे तन्म॑ उ॒भयं॑ व्र॒तं 9  
यद् ब्रा॒ह्मणा॑नां ब्र॒ह्मणि॑ व्र॒तम्,

यदग्नेः सेन्द्रस्य सप्रजापतिकस्य सदेवस्य सदेवराजस्य समनुष्यस्य  
समनुष्यराजस्य सपितृकस्य सपितृराजस्य सगन्धर्वाप्सरस्कस्य ।  
यन्म आत्मन आत्मनि व्रतं तेनाहं सर्वव्रतो भूयासम् ॥ 10

उदायुषा स्वायुषोदोषधीनां रसेनोत्-पर्जन्यस्य शुष्मेणोदस्था-  
ममृतां अनु ॥ 11

तच्चक्षुर्-देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।  
पश्येम शरदश्शतं जीवेम शरदश्शतं नन्दाम शरदश्शतं मोदाम  
शरदश्शतं भवाम शरदश्शतं शृण्वाम शरदश्शतं प्रब्रवाम  
शरदश्शतमजीताः स्याम शरदश्शतं ज्योक्च सूर्यं दृशे ॥ 12

यस्मिन् भूतं च भव्यं च सर्वे लोकाः समाहिताः ।  
तेन गृह्णामि त्वामहं मह्यं गृह्णामि त्वामहं प्रजापतिना त्वा मह्यं  
गृह्णाम्यसौ ॥ 13 (सुश्रवः सुश्रवसमष्टौ) (K5) (8)

## 2.6 उपनयनमन्त्राः

### 2.6.1 समिदाधानं

परि॑ त्वा॒ग्ने परि॑मृ॒जाम्या॑यु॒षा च॒ धने॑न च ।

सु॒प्र॒जाः प्र॒जया॑ भूयास॑ सु॒वीरो॑ वी॒रैः सु॒वर्चा॑ वर्च॒सा सु॒पोषः॑ पोषैः॑  
सु॒गृहो॑ गृ॒हैः सु॒पतिः॑ पत्या॑ सु॒मेधा॑ मे॒धया॑ सु॒ब्रह्मा॑ ब्रह्म॒चारि॑भिः ॥ 1

अ॒ग्नये॑ स॒मिध॒माहा॑र्षं बृ॒हते॑ जा॒तवे॑दसे॒ यथा॒ त्वम॑ग्ने स॒मिधा॑  
स॒मिद्ध्य॑स॒ एवं॑ मा॒मायु॑षा॒ वर्च॑सा स॒न्या मे॒धया॑ प्र॒जया॑ प॒शुभि॑र्  
ब्रह्म॒वर्च॑सेना॒न्नाद्ये॑न॒ समे॑धय॒ स्वाहा॑ ॥ 2

ए॒धो॑ऽस्ये॒धिषी॑महि॒ स्वाहा॑ ॥ 3

स॒मिद॑सि स॒मेधि॑षीमहि॒ स्वाहा॑ ॥ 4

तेजो॑ऽसि तेजो॑ मयि॒ धेहि॑ स्वाहा॑ ॥ 5

अपो॑ अ॒द्यान्व॑चा॒रिष॑ रसे॒न सम॑सृक्षमहि ।

पय॑स्वा॒ अग्न॑ आ॒गम॑न्तं मा स॒सृज॑ वर्च॒सा स्वाहा॑ ॥ 6

सं मा॑ग्ने॒ वर्च॑सा सृज॒ प्रजया॑ च॒ धने॑न च॒ स्वाहा॑ ॥ 7

वि॒द्युन्मे॑ अस्य॒ दे॒वा इन्द्रो॑ वि॒द्यात् स॒हर्षि॑भिः स्वाहा॑ ( ) ॥ 8

अ॒ग्नये॑ बृ॒हते॑ ना॒काय॑ स्वाहा॑ ॥ 9

द्या॒वापृ॑थि॒वीभ्या॑ स्वाहा॑ ॥ 10

ए॒षा ते॑ अ॒ग्ने स॒मि॒त्तया॑ वर्द्ध॑स्व चा॒प्याय॑स्व च॒ तया॑ऽहं वर्ध॑मानो  
भू॒यास॒माप्या॑य॒मानश्च॑ स्वाहा॑ ॥ 11

यो मा॑ऽग्ने भा॒गिन॑ स॒न्तम॑थाभा॒गं चि॒कीर्ष॑त्यभा॒गम॑ग्ने तं कुरु॑  
मा॒मग्ने॑ भा॒गिनं॑ कुरु॑ स्वाहा॑ ॥ 12

स॒मि॒धमा॑धा॒याग्ने॑ सर्व॑व्रतो भू॒यास॑ स्वाहा॑ ॥ 13

### 2.6.2 संशासनं वासस आदानं च.

ब्र॒ह्मचा॑र्यस्यपो॒ऽशान॑ कर्म॑ कुरु॑ मा सुषु॑प्थाः ।

भि॒क्षाच॑र्यं च॒राचा॑र्याधी॒नो भव॑ ॥ 14



यस्य ते प्रथमवास्य॑ ह॒राम॒स्तं त्वा विश्वे॑ अवन्तु दे॒वाः ।

तन्त्वा॑ भ्रा॒तरः सु॒वृ॒धो वर्ध॑मान॒मनु॑ जायन्तां ब॒हवः॑ सु॒जा॒तम् ॥ 15

(सह॑ ऋषि॑भिस्स्वाहा॑ नव॑ च ) (K6) (19)

(उपनयनमन्त्राः समाप्तः)

## 2.7 समावर्तनमन्त्राः

### 2.7.1. समिधादानं

इ॒म॒७ स्तो॒मम॒र्ह॒ते जा॒तवे॑द॒से रथ॑मि॒व संम॑हे॒मा म॒नी॒षया॑ ॥

भ॒द्रा हि नः॑ प्र॒मति॑रस्य स॒७स॒द्यग्ने॑ स॒ख्ये मा रि॑षामा व॒यं तव॑ ॥ 1

### 2.7.2. क्षुर कर्म

त्र्या॒युषं॑ ज॒मद॑ग्नेः क॒श्यप॑स्य त्र्या॒युषम् ।

यद्-दे॒वानां॑ त्र्या॒युषं॑ तन्मे॑ अस्तु त्र्या॒युषम् ॥ 2

शि॒वो ना॒मासि॑ स्व॒धिति॑स्ते पि॒ता नम॑स्ते अस्तु मा मा हि॒७सीः ॥ 3

उ॒ष्णेन॑ वा॒यवु॑द॒केने॒त्येषः॑ { } । (4 to 11)

Expansion for – उष्णेन वायवुदकेनेत्येषः

उष्णेन वायवुदकेनेह्यदितिः केशान् वपतु ॥ 4

आप उन्दन्तु जीवसे दीर्घायुत्वाय वर्चसे । ज्योक्च सूर्यं दृशे ॥ 5

येनावपथ् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान् ।  
तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्यायुष्मान् जरदष्टिर् यथाऽसदयमसौ ॥ 6

येन पूषा बृहस्पतेरग्नेरिन्द्रस्य चायुषेऽवपत् ।  
तेनास्यायुषे वप सौश्लोक्याय स्वस्तये ॥ 7

येन भूयश्चरात्ययं ज्योक्च पश्याति सूर्यम् ।  
तेनास्यायुषे वप सौश्लोक्याय स्वस्तये ॥ 8

येन पूषा बृहस्पतेरग्नेरिन्द्रस्य चायुषेऽवपत् ।  
तेन ते वपाम्यसावायुषा वर्चसा यथा ज्योख्सुमना असाः ॥ 9  
यत् क्षुरेण मर्चयता सुपेशसा वप्रा वपसि केशान् ।

शुन्धि शिरो माऽस्यायुः प्रमोषीः ॥ 10

उ॒प्त्वा॒य॒ के॒शा॒न् व॒रु॒णस्य॑ रा॒ज्ञो बृ॒ह॒स्प॒तिः॑ स॒वि॒ता सो॒मो अ॒ग्निः॑ ।  
ते॒भ्यो नि॒धानं॑ बहु॒धाऽन्व॑वि॒न्द-न्न॒न्तरा॑ द्या॒वापृ॑थि॒वी अ॒पः सु॒वः॑ ॥ 11

(Ref - EAK 2.1.1)

### 2.7.3. मेखलाया उपजूहनं

इ॒द॒म॒ह-म॒मु॒ष्या-मु॒ष्या॒य॒णस्य॑ पा॒प्मान॑-मु॒प॒गू॒हाम्यु॑त्त॒रोऽसौ॑  
द्वि॒षद्भ्यः॑ ॥ 12

### 2.7.4. स्नान मन्त्राः

आ॒पो हि॒ ष्ठा म॒यो॒भुव॑ इति॒ तिस्रो॑ { } 13 to 15,

Expansion for – आपो हि ष्ठा मयोभुव इति तिस्रः

आ॒पो हि॒ ष्ठा म॒यो॒भुव॑स्ता न ऊ॒र्जे द॒धात॑न ।

म॒हे र॒णाय॑ चक्ष॒से ॥ 13

यो वः॑ शि॒वत॑मो र॒सस्त॑स्य॒ भाज॑यते॒ह नः॑ । उ॒श॒ती॒रिव॑ मा॒तरः॑ ॥ 14

तस्मा॑ अ॒रं ग॒माम॑ वो यस्य॒ क्षया॑य जि॒न्वथ॑ ।

आ॒पो ज॒नय॑था च नः॑ ॥ 15 (Ref - TS 4.1.5.1)

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका इति तिस्रः { } ॥ 16-18

**Expansion for-हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका इति तिस्रः{ }॥ 16-18**

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः ।

अग्निं या गर्भं दधिरे विरूपास्ता न आपः श७ स्योना भवन्तु ॥ 16

यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यन् जनानां ।

मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः श७ स्योना भवन्तु ॥ 17

यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति । याः  
पृथिवीं पयसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपः श७ स्योना भवन्तु ॥ 18

(Ref - TS 5.6.1.1)

### 2.7.5. दन्तधावमम् वासः परिधानम् च.

अन्नाद्याय व्यूहद्ध्वं दीर्घायुरहमन्नादो भूयासम् । सोमो राजा  
ज्यमागमथ्स मे मुखं प्रवेक्ष्यति भगेन सह वर्चसा ( ) ॥ 19

सोमस्य तनूरसि तनुवं मे पाहि स्वा मा तनूराविश ॥ 20

2.7.6. देवताभ्यश्चन्दनप्रदानं.

नमो॑ ग्र॒हाय॑ चाभि॒ग्रहाय॑ च 21

नमः॑ शाक॒जं ज॒भाभ्याम्॑ 22

नमस्ताभ्यो॑ दे॒वता॑भ्यो॒ या अ॑भि॒ग्राहिणीः॑ ॥ 23

2.7.7. आत्मनोऽनुलेपः

अ॒प्सरः॒ सु॒ यो ग॒न्धो ग॒न्धर्वेषु॑ च॒ यद्य॑शः ।

दै॒वो यो मा॑नु॒षो ग॒न्धः स मा॑ ग॒न्धः सु॒रभिर् जु॑षताम् ॥ 24

2.7.8. उदपात्रे सौवर्णमणिपरिप्लावनम्

इ॒यमो॑ष॒धे त्रा॑यमाणा॒ सह॑माना॒ सह॑स्वती ।

सा मा॑ हि॒रण्य॑वर्च॒सं ब्र॑ह्मवर्च॒सिनं॑ मा करोतु ॥ 25

2.7.9. ग्रीवास्वाबन्धनम्

अपा॑शोऽस्यु॒रो मे॒ मा सञ् श॑रीः शि॒वो-मो॑ष तिष्ठ॒स्व दी॒र्घायु॑त्वाय॑

श॒तशार॑दाय । श॒तञ् श॒रद्भ्य॑ आ॒युषे॑ वर्च॒से जी॒वात्वै॑ पुण्याय ॥ 26

**2.7.10. वाससः परिधानम्**

रे॒वती॑स्त्वा व्य॒क्ष्णन्नि॒त्येताः { } ॥ 27 to 32

**Expansion for – रे॒वती॑स्त्वा व्य॒क्ष्णन्**

रे॒वती॑स्त्वा व्य॒क्ष्णन् कृ॒त्तिका॑श्चाकृ॒न्त॒ऽस्त्वा ।

धि॒योऽव॑यन्नव॒ग्ना अ॒वृ॒ज्जन्थ॑-स॒हस्र॑मन्ता॒ अ॒भितो॑ अयच्छन् ॥ 27

दे॒वीर् दे॒वाय॑ परि॒धी स॒वित्रे॑ । म॒हत्तदा॑-सा॒मभ॑वन्-म॒हित्व॒नम् ॥ 28

या अ॒कृ॒न्तन्न॑वयन्. या अ॒तन्व॑त याश्च दे॒वीरन्ता॑न॒भितो॑-ऽद॒दन्त॑ ।

तास्त्वा दे॒वीर्-ज॒रसे॑ सम्॒व्यय॑न्त्वायुष्मानि॒दं परि॑ध॒थ्स्व वा॒सः ॥ 29

परि॑धत्त ध॒त्त वा॒ससै॑न॒ श॒तायु॑षं कृ॒णु॑त दी॒र्घमा॑युः ।

बृ॒हस्प॑तिः प्रायच्छ॒द्-वा॒स ए॒तथ्सो॑माय॒ राज्ञे॑ परि॑धा॒तवा॑ उ ॥ 30

ज॒रां ग॑च्छा॒सि परि॑ध॒थ्स्व वा॒सो भ॑वा कृ॒ष्टीना॑-म॒भि॒शस्ति॑पा॒वा ॥

श॒तं च॑ जी॒व श॒रदः॑ सु॒वर्चा॑ रा॒यश्च॑ पोष॒मुप॑ सम्॒व्यय॑स्व ॥ 31

परीदं वा॒सो अधि॑धाः स्व॒स्तये-ऽभू॑रापी॒ना-म॒भि॒श॒स्ति॒पावा॑ ।  
श॒तं च॑ जी॒व श॒रदः॑ पु॒रू॒चीर्-व॒सूनि॑ चा॒र्यो वि॒भ॒जा॒सि जी॒वन् ॥ 32  
(Ref - EAK 2.2.4.)

(स॒ह वर्च॑सा॒ नव॑ च) (K7) (19)

## 2.8 समावर्तनमन्त्राः

### 2.8.1. होमः

आ॒यु॒ष्यं वा॒र्च॒स्य॑ सु॒वीर्य॑ रा॒य॒स्पोष॑-मौ॒दि॒भ॒द्यम् ।

इ॒दं हि॒र॒ण्यं जै॒त्र्या॒यावि॑श॒तां मा॒म् ॥ 1

उ॒च्चैर्वा॒दि पृ॒त॒ना॒जि स॒न्नासा॑हं ध॒नञ्ज॒यम् ।

स॒र्वाः स॒मृ॒द्धीर् ऋ॒द्धयो॑ हि॒र॒ण्येऽस्मि॑न्त् स॒माहि॑ताः ॥ 2

शु॒न॒म॒हं हि॒र॒ण्य॒स्य पि॒तुरि॑व॒ नामा॑ग्रभैषम् ।

तं मा॒ हि॒र॒ण्य॒वर्च॑सं पू॒रुषु॑ प्रि॒यं कुरु॑ ॥ 3

प्रि॒यं मा॒ दे॒वेषु॑ कुरु प्रि॒यं मा॒ ब्र॒ह्म॒णे कुरु॑ ।

प्रि॒यं वि॒श्येषु॑ शू॒द्रेषु॑ प्रि॒यं रा॒ज॒सु मा॒ कुरु॑ ॥ 4

या ति॒रश्ची॑ नि॒पद्य॑सेऽहं वि॒धर॑णी इति ।

तां त्वा घृ॒तस्य॑ धा॒रया॑ यजे स॒ञ्ज॑रधनीमहम् ( ) ॥ 5

स॒ञ्ज॑रधन्यै दे॒व्यै स्वाहा॑ ॥ 6, प्र॒साध॑न्यै दे॒व्यै स्वाहा॑ ॥ 7

स॒म्राजं॑ च वि॒राजं॑ चाभि॒श्रीर्या॑ च नो गृ॒हे ।

लक्ष्मी॑ रा॒ष्ट्रस्य॑ या मु॒खे तया॑ मा स॒ञ्ज॑रामसि ॥ 8

### 2.8.2. स्रग्बन्धनं

शु॒भिके॑ शि॒र आ रो॑ह शो॒भय॑न्ती मु॒खं मम॑ ।

मु॒खञ् हि मम॑ शो॒भय॑ भूया॒ञ्सं च॑ भगं कुरु ॥ 9

या॒माह॑रज्जमद॒ग्निः श्र॒द्धायै॑ का॒माया॑न्यै ।

इ॒मां ता॑मपि न ह्येऽहं भ॒गेन॑ स॒ह वर्च॑सा ॥ 10

### 2.8.3. आज्ञनमन्त्रः

यदा॒ञ्जनं॑ त्रै॒ककु॑दं जा॒तञ् हि॒मव॑त उ॒परि॑ ।

तेन॑ वा॒माञ्जे॑ तेज॒से वर्च॑से भ॒गाय॑ च ॥ 11

(स॒ञ्ज॑रधनीमहम् नव॑ च) (K8) (19)



## 2.9 समावर्तनमन्त्राः

### 2.9.1. आज्ञनमन्त्रः

मयि॑ पर्व॒तपू॒रुषं॑ १, मयि॑ पर्व॒तवर्च॑सं २, मयि॑ पर्व॒तभे॒षजं॑ ३,  
मयि॑ पर्व॒तायु॒षम् ॥ ४

### 2.9.2. अदर्शवेक्षण उपानद्ग्रहण दण्डादान् दिगुपस्थान नक्षत्रचन्द्रोपस्थानानि.

यन्मे॑ वर्चः॑ परा॒गत॑मा॒त्मान॑-मु॒पति॑ष्ठति ।

इ॒दं तत्पु॒नरा॑ददे दी॒र्घायु॑त्वाय॒ वर्च॑से ॥ ५

प्र॒ति॒ष्ठे स्थो॑ दे॒वता॑नां॒ मा मा॒ सन्ता॑प्तम् ॥ ६

प्र॒जाप॑तेः शरण॑मसि॒ ब्रह्म॑णः छ॒दिर्-वि॑श्व॒जन॑स्य छा॒याऽसि॑ सर्व॑तो॒ मा  
पा॒हि ॥ ७

दे॒वस्य॑ त्वा सवि॑तुः प्र॒सवे॑ऽश्विनो॑र् बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो ह॑स्ता॒भ्यामा॑ददे  
द्विष॑तो व॒धाये॑न्द्रस्य॒ वज्रो॑ऽसि॒ वार्त्र॑घ्नः शर्म॑ मे भव॒ यत्पा॑पं  
तन्नि॑वारय ॥ ८

दे॒वीः ष॒डुर्वी॑र् इत्ये॒षा । (९-१०) { }

Expansion for - देवीः षडुर्वीर् इत्येषा .

देवीः षडुर्वीरुरुणः कृणोत विश्वे देवास इह वीरयद्ध्वं ॥ 9

माहास्महि प्रजया मा तनूभिर्मा रधाम द्विषते सोम राजन् ॥ 10

Ref - –TS 4.7.14.2

समावर्तनमन्त्राः समाप्तः

-----

2.9.3. मधुपर्कमन्त्राः

राष्ट्र॑भृ॒दस्या-चा॒र्यास॒न्दी मा त्वद्यो॑षः ॥ 11

राष्ट्र॑भृ॒दसि स॒म्राडास॒न्दी मा त्वद्यो॑षः ॥ 12

राष्ट्र॑भृ॒दस्यधि॑पत्यास॒न्दी मा त्वद्यो॑षम् ॥ 13

आपः॑ पा॒दाव॒नेज॑नीर् द्विष॑न्तं नाशयन्तु मे ।

अ॒स्मिन् कु॒ले॑ ब्र॒ह्मव॑र्चस्य॒सानि॑ ( ) ॥ 14

मयि॑ म॒हो मयि॑ य॒शो मयी॑न्द्रि॒यं वी॑र्यम् ॥ 15

आ मा ऽऽग॑न्. य॒शसा॑ व॒र्चसा॑ स॒सृज॑ प॒यसा॑ तेज॒सा च॑ ।

तं मा प्रि॒यं प्र॒जानां॑ कु॒र्वधि॑पतिं प॒शूनाम्॑ ॥ 16 क

वि॒राजो॑ दोहो॒ऽसि वि॒राजो॑ दोह॒मशी॑य म॒म प॒द्याय॑ वि॒राज॑ ॥ 17

स॒मुद्रं॑ वः प्र॒हिणो॑मि स्वां यो॒निम॑पिगच्छत ।

अ॒च्छिद्रः॑ प्र॒जया॑ भूयासं मा प॒रासे॑चि म॒त्पयः॑ ॥ 18

(अ॒सानि॑ षट्च॑) (K9) (16)

## 2.10 मधुपर्क मन्त्राः

### 2.10.1. मधुपर्क मन्त्राः

त्रय्यै॑ वि॒द्यायै॑ यशो॑ऽसि यश॑सो यशो॑सि ब्र॒ह्म॒णो दी॒प्तिर॑सि ।  
तं मा॑ प्रि॒यं प्र॒जानां॑ कु॒र्वधि॑पतिं पशू॒नाम् ॥ 1

आ मा॑ ग॒न्नित्ये॒षा { } ॥ 2

**Expansion for – आ मा गन्**

आ मा॑ ऽऽगन्॒. यश॑सा वर्च॑सा स॒ऽसृज॒ पय॑सा तेज॑सा च ।  
तं मा॑ प्रि॒यं प्र॒जानां॑ कु॒र्वधि॑पतिं पशू॒नाम् ॥ 2 (Ref - EAK 2.9.16)

अमृ॑तोप॒स्तर॑णमस्य३ मृ॒तापि॑धानमसि ॥ 4

यन्मधु॑नो मध॒व्यं पर॑ममन्नाद्यं वी॒र्य॑म् । तेना॒हं मधु॑नो मध॒व्येन॑  
पर॑मे॒णान्नाद्ये॑न वी॒र्ये॑ण पर॒मोऽन्ना॑दो मध॒व्योऽसा॑नि ॥ 5

गौर॑स्यप॒हत॑पाप्माऽप पाप्मानं॑ जहि॒ मम॑ चा॒मुष्य॑ च ।  
अ॒ग्निः प्रा॑श्नातु प्रथ॒मः स हि वेद॑ यथा॒ हविः॑ ॥ 6

(अनष्ट) अरि॑ष्टम॒स्माकं॑ कृ॒ण्वन् ब्रा॒ह्म॒णो ब्रा॒ह्म॒णेभ्यः॑ ॥ 7

य॒ज्ञो व॑र्द्धतां॒ य॒ज्ञस्य॑ वृ॒द्धि॒मनु॑ व॒र्द्धा॒पचि॑तिर॒स्य-प॑चितं

मा कु॒र्व॒पचि॑तोऽ॒हं म॒नुष्ये॑षु भू॒यास॑म् ( ) ॥ 8

गौर्-धे॑नुभ॒व्या 9 , मा॒ता रु॒द्राणां॑ दु॒हिता॑ व॒सूना॑ꣳ स्व॒साऽऽदि॒त्याना॑-  
म॒मृत॑स्य नाभिः (10) ।

प्र॒णु वोचं॑ चि॒कि॒तुषे॑ जना॒य मा॑ गा॒मना॑गा॒मदि॑तिं व॒धिष्ट॑ ॥ 10

पि॒ब॒तूद॑कं तृ॒णान्य॑त्तु । ओ॒मु॒थ्सृ॑जत ॥ 11

भू॒तम् (सु॒भू॒तम्) ॥ 12

सा वि॒राट् ॥ 13

तन्मा॑ क्षा॒यि त॒स्य तेऽशी॑य तन्म॒ ऊर्जं॑ धाः ॥

ओं क॒ल्प॒यत॑ ॥ 14

(भू॒या॒स॒म॒ष्टौ च॑) (K10) (18)

## 2.11 सीमन्तोन्नयनं

### 2.11.1. होममन्त्राः

धा॒ता द॑दातु नो र॒यिमि॑ति च॒तस्रो॑ 1 to 4 { }

यस्त्वा ह॒दा की॒रिणे॑ति च॒तस्रः॑ । 5 to 8 { }

भूर्भुव॑स्सुवो 9, रा॒काम॑हं 10 { }, या॒स्ते रा॑के ॥ 11 { }

**Expansion for – धा॒ता द॑दातु नो र॒यिमि॑ति**

धा॒ता द॑दातु नो र॒यिमी॑शानो जग॑तस्पतिः । स नः पू॒र्णेन॑ वाव॒नत् ॥ 1

धा॒ता प्र॒जाया॑ उ॒त रा॒य ई॒शे धा॒तेदं॑ वि॒श्वं भु॑वनं ज॒जान॑ ।

धा॒ता पु॒त्रं य॑ज॒माना॑य दा॒ता तस्मा॑ उ ह॒व्यं घृ॑तव॒द्विधे॑म ॥ 2

धा॒ता द॑दातु नो र॒यिं प्रा॒चीं जी॒वातु॑म॒क्षितां॑ ।

व॒यं दे॒वस्य॑ धीमहि सु॒मति॑ꣳ स॒त्यरा॑धसः ॥ 3

धा॒ता द॑दातु दा॒शुषे॑ वसू॒नि प्र॒जाका॑माय मी॒ढुषे॑ दुरो॒णे । तस्मै॑ दे॒वा

अ॒मृताः॑ सम्॒व्यय॑न्तां वि॒श्वे दे॒वासो॑ अ॒दितिः॑ स॒जोषाः॑ ॥ 4

Ref - TS 3.3.11.2

Expansion for – यस्त्वा हृदा कीरिणा

यस्त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानो ऽमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि ।

जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्यां ॥ 5

यस्मै त्वञ् सुकृते जातवेद उ लोकमग्ने कृणवः स्योनं ।

अश्विनञ् स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तञ् रयिं नशते स्वस्ति ॥ 6

त्वे सु पुत्र शवसोऽवृत्रन् कामकातयः । न त्वामिन्द्रातिरिच्यते ॥ 7

उक्थ उक्थे सोम इन्द्रं ममाद नीथेनीथे मघवानञ् सुतासः ।

यदीञ् सबाधः पितरं न पुत्राः समानदक्षा अवसे हवन्ते ॥ 8

Ref - TS 1.4.46.1

Expansion for – राकामहं , यास्ते राके

राकामहञ् सुहवाञ् सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना ॥

सीव्यत्वपः सूच्याऽच्छिद्यमानया ददातु वीरञ् शतदायमुक्थ्यं ॥ 10

यास्ते॑ रा॒के सु॒म॒तयः॑ सु॒पे॒श॒सो याभि॑र्ददासि दा॒शु॒षे वसू॑नि ।  
ताभि॑र्नो अ॒द्य सु॒म॒ना उ॒पा॒गहि॑ सह॒स्रपो॑षः सु॒भगे॑ रराणा ॥ 11

Ref - TS 3.3.11.5

### 2.11.2 वीणागानमन्त्रौ

यौ॒ग॒न्ध॒रिरे॒व नो॒ रा॒जेति॑ सा॒ल्वी॒रवा॑दिषुः ।  
वि॒वृ॒त्तच॑क्रा आसी॑नास्ती॒रेण॑ यमु॒ने तव॑ ॥ 12

सोम॑ ए॒व नो॒ रा॒जेत्या॑हुर् ब्रा॒ह्म॒णीः प्र॒जाः ।  
वि॒वृ॒त्तच॑क्रा आसी॑नास्ती॒रेणा॑सौ तव॑ ॥ 13

### 2.11.3 पुंसवनं

पु॒ंसु॒वनम॑सि ॥ 14

### 2.11.4 क्षिप्रं सवनं

आ॒भि॒ष्ट्वा॒हं द॒शभि॑-र॒भि॒मृ॒शामि॑ द॒शमा॑स्याय सू॒तवे॑ ॥ 15  
यथै॒व सोमः॑ पव॒ते यथा॑ स॒मु॒द्र ए॒जति॑ ।  
ए॒वं ते गर्भ॑ ए॒जतु॑ सह॒ जरा॑युणा नि॒ष्क्रम्य॑ प्र॒तिति॑ष्ठत्वायु॒षि  
ब्र॒ह्मव॑र्चसि य॒शसि॑ वी॒र्ये॑ऽन्नाद्यै ( ) ॥ 16



द॒श मा॒सां च॑ श॒यानो॑ धा॒त्रा हि॑ त॒था कृ॒तम् ।

ऐ॒तु ग॒र्भो अ॒क्षितो॑ जी॒वो जी॒वन्त्याः॑ ॥ 17

आ॒यम॑नीर्यमयत ग॒र्भमा॑पो दे॒वीः सर॑स्वतीः ।

ऐ॒तु ग॒र्भो अ॒क्षितो॑ जी॒वो जी॒वन्त्याः॑ ॥ 18

**2.11.5 जरायुणाऽवाक्पतने यजुर्भ्यामवोक्षणं**

ति॒लदे॑ ऽव॒पद्य॑स्व न मा॒ऽसम॑सि नोद॒लम् ।

स्थ॒वित्र्य॑वपद्यस्व न मा॒ऽसेषु॑ न स्ना॒वसु॑ न ब॒द्धम॑सि म॒ज्जसु॑ ॥ 19

नि॒रैतु॑ पृ॒श्नि शे॒वल॑ऽ शु॒ने ज॒राय्व॑त्तवे ॥ 20

(जातकर्म मन्त्राः प्रारंभः)

**जातकर्म 2.11.6 full, 2.12 full, 2.13 part**

दि॒वस्प॑रीत्येषोऽनुवाकः । 21-31 { }

**Expansion for – दि॒वस्प॑रि**

दि॒वस्प॑रि प्रथ॒मं ज॒ज्ञे अ॒ग्नि॒रस्मद् द्वि॒तीयं॑ परि॒ जा॒तवे॑दाः ।

तृ॒तीय॑म॒प्सु नृ॒मणा॑ अ॒जस्र॑मिन्धा॒न ए॒नं ज॒रते॑ स्वा॒धीः ॥ 21

वि॒द्या ते॑ अ॒ग्ने त्रे॒धा त्रया॑णि वि॒द्या ते॑ स॒द्य वि॒भृतं॑ पु॒रुत्रा॑ ।  
वि॒द्या ते॑ ना॒म पर॑मं गुहा॒ यद्-वि॒द्या तमु॑त्सं य॒त आ॒जग॑न्थ ॥ 22

स॒मु॒द्रे त्वा॑ नृ॒मणा॑ अ॒प्स्वन्त॑र्नृ॒चक्षा॑ ई॒धे दि॒वो अ॒ग्न ऊ॒धन् ।  
तृ॒तीये॑ त्वा॒ रज॑सि तस्थि॒वाऽस॑मृ॒तस्य॑ यो॒नौ म॒हिषा॑ अ॒हिन्व॑न् ॥ 23

अ॒क्र॒न्द॒द॒ग्निः स्त॒नय॑न्नि॒व द्यौः॑ क्षा॒मा रे॑रि॒हद्-वी॒रुधः॑ स॒मज्ज॑न् ।  
स॒द्यो ज॒ज्ञा॒नो वि॑ ही॒मि॒द्धो अ॒ख्य॒दा रो॑द॒सी भा॒नुना॑ भा॒त्यन्तः॑ ॥ 24

उ॒शिक् पा॑व॒को अ॒रतिः॑ सु॒मे॒धा म॒र्तेष्व॑ग्निर॒मृतो॑ नि॒धायि॑ ।  
इ॒य॒र्ति धू॒मम॑रु॒षं भ॑रि॒भ्रदु॑च्छु॒क्रेण॑ शो॒चिषा॑ द्या-मि॒नक्ष॑त् ॥ 25

वि॒श्वस्य॑ के॒तुर्भु॑वन॒स्य गर्भ॑ आ रो॑द॒सी अपृ॑णाज्जाय॒मानः॑ ।  
वी॒डुं चि॒दद्रि॑मभि॒नत् परा॑यन् ज॒ना य॒द॒ग्निम॑यजन्त पञ्च ॥ 26

श्री॒णामु॑दा॒रो ध॒रुणो॑ रयी॒णां म॒नीषा॑णां प्रा॒र्पणः॑ सोम॑गो॒पाः ।  
व॒सोः सू॒नुः स॒हसो॑ अ॒प्सु रा॒जा वि॑ भा॒त्यग्र॑ उ॒षसा॑मि॒धानः॑ ॥ 27

यस्ते॑ अ॒द्य कृ॒णवद्-भ॒द्रशो॑चेऽपू॒पं दे॒व घृ॒तव॑न्तम॒ग्ने ।  
प्र तं॑ न॒य प्र॒तरां॑ व॒स्यो अ॒च्छाभि॑ द्यु॒म्नं दे॒वभ॑क्तं य॒विष्ठ ॥ 28

आ तं॑ भ॒ज सौ॒श्रव॑सेष्व॒ग्न उ॒क्थ-उ॒क्थ आ॒भज॑ श॒स्यमा॑ने ।  
प्रि॒यः सूर्ये॑ प्रि॒यो अ॒ग्ना भ॑वा॒त्युज्जा॑तेन भि॒नद॒दुज्ज॑नित्वैः ॥ 29

त्वा॒मग्ने॑ य॒जमा॑ना अ॒नु द्यू॑न् वि॒श्वा व॑सू॒नि द॒धिरे वा॑र्या॒णि ।  
त्वया॑ स॒ह द्र॑वि॒णमि॒च्छमा॑ना व्र॒जं गो॑म॒न्तमु॑शि॒जो वि व॑व्रुः ॥ 30

दृ॒शा॒नो रु॒क्म उ॒र्व्या व्य॑द्यौद्-दु॒र्मर्ष॑मा॒युः श्रि॒ये रु॒चानः॑ ।  
अ॒ग्नि॒रमृ॑तो अ॒भवद्-व॑यो॒भिर्य॑दे नं द्यौ॒रज॑नयथ् सु॒रेताः॑ ॥ 31

(Ref - TS 4.2.2.1)

अ॒स्मिन्न॒हं स॒हस्रं॑ पु॒ष्याम्ये॑ध॒मान॒स्स्वे व॑शे ॥ 32

अ॒ङ्गाद॑ङ्गा॒थ्सं भ॑व॒सि हृ॒दया॑दधि जा॒यसे॑ ( ) ।

आ॒त्मा वै पु॒त्रना॑मा॒सि स जी॑व श॒रद॑श्श॒तम् ॥ 33

(अ॒न्नाद्यै॑ - जा॒यस॑ ए॒कं च॑) (K11) (21)

## 2.12 जातकर्म

### 2.12.1 मूधन्यवघ्नानम्

अ॒र॒मा भ॒व पर॒शुर् भ॒व हि॒र॒ण्य॒म॒स्तृ॒तं भ॒व ।  
प॒शूनां॑ त्वा हि॒ङ्गारे॒णाभि॒जिघ्रा॒म्यसौ॑ ॥ 1

### 2.12.2 दक्षिणे कर्णे जपः

मे॒धां ते॑ दे॒वः स॒वि॒ता मे॒धां दे॒वी सर॑स्वती ।  
मे॒धां ते॑ अ॒श्विनौ॑ दे॒वावा॑ध॒त्तां पु॒ष्कर॑स्रजा ॥ 2

### 2.12.3 प्राशनमन्त्राः

त्वयि॑ मे॒धां त्वयि॑ प्र॒जां त्वय्य॒ग्निस्तेजो॑ दधातु 3  
त्वयि॑ मे॒धां त्वयि॑ प्र॒जां त्वयीन्द्र॑ इन्द्रि॒यं दधातु॑ 4  
त्वयि॑ मे॒धां त्वयि॑ प्र॒जां त्वयि॑ सूर्यो॒ भ्राजो॑ दधातु ॥ 5

### 2.12.4 स्नापनमन्त्राः

क्षेत्रि॑यै त्वा निर्ऋ॑त्यै त्वा द्रु॒हो मुञ्चामि॑ वरु॒णस्य॑ पाशात् ॥  
अ॒ना॒गसं॑ ब्र॒ह्मणे॑ त्वा करोमि शि॒वे ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी उ॒भे इ॒मे ॥ 6  
शं ते॑ अ॒ग्निः स॒हादि॑भरस्तु शं द्यावा॑पृथि॒वी स॒हौष॑धीभिः ।  
शम॑न्तरि॒क्षञ् सह॑ वा॒तेन॑ ते शं ते च॒तस्रः॑ प्र॒दिशो॑ भवन्तु ॥ 7

या दै॒वी॒श्च॒त॒स्रः॑ प्र॒दि॒शो॑ वा॒त॒प॒त्नी॒र॒भि॒ सूर्यो॑ वि॒च॒ष्टे॑ ( ) ।

तासां॑ त्वा ज॒र॒स आ॒द॒धा॒मि॒ प्र यक्ष्म॑ ए॒तु निर्ऋ॑तिं प॒रा॒चैः ॥ 8

अमो॑चि यक्ष्माद्-दु॒रि॒ता॒द॒व॒त्यै॑ द्रु॒हः पा॒शा॒न् निर्ऋ॑त्यै चो॒द॒मो॑चि ।

अहा॑ अ॒व॒र्ति॑-मवि॒दथ्-स्यो॒न॒म॒प्य॒भूद्-भ॒द्रे सु॒कृ॒त॒स्य॑ लो॒के ॥ 9

सूर्य॑मृ॒तं त॒म॒सो ग्रा॒ह्या यद्-दे॒वा अ॒मु॒ञ्च॒न्-न॒सृ॒ज॒न्-व्ये॒न॒सः॑ ।

ए॒व॒म॒ह॒मि॒मं क्षे॒त्रि॒या-ज्जा॒मि॒श॒ः सा॒द् द्रु॒हो मु॒ञ्चा॒मि व॒रु॒ण॒स्य॑

पा॒शात् ॥ 10

### 2.12.5 पृषदाज्य प्राशनम्

भू॒स्स्वा॒हा भु॒व॒स्स्वा॒हा सु॒व॒स्वा॒हो॑ स्वा॒हा ॥ 11

(वि॒च॒ष्टे षट्च॑) (K12) (16)

### 2.13 जातकर्म

#### 2.13.1 मातुरङ्गे कुमारमादधाति

मा ते॑ कु॒मा॒रं र॒क्षो व॒धी॒न्मा धे॒नुर॑त्यासा॒रिणी॑ ।

प्रि॒या ध॒न॒स्य॑ भू॒या ए॒ध॒मा॒ना स्वे॒ गृ॒हे ॥ 1

2.13.2 स्तनं धापयति

अ॒यं कु॒मा॒रो ज॒रां ध॒यतु दी॒र्घमा॒युः ।

यस्मै॑ त्व॒ स्तन॒ प्र॒प्या॒यायु॒र्-वर्चो॑ यशो॒ बल॑म् ॥ 2

2.13.3 पृथिव्यभिमर्शनं

यद्-भू॒मेर्. हृद॑यं दि॒वि च॒न्द्रम॑सि श्रि॒तम् ।

तदु॒र्वि प॒श्यं मा॒ऽहं पौ॒त्रम॑घ॒ रुद॑म् ॥ 3

यत्ते॑ सु॒सी॒मे हृद॑यं वे॒दाहं॑ तत् प्र॒जाप॑तौ ।

वेदा॑म तस्य ते व॒यं मा॒ऽहं पौ॒त्रम॑घ॒ रुद॑म् ॥ 4

2.13.4 कुमाराभिमर्शनं

नाम॑यति न रुदति यत्र व॒यं वे॒दाम॑सि यत्र चा॒भि॒मृ॒शाम॑सि ॥ 5

2.13.5 शिरस्त उदकुम्भनिधानं

आपः॑ सु॒प्तेषु॑ जाग्र॒त र॒क्षा॒सि नि॒रितो॑ नुद॒ध्वम् ( ) ॥ 6

2.13.6 फलीकरणमिश्रसर्षपहोमः

अ॒यं क॒लिं प॑तयन्त॒ श्वान॑मि॒वोद्वृ॑द्धम् ।

अ॒जां वा॑शि॒तामि॒व म॑रुतः पर्या॒ध्व॒ स्वाहा॑ ॥ 7

श॒ण्डे॒रथः॑ श॒ण्डि॑के॒र उ॒लूख॑लः । च्य॒वनो॑ नश्य॒तादि॑तः स्वाहा॑ ॥ 8

अ॒यः श॒ण्डो म॒र्क उ॒पवी॑र उ॒लूख॑लः । च्य॒वनो न॑श्यतादि॒तः स्वाहा॑ ॥ 9

के॒शिनीः श्र॒लोमि॑नीः ख॒जापो॑ऽजोप॒काशि॑नीः ।

अ॒पेत॑ न॒श्यतादि॑तः स्वाहा॑ ॥ 10

मि॒श्रवा॑ससः कौ॒बेर॑का र॒क्षोरा॑जेन प्रेषि॒ताः ।

ग्रा॒मꣳ स॒जान॑यो ग॒च्छन्ती॑च्छन्तो-ऽप॒रिदा॑कृ॒तान्त् स्वाहा॑ ( ) ॥ 11

ए॒तान्-घ्न॑तै॒तान्-गृ॑ह्णी॒तेत्य॑यं ब्र॒ह्मण॑स्पु॒त्रः ।

ता॒नग्निः॑ प॒र्यस॑रत्-ता॒निन्द्र॑स्तान्-बृ॒हस्प॑तिः ।

ता॒नहं॑ वै॒द ब्रा॒ह्मणः॑ प्र॒मृश॑तः कू॒टद॑न्तान्. वि॒केशा॑न्

ल॑बनस्त॒नान्त् स्वाहा॑ ॥ 12

(नि॒रितो॑ नु॒द्ध्वꣳ - स्वाहा॑ त्रीणि॑ च ) (K13) (23)

---

## 2.14 जातकर्म

### 2.14.1 फलीकरणमिश्रसर्षपहोमः

न॒क्तञ्चा॒रि॒ण उ॒रस्पे॒शा-ञ्छू॒लह॒स्तान् क॒पाल॒पान् ।

पूर्व॑ ए॒षां पि॒तेत्यु॒च्चैः॑ श्रा॒व्यकर्ण॑कः ।

मा॒ता ज॒घन्या॑ सर्प॑ति॒ ग्रामे॑ वि॒धुरमि॒च्छन्ती॑ स्वाहा ॥ 1

नि॒शीथ॒चा॒रि॒णी स्व॒सा स॒न्धिना॑ प्रेक्ष॑ते कु॒लम् ।

या स्व॒पन्तं॑ बो॒धय॑ति॒ यस्यै॑ वि॒जाता॑यां॒ मनः॑ ।

तासां॑ त्वं कृ॒ष्णव॒र्त्मने॑ क्लो॒मान् हृद॑यं॒ यकृ॑त् ।

अ॒ग्ने अक्षी॑णि॒ निर्द॒ह स्वाहा ॥ 2

### प्रवासादेत्य कार्यं

### 2.14.2 पुत्रस्याभिमन्त्रणं

अ॒ङ्गाद॒ङ्गाथ् सं॒भव॑सि॒ हृद॑यादधि॒ जाय॑से ।

वे॒दो वै पु॒त्रना॑मा॒सि स॒जीव॑ श॒रद॑श्श॒तम् ॥ 3



**2.14.3 मूर्धन्यवध्राणं**

अ॒श्मा भ॒वेत्ये॒षा ( ) ॥ 4 { }

Expansion for – अ॒श्मा भ॒वेत्ये॒षा

अ॒श्मा भ॒व पर॒शुर् भ॒व हि॒रण्य॒मस्तृ॒तं भ॒व ।

प॒शूनां॑ त्वा हि॒ङ्गारे॒णाभि॒जिघ्रा॒म्यसौ॑ ॥ 1 Ref EAK 2.12.1

**2.14.4 दक्षिणे कर्णे जपः**

अ॒ग्निरा॒युष्मानि॒ति पञ्च॑ । 5 to 9 { }

Expansion for – अ॒ग्निरा॒युष्मानि॒ति पञ्च॑.

अ॒ग्निरा॒युष्मा॒न्त्स व॒नस्प॑ति॒भिरा॒युष्मा॒न् तेन॒त्वा ऽऽयु॒षाऽऽयु॒ष्मन्तं॑

करो॒मि ॥ 5

सोम॑ आ॒युष्मा॒न्त्स ओष॑धी॒भिरा॒युष्मा॒न् तेन॒त्वाऽऽयु॒षाऽऽयु॒ष्मन्तं॑

करो॒मि ॥ 6

य॒ज्ञ आ॒युष्मा॒न्त्स दक्षि॑णा॒भिरा॒युष्मा॒न् तेन॒त्वा ऽऽयु॒षाऽऽयु॒ष्मन्तं॑

करो॒मि ॥ 7

ब्र॒ह्मा॒युष्म॑त् तद् ब्रा॒ह्म॒णैरा॒युष्म॑त् ते॒न॒त्वा ऽऽयु॒षाऽऽयु॑ष्मन्तं करोमि ॥ 8

दे॒वा आ॒युष्म॑न्तस्ते ऽमृ॒ते॒ना॒युष्म॑न्तस्ते॒न॒त्वा ऽऽयु॒षाऽऽयु॑ष्मन्तं  
करोमि ॥ 9 (Ref - TS 2.3.10.3)

#### 2.14.5 कुमार्या अभिमन्त्रणम्

सर्व॑स्मादा॒त्म॒नः सं॒भू॒ताऽसि॑ सा जी॒व श॒र॒द॒श्श॒तम् ॥ 10

#### 2.14.6 अन्नप्राशन मन्त्राः

भू॒र॒पां त्वौष॑धी॒नां र॒सं प्रा॑शयामि शि॒वास्त॒ आप॒ ओष॑धयः  
स॒न्त्वन॑मी॒वास्त॒ आप॒ ओष॑धयः स॒न्त्वसौ॑ ॥ 11

भु॒वोऽपां॑ 12, सु॒व॒र॒पां 13,

भू॒र्भु॒वस्सु॑व॒र॒पां त्वौष॑धी॒नां र॒सं प्रा॑शयामि शि॒वास्त॒ आप॒ ओष॑धयः  
स॒न्त्वन॑मी॒वास्त॒ आप॒ ओष॑धयः स॒न्त्वसौ॑ ॥ 14

**2.14.7 चौळ मन्त्राः**

उ॒ष्णेन॑ वा॒यवु॒दके॒नेत्ये॒षः ॥ 15 { }

Expansion for - उ॒ष्णेन॑ वा॒यवु॒दके॒नेत्ये॒षः  
(Same as EAK 2.7.2. above )

जात॑र्कर्म मन्त्राः समाप्तः

( ए॒षा च॒त्वारि॑ च ) (K14) (14)

**2.15 गृहनिर्माण प्रवेशौ**

**2.15.1 गृहनिर्माणप्रवेशौ**

यद्-भू॒मेः॑ कू॒रं तदि॒तो ह॑रामि॒ परा॑चीं॒ निर्ऋ॑तिं॒ निर्वा॑हयामि ।

इ॒दं श्रे॒योऽव॑सान॒माग॑न्म दे॒वा गो॒मद॑श्चा॒वदि॑दमस्तु॒ प्र भू॑म ॥ 1

स्यो॒ना पृ॑थि॒वि भ॑वानृ॒क्षरा॑ नि॒वेश॑नी ।

यच्छा॑ नः॒ शर्म॑ स॒प्रथाः॑ ॥ 2

इ॒हैव तिष्ठ॑ नि॒मिता॑ ति॒ल्वला॑ स्या॒दि॒रा॒वती॑ ।

मद्ध्ये॑ ता॒ल्प्यस्य॑ ति॒ष्ठान्मा॑ त्वा प्रा॒पन्न॑घा॒यवः॑ ॥ 3

आ त्वा॑ कु॒मा॒रस्तरु॑ण आ व॒थ्सो॑ जगता॒ सह ।

आ त्वा॑ परि॒स्रुतः॑ कुं॒भा आ द॒ध्नः॑ कल॒शीरयन् ॥ 4

ऋ॒तेन॑ स्थू॒णाव॑धिरो॒ह व॒ञ्शो॒ग्री वि॒राज॑न्नप॒सेध॑ शत्रून् ॥ 5

ब्र॒ह्म च ते॑ क्ष॒त्रं च॒ पूर्वे॑ स्थू॒णे अ॒भिर॑क्षतु ( ) ॥ 6

य॒ज्ञश्च॑ दक्षि॒णाश्च॑ दक्षि॒णे ॥ 7

इ॒षश्चो॒र्जश्चा॑परे 8 , मि॒त्रश्च॑ वरु॒णश्चो॒त्तरे॑ 9,

ध॒र्मस्ते॑ स्थू॒णा राजः॑ 10, श्रीस्ते॑ स्तू॒पः ॥ 11

उ॒द्धि॒यमा॑ण उ॒द्धर॑ पा॒प्मनो॑ मा॒ यदवि॑द्वान्. यच्च॑ वि॒द्वाञ्च॑कार ।

अ॒ह्मा यदे॑नः कृ॒तम॑स्ति पा॒पञ् रात्र्या॑ यदे॑नः कृ॒तम॑स्ति पा॒पञ्

सर्व॑स्मा॒न् मो॒द्ध॒तो मुञ्च॑ तस्मा॒त् ॥ 12

इन्द्र॑स्य गृ॒हा वसु॑मन्तो वरू॒थिन॑स्तान॒हञ् सु॒मन॑सः प्रपद्ये ॥ 13

अ॒मृ॒ता॒हु॒ति॒मृ॒तायां॑ जु॒हो॒म्य॒ग्निं॑ पृ॒थि॒व्या॒मृ॒तस्य॑ जि॒त्यै  
तया॑ऽन॒न्तं॑ का॒मम॒हं॑ जया॒नि प्र॒जाप॑तिर्यं॒ प्र॒थ॒मो जि॒गाया॑ग्नि-  
म॒ग्नौ स्वाहा॑ ॥ 14

अ॒न्नप॑त इत्येषा ॥ 15 { }

**Expansion for – अ॒न्नप॑त इत्येषा**

अ॒न्नप॑तेऽन्नस्य॑ नो दे॒ह्यन॑मी॒वस्य॑ शु॒ष्मिणः॑ । प्र॒ प्र॒दा॒तारं॑ ता॒रिष॑ ऊ॒र्जं  
नो धे॒हि द्वि॒पदे॑ चतु॒ष्पदे॑ ॥ 15 (Ref - TS 4.2.3.1)

अ॒रि॒ष्टा अ॒स्माकं॑ वी॒राः स॒न्तु मा॑ प॒रासे॑चि मे॒ धन॑म् ॥ 16

भू॒मिर्-भू॒मिम॑गा॒न्मा॒ता मा॒तर॑म॒प्यगा॑त् ।

भू॒यास्म॑ पु॒त्रैः प॒शुभि॑र्यो नो द्वेष्टि॒ स भि॑द्यताम् ( ) ॥ 17

वा॒स्तो॒ष्प॒त इति॑ द्वे । 18 to 19 { }

**Expansion for - वा॒स्तो॒ष्प॒त इति॑ द्वे**

वा॒स्तो॒ष्प॒ते॒ प्रति॑ जानी॒ह्य॒स्मान्त्स्वा॑वेशो॒ अन॑मी॒वो भ॑वानः ।  
यत् त्वे॒महे॑ प्रति॒ तन्नो॑ जुष॒स्व शन्न॑ ऐ॒धि द्वि॒पदे॑ शञ्चतु॒ष्पदे॑ ॥ 18

वा॒स्तो॒ष्प॒ते श॒ग्मया॑ स॒ꣳसदा॑ ते सक्षी॒महि॑ रण्वया॒ गातु॑म॒त्या ।  
आ॒वः क्षे॒म उ॒त यो॒गे वर॑न्नो यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॑ स॒दानः॑ ॥ 19

Ref - TS 3.4.10.1

वा॒स्तो॒ष्प॒ते प्र॒तर॑णो न ए॒धि गो॒भिर॑श्चे॒भिरि॑न्दो ।  
अ॒जरा॑स॒स्ते स॒ख्ये स्या॑म पि॒तेव॑ पु॒त्रान् प्रति॑ नो जुष॒स्व ॥ 20

अ॒मी॒वहा॑ वा॒स्तो॒ष्प॒ते वि॒श्वा रू॒पाण्या॑वि॒शन् ।  
स॒खा सु॒शेव॑ ए॒धि नः॑ ॥ 21

शि॒वꣳ शि॒वम् ॥ 22

(अ॒भि र॑क्षतु - भि॒द्यता॑ꣳ षट्च॑ ) (K15) (26)

## 2.16 स्वग्रगृहीतस्याभिमन्त्रणम्

### 2.16.1 स्वग्रगृहीतस्याभिमन्त्रणम्

कू॒र्कुरः॑ सु॒कू॒र्कुरः॑ कू॒र्कुरो॑ वा॒ल॒ब॒न्ध॒नः॑ ।

उ॒परि॑ष्ठाद्-य॒देजा॑य तृ॒तीय॑स्या इ॒तो दि॒वः॑ ॥ 1

औ॒ल॒ब इ॒त्तमु॑पा॒ह्वय॑थार्जी॒ञ्छ्या॑मः श॒बलः॑ ।

अ॒धो॒राम॑ उ॒लु॒ंब॒लः॑ सा॒रमे॑यो ह॒ धा॒वति॑ स॒मु॒द्र-म॑व॒चाक॑शत् ॥ 2

बि॒भ्रन्नि॑ष्कं च रु॒क्मं च॑ शु॒नाम॑ग्रं सु॒बी॒रिणः॑ ।

सु॒बी॒रिण॑ सृ॒ज सृ॒ज शु॒नक॑ सृ॒जैक॑व्रात्य सृ॒जच्छ॑त् ॥ 3

तथ्स॒त्यं य॑त्त्वेन्द्रो॒ब्रवी॑द्गाः स्पा॒शय॑स्वेति तास्त्व॒ स्पा॒शयि॑त्वा  
ऽग॑च्छ॒स्तं त्वा॑ ऽब्रवी॒दवि॑द हा(३) इत्य॑वि॒द ही॒ति व॑रं वृ॒णीष्वे॑ति

कु॒मा॒रमे॒वाहं॑ व॑रं वृ॒ण इत्य॑ब्रवी॒र् वि॒गृह्य॑ बा॒हू प्ल॒वसे॑ द्याम॒व  
चा॒कश॑त् ॥ 4

बि॒भ्रन्नि॑ष्कं च रु॒क्मं च॑ शु॒नाम॑ग्रं सु॒बी॒रिणः॑ ।

सु॒बी॒रिण॑ सृ॒ज सृ॒ज शु॒नक॑ सृ॒जैक॑व्रात्य सृ॒जच्छ॑त् ॥ 5

तथ्सत्यं यत्ते सरमा माता लोहितः पिता ( ) ।

अमी एके सरस्यका अवधावत तृतीयस्या इतो दिवः ॥ 6

तेकश्च ससरम तण्डश्च तूलश्च वितूलश्चार्जुनश्च लोहितश्च ।

दुला ह नाम वो माता मन्थाकको ह वः पिता ।

सन्तक्षा हन्ति चक्री वो न सीसरीदत ॥ 7

छदपेहि सीसरम सारमेय नमस्ते अस्तु सीसर ।

समश्चा वृषणः पदो न सीसरीदत ॥ 8

छदपेहि सीसरम सारमेय नमस्ते अस्तु सीसर ।

श्वानमिच्छवा ऽदन्न पुरुषञ्छत् ॥ 9

### 2.16.2 शङ्खग्रहगृहीतस्याभि-मन्त्रणम्

एते ते प्रतिदृश्येते समानवसने उभे ।

ते अहः सारयेण मुसलेना-वहन्म्युलूखले ( ) ॥ 10

हतश्शङ्खो हतश्शङ्खपिता हतश्शङ्खकुतुर्वकः ।

अप्येषां स्थपतिर् हतः ॥ 11



ऋषिर्बोधः प्रबोधः स्वप्नो मातरिश्वा ।

ते ते प्राणान्त् स्परिष्यन्ति मा भैषीर्न मरिष्यसि ॥ 12

(सर्पबलिः मन्त्राः प्रारंभः)

### 2.16.3 सर्पबलिः

जग्धो मशको जग्धा वितृष्टिर्जग्धो व्यद्ध्वरः स्वाहा 13

जग्धो व्यद्ध्वरो जग्धो मशको जग्धा वितृष्टिः स्वाहा 14

जग्धा वितृष्टिर्जग्धो व्यद्ध्वरो जग्धो मशकः स्वाहा ॥ 15

(पिता-ऽवहन्युलूखले -पञ्च च ) (K16) (25)

## 2.17 सर्पबलिः

### 2.17.1 सर्पबलिः

इन्द्र जहि दन्दशूकं पक्षिणं यस्सरीसृपः ।

दक्ष्यन्तं च दशन्तं च सर्वास्तानिन्द्र जंभय स्वाहा ॥ 1

अप्सु जात सरेवृद्ध देवानामपि हस्त्य ।

त्वमग्न इन्द्र प्रेषितः स नो मा हिंसीः स्वाहा ॥ 2

त्राणमसि परित्राणमसि परिधिरसि ।

अ॒न्ने॒न॒ म॒नु॒ष्या॑ꣳ स्त्रा॒य॒से॒ तृ॒णैः॑ प॒शून्॑ ग॒र्ते॒न॒ स॒र्पा॒न्. य॒ज्ञे॒न॒ दे॒वान्थ्-  
स्व॒धया॑ पि॒तृ॒न्थ्-स्वा॒हा ॥ 3

तथ्स॒त्यं य॑त्ते॒ऽमा॒वा॒स्यायां॑ च पौ॒र्ण॒मा॒स्यां च॑ वि॒ष॒ब॒लिꣳ ह॑र॒न्ति॒ सर्व॑  
उद॒र॒स॒र्पि॒णः॑ ।

तत्ते॒ प्रे॒र॒ते॒ त्वयि॑ स॒म्वि॑श॒न्ति॒ त्वयि॑ नः स॒त॒स्त्वयि॑  
स॒द्भ्यो॑ व॒र्षा॒भ्यो नः॑ परि॒दे॒हि ॥ 4

नमो॑ अस्तु स॒र्पे॒भ्य इति॑ ति॒स्रः॑ । (5-7) { }

**Expansion for – नमो॑ अस्तु स॒र्पे॒भ्यः**

नमो॑ अस्तु स॒र्पे॒भ्यो॒ ये के॑ च पृ॒थि॒वीम॑नु ।

ये अ॒न्त॒रि॒क्षे॒ ये दि॒वि ते॒भ्यः॑ स॒र्पे॒भ्यो नमः॑ ॥ 5

येऽदो॑ रो॒च॒ने दि॒वो ये वा॑ सूर्य॒स्य र॑श्मिषु ।

येषा॑म॒प्सु स॒दः कृ॒तं ते॒भ्यः॑ स॒र्पे॒भ्यो नमः॑ ॥ 6

या इ॒ष॒वो या॒तु॒धा॒ना॒नां ये॑ वा व॒न॒स्प॒तीꣳर॑नु ।

ये वाऽव॑टे॒षु शे॒र॒ते ते॒भ्यः॑ स॒र्पे॒भ्यो नमः॑ ॥ 7 (Ref -TS 4.2.8.3)

नमो॑ अस्तु॑ स॒र्पेभ्यो॑ ये पार्थि॑वा य आ॒न्तरि॑क्ष्या ये दि॒व्या ये  
दि॒श्याः ( ) । तेभ्य॑ इ॒मं ब॒लिं ह॑रिष्यामि॒ तेभ्य॑ इ॒मं ब॒लिम॑हार्षम् ॥ 8

तक्ष॑क वैशा॑लेय धृ॒तरा॑ष्ट्रैरावतस्ते जी॒वास्त्वयि॑ नस्स॒तस्त्वयि॑ स॒द्भ्यो  
व॒र्षाभ्यो॑ नः परि॑देहि ॥ 9 धृ॒तरा॑ष्ट्रैरावत तक्ष॑कस्ते वैशा॑लेयो जी॒वा  
स्त्वयि॑ नस्स॒तस्त्वयि॑ स॒द्भ्यो व॒र्षाभ्यो॑ नः परि॑देहि ॥ 10

अहि॑साति॒बल॑स्ते जी॒वास्त्वयि॑ नस्स॒तस्त्वयि॑ स॒द्भ्यो व॒र्षाभ्यो॑ नः  
परि॑देहि ॥ 11

अति॑बलाहि॒सस्ते जी॒वास्त्वयि॑ नस्स॒तस्त्वयि॑ स॒द्भ्यो व॒र्षाभ्यो॑ नः  
परि॑देहि ॥ 12

ये द॑न्दशू॒काः पार्थि॑वास्ता॒स्त्वमि॑तः प॒रो ग॑व्यूतिं निर्वेशय ।  
सन्ति॑ वै नः श॒फिनः॑ सन्ति॑ द॒ण्डिन॑स्ते वो ने॒द्धिन॑सान्  
न्येद् यू॒यम॑स्मान् हि॒नसा॑त ॥ 13

स॒मीची॑ नामा॒सि प्रा॒ची (14-19) { }

दि॒ग्धे॒तयो॒ नाम॒ स्थेति॑ द्वा॒दश॑ पर्यायाः ॥ 20–25 { }

**Expansion for – समी॒ची॒ नामा॒सि प्रा॒ची॒**

समी॒ची॒ नामा॒सि प्रा॒ची॒ दि॒क्तस्या॑स्ते ऽग्नि॒रधि॑पति॒ रसि॒तो र॑क्षि॒ता  
यश्चा॑धि॒पति॒ र्यश्च॑ गो॒प्ता ता॒भ्यां नम॑स्तौ नो मृ॒डय॑तां  
ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो द्वेष्टि॒ तं वाँ ज॑भे दधामि ॥ 14

ओ॒ज॒स्विनी॒ नामा॒सि दक्षि॑णा दि॒क्तस्या॑स्त इन्द्रो॒ऽधि॑पतिः पृ॒दाकू॑  
रक्षि॒ता यश्चा॑धि॒पति॒ र्यश्च॑ गो॒प्ता ता॒भ्यां नम॑स्तौ नो मृ॒डय॑तां ते यं  
द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो द्वेष्टि॒ तं वाँ ज॑भे दधामि ॥ 15

प्रा॒ची॒ नामा॒सि प्र॒तीची॒ दि॒क्तस्या॑स्ते सोमो॒ऽधि॑पति॒ स्स्व॒जो र॑क्षि॒ता  
यश्चा॑धि॒पति॒ र्यश्च॑ गो॒प्ता ता॒भ्यां नम॑स्तौ नो मृ॒डय॑तां ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑  
नो द्वेष्टि॒ तं वाँ ज॑भे दधामि ॥ 16

अवस्था॒वा॒ नामा॒-स्यु॒दी॒ची॒ दि॒क्त॒स्या॒स्ते॒ वरु॒णोऽधि॒पति॒-स्ति॒रश्च॒ राजी॑  
रक्षि॒ता॒ यश्चाधि॒पति॒-र्यश्च॑ गो॒प्ता॒ ताभ्यां॑ नम॒स्तौ नो॑ मृडयतां॒ ते यं  
द्विष्मो॑ यश्च॒ नो॒ द्वेष्टि॒ तं वाँ॑ जंभे॑ दधामि ॥ 17

अधि॒पत्नी॑ नामा॒सि बृ॒हती॑ दि॒क्त॒स्या॒स्ते बृ॒हस्प॒ति-रधि॒पति॒ ऽश्व॒त्रो  
रक्षि॒ता॒ यश्चाधि॒पति॒ र्यश्च॑ गो॒प्ता॒ ताभ्यां॑ नम॒स्तौ नो॑ मृडयतां॒ ते यं  
द्विष्मो॑ यश्च॒ नो॒ द्वेष्टि॒ तं वाँ॑ जंभे॑ दधामि ॥ 18

वशि॒नी॒ नामा॒सीयं॑ दि॒क्त॒स्या॒स्ते यमोऽधि॒पतिः॑ कल्माष॑ ग्रीवो॑ रक्षि॒ता  
यश्चाधि॒पति॒ र्यश्च॑ गो॒प्ता॒ ताभ्यां॑ नम॒स्तौ नो॑ मृडयतां॒ ते यं द्विष्मो॑ यश्च॒  
नो॒ द्वेष्टि॒ तं वाँ॑ जंभे॑ दधामि ॥ 19 (Ref - TS 5.5.10.1)

**Expansion for – दि॒ग्धेत॒यो॒ नाम॒ स्थेति॒ द्वाद॑श पर्यायाः**

हे॒तयो॒ नाम॒स्थ॒ तेषां॑ वाँ॒ः पु॒रो गृ॒हा अ॒ग्निर्व॒ इष॒व-स्स॒लिलो॑  
वा॒त॒ नामं॑ तेभ्यो॑ वो॒ नम॒स्ते नो॑ मृडयत॒ ते यं द्विष्मो॑ यश्च॒ नो॒ द्वेष्टि॒ तं  
वाँ॒ जंभे॑ दधामि ॥ 20

निलि॑न्पा॒ नाम॑स्थ॒ तेषां॑ ॥॥ वो॑ दक्षि॒णा गृ॒हाः पि॒तरो॑ व॒ इष॑व-स्सग॒रो  
वा॒त नामं॑ तेभ्यो॑ वो॒ नम॑स्ते नो॑ मृडय॒त ते यं॑ द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं  
वो॑ ज॒म्भे द॑धामि ॥ 21

वज्रि॑णो॒ नाम॑स्थ॒ तेषां॑ ॥॥ वः॑ पश्चाद्-गृ॒हा स्स्व॑प्नो॒ व इष॑वो ग॒ह्वरो॑  
वा॒त नामं॑ तेभ्यो॑ वो॒ नम॑स्ते नो॑ मृडय॒त ते यं॑ द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं  
वो॑ ज॒म्भे द॑धामि ॥ 22

अव॑स्था वा॒ नो नाम॑स्थ॒ तेषां॑ ॥॥ व॑ उत्तराद् गृ॒हा आपो॑ व॒ इष॑व  
स्समु॒द्रो वा॒त नामं॑ तेभ्यो॑ वो॒ नम॑स्ते नो॑ मृडय॒त ते यं॑ द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒  
द्वेष्टि॑ तं वो॑ ज॒म्भे द॑धामि ॥ 23

अधि॑पतयो॒ नाम॑स्थ॒ तेषां॑ ॥॥ व॑ उपरि॑ गृ॒हा व॒र्षं व॒ इष॑वोऽव॒स्वान्.  
वा॒त नामं॑ तेभ्यो॑ वो॒ नम॑स्ते नो॑ मृडय॒त ते यं॑ द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं  
वो॑ ज॒म्भे द॑धामि ॥ 24

क्र॒व्या॒ नाम॒स्थ॒ पा॒र्त्वि॒वा-स्तेषां॑ ँ॒ व इ॒ह गृ॒हा अ॒न्नं व इ॒षवो॑ नि॒मिषो॑  
वा॒त नामं॑ ते॒भ्यो वो॒ नम॒स्ते नो॑ मृ॒डय॒त ते यं॑ द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं  
ॐ॒ वो ज॑भे॒ दधा॑मि ॥ 25 (Ref - TS 5.5.10.3)

अ॒पश्चे॑त॒ पदा॑ ज॒हि पू॒र्वेण॑ चा॒परे॑ण च ।

स॒प्त च॒ मानु॑षी॒रिमा॑स्ति॒स्रश्च॑ रा॒जब॑न्ध॒वीः ( ) ॥ 26

न वै श्वे॒तस्या॑द्द॒ध्याचा॑रे ऽहि॒र् ज॒घान॑ कञ्चन ।

श्वे॒ताय॑ वै॒दर्वा॑य॒ नमो॑ नमः॒ श्वे॒ताय॑ वै॒दर्वा॑य ॥ 27

(दि॒श्या - रा॒जब॑न्ध॒वीर् - द्वे च॑) (K17) (22)

## 2.18 आग्रयणाद्यः

### 2.18.1. आग्रयणं

पर॒मेष्ठ्य॑सि॒ पर॒मां मा॒ञ्च॑ श्रि॒यं ग॑मय 1 ,

### 2.18.2 हेमन्तप्रत्यवरोहणं.

प्र॒त्यव॑रूढो नो हे॒मन्तः॑ ॥ 2

प्र॒तिक्ष॑त्रे प्र॒तिति॑ष्ठामि रा॒ष्ट्रे 3 प्र॒त्यश्चे॑षु प्र॒तिति॑ष्ठामि गो॒षु ॥ 4

प्र॒तिप्र॑जा॒यां प्र॒तिति॑ष्ठामि भ॒व्ये ॥ 5

इ॒ह धृ॒तिरि॒ह वि॒धृति॑ ६ रि॒ह रन्ति॑रि॒ह र॒मतिः॑ ॥ ७

स्यो॒ना पृ॒थिवि॑ ८ { }, ब॒डित्था॑ पर्व॒ताना॑मि॒ति द्वे॑ ॥ ९ { }

**Expansion for – स्यो॒ना पृ॒थिवि॑**

स्यो॒ना पृ॒थिवि॑ भ॒वाऽनृ॑क्ष॒रा नि॒वेश॑नी ।

यच्छा॑ नः श॒र्म स॒प्रथाः॑ ॥ ८ (Ref - EAK 2.15.1)

**Expansion for – ब॒डित्था॑ पर्व॒ताना॑मि॒ति द्वे॑**

ब॒डित्था॑ पर्व॒तानां॑ खि॒द्रं बि॒भर्षि॑ पृ॒थिवि॑ ।

प्र या भू॑मि प्रव॒त्वति॑ म॒हा जि॒नोषि॑ म॒हिनि॑ ॥ (Ref -TS 2.2.12.2)

**2.18.3 ई॒शान॑ ब॒लिः**

आ त्वा॑ वह॒न्तु ह॒रयः॑ स॒चेत॑सः श्वे॒तैरश्वैः॑ स॒ह के॑तुम॒द्भिः॑ ।

वा॒ताजि॑रैर् म॒म ह॒व्याय॑ श॒र्वो १०

प॒स्पृश॑तु मी॒द्वान् मी॒दुषे॑ स्वा॒हो ११

प॒स्पृश॑तु मी॒दुषी॑ मी॒दुष्यै॑ स्वा॒हा १२

ज॒यन्तो॑प॒स्पृश॑ ज॒यन्ताय॑ स्वा॒हा १३



भ॒वाय॑ दे॒वाय॑ स्वा॒हा 14

श॒र्वाय॑ दे॒वाय॑ स्वा॒हे 15

शा॒नाय॑ दे॒वाय॑ स्वा॒हा 16

प॒शुप॑तये दे॒वाय॑ स्वा॒हा 17

रु॒द्राय॑ दे॒वाय॑ स्वा॒हो 18

ग्रा॒य दे॒वाय॑ स्वा॒हा 19

भी॒माय॑ दे॒वाय॑ स्वा॒हा 20

म॒हते॑ दे॒वाय॑ स्वा॒हा 21

भ॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै॑ स्वा॒हा 22

श॒र्वस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै॑ स्वा॒हे 23

शा॒नस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै॑ स्वा॒हा 24

प॒शुप॑तेर् दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै॑ स्वा॒हा 25

रु॒द्रस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै॑ स्वा॒हो 26

ग्र॒स्य दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै॑ स्वा॒हा 27

भी॒मस्य॑ दे॒वस्य॑ पत्न्यै॒ स्वाहा॑ 28

मह॑तो दे॒वस्य॑ पत्न्यै॒ स्वाहा॑ 29

जय॑न्ताय॒ स्वाहा॑ 30

ऽग्नये॑ स्वि॒ष्टकृ॑ते सु॒हुत॑हु॒त आ॑हु॒तीनां॑ का॒मानां॑ सम॒र्द्धयि॑त्रे स्वाहा॑ ॥ 31

स्व॒स्ति नः॑ पूर्ण॒मुखः॑ परि॒क्राम॑तु 32

गृह॑पो॒पस्पृ॑श गृह॒पाय॑ स्वाहा॑ 33

गृह॑प्यु॒पस्पृ॑श गृह॒प्यै स्वाहा॑ 34

घो॒षिण॑ उप॒स्पृश॑त घो॒षिभ्यः॑ स्वाहा॑ 35

श्वा॒सिन॑ उप॒स्पृश॑त श्वा॒सिभ्यः॑ स्वाहा॑ 36

वि॒चिन्व॑न्त उप॒स्पृश॑त वि॒चिन्व॑द्भ्यः स्वाहा॑ 37

प्र॒पुन्व॑न्त उप॒स्पृश॑त प्र॒पुन्व॑द्भ्यः स्वाहा॑ 38

सम॑श्नन्त उप॒स्पृश॑त सम॑श्नद्भ्यः स्वाहा॑ 39

दे॒वसे॑ना उप॒स्पृश॑त दे॒वसे॑नाभ्यः स्वाहा॑ 40

या आ॒ख्याता॑ याश्चा॒नाख्या॑ता दे॒वसे॑ना उप॒स्पृश॑त दे॒वसे॑नाभ्यः स्वाहा॑ 41

द्वारापोपस्पृश॑ द्वारापाय॑ स्वाहा॑ ॥ 42

द्वाराप्युपस्पृश॑ द्वाराप्यै॑ स्वाहा॑ ॥ 43

ऽन्वासारिण॑ उपस्पृश॑तान्वासारिभ्यः॑ स्वाहा॑ ॥ 44

निषङ्गि॑न्नुपस्पृश॑ निषङ्गि॑णे स्वाहा॑ ॥ 45

नमो॑ निषङ्गि॑ण इषु॑धि॒मते॑ ॥ 46

क्षेत्र॑स्य पति॑ना वय॑मिति॒ द्वे ॥ 47 – 48{ }

**Expansion for – क्षेत्र॑स्य पति॑ना वय॑मिति॒ द्वे**

क्षेत्र॑स्य पति॑ना वय॑ꣳ हिते॑नेव जयाम॑सि ।

गाम॑श्चं पोष॑यित्वा स नो॑ मृडा॒तीदृ॑शे ॥ 47

क्षेत्र॑स्य पते॑ मधु॑मन्त॒मूर्मि॑ धे॒नुरि॑व पयो॑ अ॒स्मासु॑ धुक्ष्व ।

मधु॑श्चुतं घृ॒तमि॑व सु॒पूत॑मृत॒स्य नः॑ पत॑यो मृडय॑न्तु ।

(Ref - TS 1.1.14.2)

(पर॑मेष्ट्य॒सि पर॑मा॒मष्टौ ) (K18) (8)

## 2.19 मासिश्राद्धं

### 2.19.1 मासिश्राद्धं

यन्मे॑ मा॒ता प्र॒लु॒लो॒भ॒ च॒र॒त्य॒न॒नु॒व्र॒ता ।

तन्मे॑ रे॒तः पि॒ता वृ॒ङ्क्तां॑ मा ऽऽभु॒र॒न्यो ऽव॑पद्यता-म॒मु॒ष्मै॒ स्वाहा॑ ॥ 1

या॒स्ति॒ष्ठ॒न्ति॒ या॒ धा॒व॒न्ति॒ या॒ आ॒र्द्रो॒घ्नीः॑ परि॒ त॒स्थु॒षीः॑ ।

अ॒द्भिर्वि॑श्वस्य भ॒र्त्रीभि॑रन्तर॒न्यं पि॒तुर्द॑धेऽमु॒ष्मै॒ स्वाहा॑ ॥ 2

यन्मे॑ पि॒ताम॒ही प्र॒लु॒लो॒भ॒ च॒र॒त्य॒न॒नु॒व्र॒ता ।

तन्मे॑ रे॒तः पि॒ताम॒हो वृ॒ङ्क्तां॑ मा ऽऽभु॒र॒न्यो ऽव॑पद्यता-म॒मु॒ष्मै॒ स्वाहा॑ ॥ 3

अ॒न्तर्द॑धे पर्व॒तैर॒न्तर्म॑ह्या पृ॒थि॒व्या ।

आ॒भिर्दि॒ग्भि-र॒नन्ता॑भि-रन्तर॒न्यं पि॒ताम॒हाद्-द॑धेऽमु॒ष्मै॒ स्वाहा॑ ॥ 4

यन्मे॑ प्र॒पि॒ताम॒ही प्र॒लु॒लो॒भ॒ च॒र॒त्य॒न॒नु॒व्र॒ता । तन्मे॑ रे॒तः प्र॒पि॒ताम॒हो वृ॒ङ्क्तां॑  
मा ऽऽभु॒र॒न्यो ऽव॑पद्यता-म॒मु॒ष्मै॒ स्वाहा॑ ( ) ॥ 5

अ॒न्तर्द॑ध ऋ॒तुभि॑रहो॒रात्रै॑स्स (श्च) स॒न्धि॒भिः ।

अ॒र्धमा॒सैश्च॑ मा॒सैश्चा॒न्तर॒न्यं प्र॒पि॒ताम॒हाद्-द॑धेऽमु॒ष्मै॒ स्वाहा॑ ॥ 6

ये चे॒ह पि॒तरो॒ ये च॒ ने॒ह या॑ञ्च॒ वि॒द्म या॑ञ् उ॒ च न॒ प्र वि॒द्म ।

अग्ने॒ तान् वे॒त्थ॒ यदि॒ ते जा॑तवे॒दस्त॒या प्र॒त्तञ् स्व॒धया॑ म॒दन्तु॒ स्वाहा॑ ॥ 7

स्वाहा॑ पि॒त्रे ॥ 8

पि॒त्रे स्वाहा॑ ॥ 9

स्वाहा॑ पि॒त्रे ॥ 10

पि॒त्रे स्वाहा॑ ॥ 11

स्व॒धा स्वाहा॑ ॥ 12

अ॒ग्नये॑ क॒व्यवा॑ह॒नाय॑ स्व॒धा स्वाहा॑ ( ) ॥ 13

ए॒ष ते॑ त॒त म॑धु॒माञ् ऊ॒र्मिः सर॑स्वा॒न् या॒वा न॒ग्निश्च॑ पृ॒थि॒वी

च ता॒वत्य॑स्य॒ मात्रा॑ ता॒वती॑न्त ए॒तां मात्रां॑ द॒दामि॑

यथा॑ऽग्नि॒रक्षि॑तोऽनु॒पद॑स्त ए॒वं म॒ह्यं पि॒त्रेऽक्षि॑तो॒नुप॑दस्तः स्व॒धा भ॒व तां॑

त्वञ् स्व॒धां तै॑ स्स॒होप॑जीव॒र्चस्ते॑ म॒हि ॥ 14,

मै॒ष ते॑ पि॒ताम॒ह॒ म॒धु॒मा॒ꣳ ऊ॒र्मिः॑ सर॒स्वान्॒ या॒वान्॒ वा॒युश्चा॒न्तरि॒क्षञ्च॑  
ता॒वत्य॑स्य मा॒त्रा ता॒वतीं॑ त ए॒तां मा॒त्रां द॒दामि॑ यथा वा॒युरक्षि॑तो  
ऽनु॒पद॑स्त ए॒वं म॒ह्यं पि॒ताम॒हाया॑क्षि॒तोऽनु॒पद॑स्तः स्व॒धा भव॑ तां त्व॒  
स्व॒धां तैस्स॒होप॑जीव॒ सामा॑नि ते म॒हिमै॒ष 15,

ते॑ प्र॒पिता॒म॒ह॒ म॒धु॒मा॒ꣳ ऊ॒र्मिः॑ सर॒स्वान्॒ या॒वाना॑दित्यश्च द्यौश्च  
ता॒वत्य॑स्य मा॒त्रा ता॒वतीं॑ त ए॒तां मा॒त्रां द॒दामि॑ यथाऽऽदि॒त्योऽक्षि॑  
तोऽनु॒पद॑स्त ए॒वं म॒ह्यं प्र॒पिता॒म॒हाया॑क्षि॒तोऽनु॒पद॑स्तः स्व॒धा भव॑ तां  
त्व॒ स्व॒धां तैस्स॒होप॑जीव॒ यजू॑ꣳषि ते म॒हिमा ॥ 16

(अ॒मु॒ष्मै॒ स्वा॒हा – स्वा॒धा स्वा॒है – क॒म् च) (K19) (21)

## 2.20 मासिश्राद्धं

### 2.20.1 मासिश्राद्धं

पृ॒थि॒वी ते पा॒त्रं द्यौ॑र॒पि॒धानं ब्र॑ह्म॒णस्त्वा॒ मुखे॑ जु॒होमि॑ ब्रा॒ह्म॒णा॒नां त्वा॑  
प्रा॒णापा॒नयो॑र्-जु॒हो॒म्यक्षि॑तम॒सि मै॒षां क्षे॒ष्टा अ॒मु॒त्रामु॑ष्मिन् लो॒के ॥ 1

मा॒र्जय॑न्तां म॒म पि॒तरो॑ 2 , मा॒र्जय॑न्तां म॒म पि॒ताम॒हा 3,  
मा॒र्जय॑न्तां म॒म प्र॒पिता॑म॒हा 4, मा॒र्जय॑न्तां म॒म मा॒तरो॑ 5,  
मा॒र्जय॑न्तां म॒म पि॒ताम॒ह्यो 6, मा॒र्जय॑न्तां म॒म प्र॒पिता॑म॒ह्यः ॥ 7

ए॒तत् ते॑ त॒तासौ॑ ये च त्वा॒मन्वे॑ 8,  
तत् ते॑ पि॒ताम॒हासौ॑ ये च त्वा॒मन्वे॑ 9,  
तत् ते॑ प्र॒पिता॑म॒हासौ॑ ये च त्वा॒मन्वे॑ 10,  
तत् ते॑ मा॒तर॒सौ याश्च॑ त्वा॒मन्वे॑ 11,  
तत् ते॑ पि॒ताम॒ह्यसौ॑ याश्च॑ त्वा॒मन्वे॑ 12,  
तत् ते॑ प्र॒पिता॑म॒ह्यसौ॑ याश्च॑ त्वा॒मनु॑ ॥ 13

मा॒र्जय॑न्तां म॒म पि॒तर॒ इत्ये॒ते ॥ 14-19

ये च वो॒ऽन्न ये चा॒स्मास्वा॑श॒ऽसन्ते॑ 20,

याश्च वोऽत्र याश्चास्मास्वाशऽसन्ते 21, ते च वहन्तां 22,  
ताश्च वहन्तां 23, तृप्यन्तु भवन्त 24, स्तृप्यन्तु भवत्य 25,  
स्तृप्यत तृप्यत तृप्यत ॥ 26

पुत्रान् पौत्रानभि तर्पयन्तीरापो मधुमतीरिमाः ।  
स्वधां पितृभ्यो अमृतं दुहाना आपो देवीरुभयाऽ स्तर्पयन्तु ॥ 27  
तृप्यत तृप्यत तृप्यत ॥ 28

प्राणे निविष्टोऽमृतं जुहोमि ब्रह्मणि म आत्माऽमृतत्वाय ॥ 29  
(मासि श्राद्ध मन्त्राः समाप्तः)

-----  
( अष्टकाद्य मन्त्राः प्रारंभः)

### 2.20.2 अष्टका

यां जनाः प्रतिनन्दन्ति रात्रिं धेनुमिवायतीम् ( ) ।  
सम्वंत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु सुमङ्गली स्वाहा ॥ 30



वह॑ व॒पां जा॒तवे॒दः पि॒तृभ्यो॑ य॒त्रैनान्॑ वे॒त्थ नि॒हितान्॑ प॒राके॑ ।  
 मे॒दसः॑ कू॒ल्या उ॒प ता॒न् क्षर॑न्तु स॒त्या ए॒ता आ॒शिषः॑ (ए॒षामा॒शिषः)  
 स॒न्तु का॒मैः स्वा॒हा ॥ ३१

यां ज॒नाः प्र॒तिन॑न्दन्तीत्येषा ॥ ३२

इ॒यमे॒व सा॒ या प्र॒थमा॑ व्यौच्छ॒दिति॑ ति॒स्रः ॥ ३३ तो ३५ { }

**Expansion for – इ॒यमे॒व सा॒ या प्र॒थमा॑ व्यौच्छ॒दिति॑ ति॒स्रः.**

इ॒यमे॒व सा॒ या प्र॒थमा॑ व्यौच्छ॒दन्तर॑स्यां च॒रति॑ प्र॒विष्टा॑ ।

व॒धूर्ज॑जान न॒वग॑ज्जनि॒त्री त्रय॑ ए॒नां म॒हिमा॑नः स॒चन्ते॑ ॥ ३३

छ॒न्दस्व॑ती उ॒षसा॑ पे॒पिशा॑ने स॒मानं॑ यो॒निम॑नु स॒ञ्चर॑न्ती ।

सू॒र्यप॑त्नी वि च॒रतः॑ प्र॒जान॑ती के॒तुं कृ॑ण्वाने अ॒जरे॑ भू॒रिरे॑तसा ॥ ३४

ऋ॒तस्य॑ प॒न्था॒मनु॑ ति॒स्र आ॒गुस्त्र॑यो घ॒र्मासो॑ अ॒नु ज्यो॒तिषा॑ऽऽगुः ।

प्र॒जामे॑का र॒क्षत्यूर्ज॑मे॒का व्र॑तमे॒का र॒क्षति॑ दे॒वयू॑नां ॥ ३५

(Ref - – TS 4.3.11.2)

एका॒ष्टकां॑ पश्य॒त दो॒हमा॒नाम॒न्नं मा॒ञ्स॒वद्-घृ॒तव॒थ्-स्व॒धाव॒त् ।  
तद्-ब्रा॒ह्मणै॑रति॒पूत॑-म॒नन्त॑-म॒क्षय्य॑-म॒मुष्मिन् लो॒के स्फी॑तिं गच्छतु  
मे पि॒तृभ्यः॑ स्वाहा ॥ 36

औ॒लू॒खला॑ ग्रा॒वाणो॑ घोष॒मक्र॑त ह॒विः कृ॒ण्वन्तः॑ परि॒वथ्स॑रीणम् ।  
एका॒ष्टका॑ सु॒प्रजा॑ वी॒रव॑न्तो वय॒ञ् स्या॑म प॒तयो॑ रयी॒णां ॥ 37  
एका॒ष्टका॑ तप॒सा तप्य॑माना स॒म्वथ्स॑रस्य प॒त्नी दु॒दुहे॑ प्रपी॒ना ( ) ।  
तं दो॒हमु॑पजी॒वाथ पि॒तरः॑ स॒हस्र॑धा॒रम॒मुष्मिन् लो॒के स्वाहा॑ ॥ 38  
(आ॒य॒तीं - प्र॒पी॒नैकं॑ च ) (K20) (21)

## 2.21 अष्टकाद्यः

### 2.21.1 अष्टका

उक्थ्य॑श्चास्यति॒रात्रश्च॑ साद्य॒स्क्रीः छन्द॑सा स॒ह ।  
अ॒पूप॑घृ॒ताहु॑ते नमस्ते अस्तु मा॒ञ्सपि॑प्पले स्वाहा ॥ 1  
भूः पृ॒थिव्य॑ग्नि॒नर्चा॑मुं मयि॒ कामं॑ नियु॒नज्मि॑ स्वाहा ॥ 2  
भुवो॑ वा॒युना॑ऽन्तरि॒क्षेण॑ सा॒म्नाऽमुं॑ मयि॒ कामं॑ नियु॒नज्मि॑ स्वाहा ॥ 3

स्व॑र्दि॒वाऽऽदि॒त्येन॑ यजु॑षाऽमुं॑ मयि॑ का॒मं॒ नियु॑नज्मि॒ स्वाहा॑ ॥ 4

जन॑द॒द्धि-रथ॑र्वाङ्गि॒रोभि॑-रमुं॑ मयि॑ का॒मं॒ नियु॑नज्मि॒ स्वाहा॑ ॥ 5

रो॒चनाया॑जि॒राया॑ग्नये॑ दे॒वजा॑तवे॒ स्वाहा॑ ॥ 6

के॒तवे॑ म॒नवे॑ ब्र॒ह्मणे॑ दे॒वजा॑तवे॒ स्वाहा॑ ॥ 7

स्व॒धा स्वाहा॑ 8, ऽग्नये॑ क॒व्यवा॑हनाय स्व॒धा स्वाहा॑ ॥ 9

### 2.21.2 सनिमित्वा जपः

अ॒न्नमि॑व ते दृ॒शे भू॒यासं॑ 10,

ँव॒स्त्रमि॑व ते दृ॒शे भू॒यासं॑ 11,

ँवि॒त्तमि॑व ते दृ॒शे भू॒यास॑ 12,

मा॒शेव॑ ते दृ॒शे भू॒यास॑ 13,

श्र॒द्धेव॑ ते दृ॒शे भू॒यास॑ 14

स॑ ॐ स्र॒वन्तु॑ दि॒शो म॒हीः स॒माधा॑वन्तु॒ सूनृ॑ताः ( ) ॥ 15

स॒र्वे का॒मा अ॒भिय॑न्तु॒ मा प्रि॒या अ॒भिर॑क्षन्तु॒ मा प्रि॒याः ।

य॒शोऽसि॑ य॒शोऽहं॑ त्वयि॑ भू॒यास॑मसौ ॥ 16

2.21.3 रथादिलाभे स्वीकारः

अ॒ङ्गौ न्य॒ङ्काव॒भित॒ इत्ये॒षा ॥ 17 { }

Expansion for – अ॒ङ्गौ न्य॒ङ्काव॒भित॒ इत्ये॒षा .

अ॒ङ्गौ न्य॒ङ्काव॒भितो॒ रथं॑ यौ॒ ध्वान्तं॑ वा॒ताग्र॑मनु॒ संच॑रन्तौ  
दू॒रेहे॑ति-रि॒न्द्रिया॑वान् प॒त॒त्री ते॒ नोऽ॒ग्नयः॑ प॒प्रयः॑ पा॒रय॑न्तु ॥ 17

(Ref - TS 1.7.7.2)

अ॒ध्वना॑म॒ध्वप॑ते स्व॒स्ति मा॒ सं पा॒रय॑ ॥ 18

अ॒यं वा॑म॒श्विनौ॒ रथो॒ मा दुः॒खे मा सु॒खे रि॑षत् ।

अ॒रिष्टः॑ स्व॒स्ति ग॑च्छतु॒ विवि॑घ्नन् पृ॒तना॑यतः ॥ 19

अ॒श्वोऽ॒सि ह॒योऽ॒स्यत्यो॑ऽसि॒ नरो॑ऽस्य॒र्वाऽसि॑ स॒प्तिर॑सि वा॒ज्यसि॑  
वृ॒षासि॑ नृ॒मणा॑ अ॒सि य॒युर्ना॑मा॒स्यादि॒त्यानां॑ प॒त्वाऽ॒न्विहि॑ ॥ 20

ह॒स्ति॒यश॑स॒मसि॑ ह॒स्ति॒यश॑सी भू॒यासं॑ वह॒ काल॑वह॒ श्रियं॑  
माऽ॒भिव॑ह । इ॒न्द्रस्य॑ त्वा व॒ज्रेणा॑भि॒निद॑धाम्यसौ ॥ 21

---

**2.21.4 सँवादमेध्यतः कर्म**

अवजिह्व॑क निजिह्व॑काव त्वा ह॒विषा॑ यजे ( ) ।

तथ् स॒त्यं यँद॒हं ब्रवी॑म्यधरो म॒दसौ व॑दाथ् स्वाहा ॥ 22

आ ते वाच॑मास्यां द॒द आ मन॑स्या हृ॒दया॑दधि ।

यन्न॑ यन्न॑ ते वाङ्निहि॑ता तां त आ॑ददे ।

तथ् स॒त्यं यँद॒हं ब्रवी॑म्यधरो म॒त्पद्य॑स्वासौ ॥ 23

(सू॒नृता॑ – ह॒विषा॑ यजे – च॒त्वारि॑ च ) (K21) (24)

---

**2.22 विविधकर्माणि**

**2.22.1. क्रोधापनयनार्थं कर्म**

या त ए॒षा ररा॑व्या त॒नूर्-म॒न्योर्-मृ॒द्धस्य॑ नाशिनी ।

तां दे॒वा ब्र॑ह्मचा॒रिणो॑ वि॒नय॑न्तु सु॒मेध॑सः ॥ 1

यत् त ए॒तन् मुखे॑ऽम॒त ररा॑टमु॒दिव॑ वि॒द्ध्यति॑ ।

वि ते क्रो॑धन्नयाम॒सि गर्भ॑मश्च॒तर्या॑ इव ॥ 2

**2.22.2. असम्भवेप्सोः कर्म**

अव॑ज्यामिव॑ धन्व॑नो हृदो॑ मन्युं॑ तनोमि॑ ते ।

इन्द्रा॑पास्य॑ पलि॒गम॒न्येभ्यः॑ पु॒रुषेभ्यो॑ऽन्यत्र॑ मत् ॥ 3

**2.22.3. पुण्यव्यवहारसिद्ध्यर्थं कर्म**

यद॑हं धने॑न प्र॒पण॑श्चरामि॑ धने॑न दे॒वा धन॑मिच्छ॒मानः॑ ।

तस्मि॑न्त् सोमो॑ रुच॒मादधा॑त्व॒ग्निरिन्द्रो॑ बृह॒स्पतिश्च॑ स्वाहा॑ ॥ 4

**2.22.4. स्नेहाविच्चेदार्थं कर्म**

परि॑ त्वा गिरे॑रमिहं॒ परि॑ भ्रातुः॒ परिष्व॑सुः ।

परि॑ सर्वे॑भ्यो ज्ञा॒तिभ्यः॑ परि॑ षीतः॒ क्वे॑ष्यसि॑ ( ) ॥ 5

शश्च॑त् परि॑कुपितेन॒ संक्रा॑मेणाविच्छि॒दा ।

उले॑न परि॑षीतोऽसि॒ परिषी॑तोऽस्युले॑न ॥ 6

**2.22.5 पलायितदासुदीनां पुनरागमनफलं कर्म.**

आव॑र्तन॒ वर्तये॑त्येषा ॥ 7 { }

**Expansion for - आवर्तन वर्तयेत्येषा .**

आव॑र्तन॒ वर्तय॑ नि निव॑र्तन॒ वर्तये॑न्द्र न॒र्दबु॑द ।

भूम्या॑श्चत॒स्रः प्र॒दिश॒स्ताभि॒रा वर्त॑या पुनः॑ ॥ 7 (Ref -TS 3.3.10.1)

आ॒व॒र्त॒ने॒ नि॒व॒र्त॒न॒ आ॒व॒र्त॒न॒ नि॒व॒र्त॒नाय॒ स्वाहा॑ ॥ 8

अ॒नु॒पोऽह्म॑द॒नुह्म॑यो॒ नि॒व॒र्तो॒ वो॒ न्य॒वी॒वृ॒तत् ।

ऐ॒न्द्रः॒ परि॑क्रो॒शो॒ वः॒ परि॑क्रो॒शतु॒ सर्व॑तः ॥ 9

यदि॑ मा॒मति॑ म॒न्या॒द्ध्वा॒ अ॒दे॒वा॒ दे॒वव॑त्तरम् ।

इ॒न्द्रः॒ पा॒शेन॑ सि॒क्त्वा॒ वो॒ म॒ह्यमि॑द्-व॒श॒मा॒नया॑थ् स्वाहा॑ ॥ 10

2.22.6 देहे फलदिपतने प्रक्षालनं.

यदि॑ वृ॒क्षाद्-य॒द्यन्त॑रि॒क्षात्-फ॒लम॑भ्य॒पत॑त्तदु॒ वायु॑रेव ।

यत्रा॑स्पृक्ष॒त्तनु॑वं॒ यत्र॑ वा॒स आ॒पो बा॑धन्तां॒ निर्ऋ॑तिं॒ परा॑चैः ( ) ॥ 11

ये प॒क्षि॒णः प॑तयन्ति बि॒भ्यतो॑ निर्ऋ॒तैः सह॑ ।

ते मा॑ शि॒वेन॑ श॒ग्मेन॑ तेज॒सो॒न्दन्तु॑ वर्च॒सा ॥ 12

दि॒वो नु॑ मा॒ बृ॒हतो॑ अ॒न्तरि॑क्षादपा॒स्तोको॑ अ॒भ्यप॑तच्छि॒वेन॑ ।

सम॑हमिन्द्रि॒येण॑ मन॒सा॒ समा॑गां ब्रह्म॒णा संपृ॑ञ्चानः सु॒कृता॑ कृ॒तेन॑ ॥ 13

2.22.7 आगारस्थूणाविरोहणादीषु होमः.

इ॒मं मे॑ वरु॒ण॑ १४ { }, तत्त्वा॑ या॒मि॑ १५ { }, त्व॒न्नो॑ अ॒ग्ने॑ १६ { },  
स त्व॒न्नो॑ अ॒ग्ने॑ १७ { }, त्वम॑ग्ने अ॒या॒सि॑ १८ { }, प्र॒जा॒प॒ते॑ १९ { } ।

Expansion for – इ॒मं मे॑ वरु॒ण॑ १४ , तत्त्वा॑ या॒मि॑ १५ ,  
त्व॒न्नो॑ अ॒ग्ने॑ १६ , स त्व॒न्नो॑ अ॒ग्ने॑ १७, त्वम॑ग्ने अ॒या॒सि॑ १८  
(Same as Per EAK 2.15.1 )

Expansion for – प्र॒जा॒प॒ते॑ १९.

प्र॒जा॒प॒ते॑ न त्वदे॒तान्य॒न्यो॑ वि॒श्वा॑ जा॒तानि॒ परि॒ ता ब॑भूव ।  
यत्का॑मास्ते जुहु॒मस्त॒न्नो॑ अस्तु व॒यं॑ स्या॒म प॑तयो र॒यी॒णाम् ॥ १९

(Ref - TS 1.8.14.2)

स॒म्राजं॑ च॒ २० { } व्या॒हृती॑र् वि॒हृताः॑ ॥ (२१-२३) { }

Expansion for – स॒म्राजं॑ च॒ , व्या॒हृती॑र् वि॒हृताः॑.

स॒म्राजं॑ च वि॒राजं॑ चाभि॒श्री॒र्या च॑ नो गृ॒हे ।  
लक्ष्मी॑ रा॒ष्ट्रस्य॑ या मु॒खे तया॑ मा स॒सृ॒जाम॑सि ॥ २०



शु॒भिके॑ शि॒र आ॑ रो॒ह शो॒भय॑न्ती॒ मुखं॑ म॒म ।  
मु॒खꣳ हि॑ म॒म शो॒भय॑ भू॒याꣳसं॑ च॒ भगं॑ कुरु ॥ 21

या॒मा॒ह॒रज्ज॑म॒द॒ग्निः॑ श्र॒द्धायै॑ का॒मा॒या॒न्यै ।  
इ॒मां ता॑म॒पि न॒ह्येऽहं॑ भ॒गेन॑ स॒ह वर्च॑सा ॥ 22

य॒दाज्ज॑नं त्रै॒ककु॑दं जा॒तꣳ हि॒मव॑त उ॒परि॑ ।  
ते॒न वा॑माज्जे ते॒जसे॑ वर्च॑से भ॒गाय॑ च ॥ 23 (Ref - EAK 2.8.1 & 2.)

#### 2.22.8 अ॒मा॒त्याना॑मा॒भिमुख्ये॑न नि॒धने॑ परि॒धिनि॑धानम्.

इ॒मं जी॒वेभ्यः॑ परि॒धिं द॑धामि॒ मैषां॑ नु॒ गा॒दप॑रो अ॒र्द्धमे॒तम् ।  
श॒तं जी॒वन्तु॑ श॒रदः॑ पु॒रूची॑स्ति॒रो मृ॒त्युं द॑धतां प॒र्वते॑न ॥ 24  
(क्व॑ष्प॒सि - प॒राचै॑ - र॒ष्टौ च॑ ) (K22) (28)

=====

**Prapaataka Korvai with starting Padams of 1 to 22 Khandaas**

(उ॒ष्णेन॑ प॒ञ्चद॑शा - यु॒र्दा ए॒कवि॑ंशति - रा॒गन्त्रा॑ द॒श - यो॒गेयो॒गे  
 त्रयो॑द॒श - सु॒श्रवः॑ सु॒श्नव॑सम॒ष्टौ - परि॑ त्वा॒ग्नि - इ॒मं स्तो॑म -  
 मा॒युष्य॑ मे॒कान्न॑वि॒ंशति॑ रे॒कान्न॑वि॒ंशति॑ - म॒यि प॑र्वत॒पू॒रुष॑  
 षोड॑श - त्र॒य्यै वि॒द्याया॑ अ॒ष्टाद॑श - धा॒ता द॑दातु नो  
 र॒यिमे॑कवि॒ंशति॑ - र॒श्मा भ॑व षोड॑श - मा ते॑ कु॒मारं  
 त्रयो॑वि॒ंशति॑ - न॒क्तञ्चा॒रिण॑श्चतु॒र्दश॑ - यद् भू॒मेः षोड॑वि॒ंशतिः॑  
 - कू॒र्कुरः॑ प॒ञ्चवि॑ंशति - रि॒न्द्र ज॑हि द्वावि॒ंशतिः॑ -  
 प॒रमे॑ष्ठ्य॒सि प॒रमा॑म॒ष्टौ - य॒न्मे मा॒ता - पृ॑थि॒वी ते पा॒त्र  
 मे॒कवि॑ंशति रे॒कवि॑ंशति - रु॒क्थ्य॑श्च त्रयो॑वि॒ंशति॑ - या त  
 ए॒षाऽष्टा॑वि॒ंशति॑ द्वावि॒ंशतिः॑ )

**Korvai with starting Padams of 1, 11, Series of Khandaas :-**

(उ॒ष्णेन॑ - धा॒तो - क॒थ्यश्च॑ द्वावि॒ंशतिः॑)

**First and Last Padam in EAK, 1st Prapaatakam :-**

(उ॒ष्णे॒न – प॑र्व॒ते॒न)  
— —

। हरिः॑ ओम् ।

एकाग्निकाण्डे द्वितीयः प्रपाठकः समाप्तः

----- एकाग्निकाण्डः समाप्तः-----

---

**Ekaagni Kaandam Counts - 2nd Prapaatakam**

	Vaakyams
Khanda - 1	15
Khanda 2	21
Khanda 3	10
Khanda 4	14
Khanda 5	8
Khanda 6	19
Khanda 7	19
Khanda 8	19
Khanda 9	16
Khanda 10	18
Khanda 11	11
Khanda 12	16
Khanda 13	23
Khanda 14	14
Khanda 15	26
Khanda 16	25
Khanda 17	22
Khanda 18	8
Khanda 19	21
Khanda 20	21
Khanda 21	24
Khanda 22	28
Total →	398

**Note: The difference actual counts**

For Khanda 4 :- 13 vaakyams are shown in korvai, but in actual count it is 14.

For Khanda 13:- 23 vaakyams are shown in korvai, but in actual count it is 24.